मैथिली

# फणीश्वरनाथ रेणु

सुरेन्द्र चौधरी

MT
813.3
R 298 C

भारतीय

MT
813.31
R 298C

INDIAN INSTITUTE
OF
ADVANCED STUDY
LIBRARY, SHIMLA

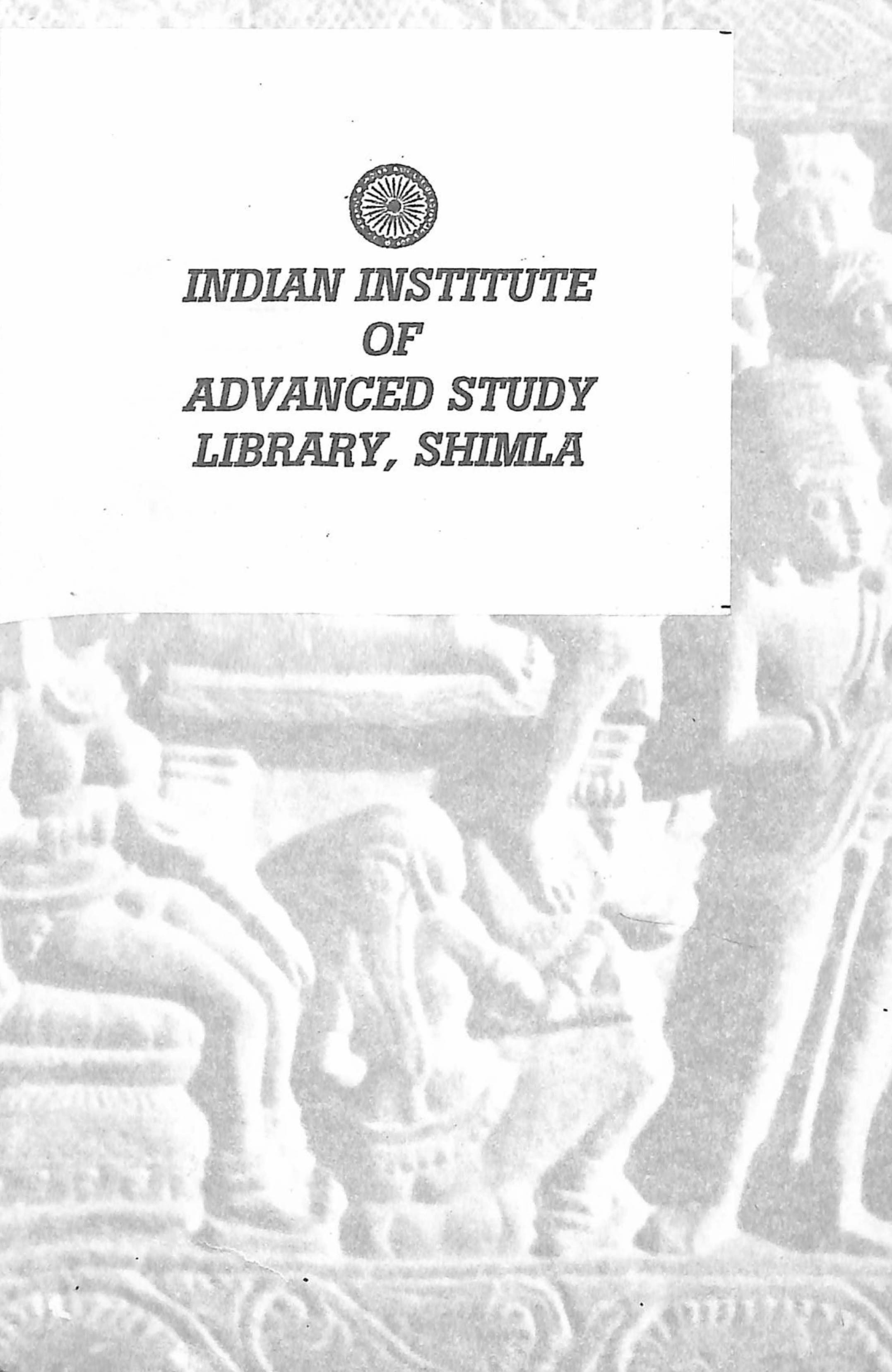

अस्तर पर छपल मूर्तिकलाक प्रतिरूपमे राजा शुद्धोदनक दरबारक ओ दृश्य देल गेल अछि जाहिमे तीन गोट भविष्यवक्ता भगवान बुद्धक माता रानी मायाक स्वप्नकेर व्याख्या कय रहल छथि। हिनका लोकनिक नीचाँमे एक गोट देवानजी बैसल छथि जे ओहि व्याख्याकेँ लिपिबद्ध कय रहल छथि। भारतमे लेखनकलाक ई प्रायः सभसँ प्राचीन एवं चित्रलिखित अभिलेख थिक।

नागार्जुनकोण्डा, दोसर शताब्दी
सौजन्य : राष्ट्रीय संग्रहालय, नयी दिल्ली

भारतीय साहित्यक निर्माता

# फणीश्वरनाथ रेणु


लेखक

**सुरेन्द्र चौधरी**

अनुवादिका

**शेफालिका वर्मा**



साहित्य अकादेमी

*PhanishwarnathRenu*: Maithili translation by Shefalika Verma of Surendra Choudhary's monograph in Hindi. Sahitya Akademi, New Delhi (1995), Rs. 15.

Library IIAS, Shimla
MT 813.3 R 298 C
00117176

© साहित्य अकादेमी
प्रथम संस्करण : १९९५

साहित्य अकादेमी

प्रधान कार्यालय
रवीन्द्र भवन, ३५, फ़ीरोज़शाह मार्ग, नयी दिल्ली ११० ००१
विक्रय विभाग : 'स्वाति', मन्दिर मार्ग, नयी दिल्ली ११० ००१

क्षेत्रीय कार्यालय
१७२, मुम्बई मराठी ग्रन्थ संग्रहालय मार्ग, दादर, बम्बई ४०० ०१४
जीवनतारा बिल्डिंग, चौथा तल, २३ ए/४४ एक्स, डायमंड हार्बर रोड, कलकत्ता ७०० ०५३
३०४-३०५, अन्ना सलाई, तेनामपेट, मद्रास ६०० ०१८
ए डी ए रंगमन्दिर, १०९, जे. सी. मार्ग, बैंगलौर ५६० ००

MT 813.3 R 298 C

मूल्य : पन्द्रह टाका

Indian Institute of Advanced Study SHIMLA
117176
10/12/04

ISBN 81-7201-891-6

लेज़र-टाइपसेटिंग : अक्षरश्री, दिल्ली ११० ०३२
मुद्रक : कलरप्रिंट, दिल्ली ११० ०३२

# अनुक्रम


| | |
|---|---|
| संक्षिप्त जीवनी | ७ |
| एकटा अन्तर्कथा | १० |
| धरती-पुत्रक रपट | १८ |
| कथाक रंग-परिवेश | २७ |
| कथाक रचना-संसार | ३८ |
| नाटकीयता आ प्रगीतक योगपद | ४५ |
| समकालीन यथार्थवाद आ रेणुक कथा-साहित्य | ६२ |
| समस्या संसारमे | ९३ |
| रेणु साहित्य | १०४ |

# संक्षिप्त जीवनी

औराही हिंगना पूर्णिया जिलाक एकटा अत्यन्त दूरस्थ एवं पिछड़ल गाम अछि। ओहि गाममे ४ मार्च १९२१ इसवीकेँ फणीश्वरनाथ रेणुक जन्म एकटा मध्यवित्त किसान-परिवारमे भेल छल। मंडल परिवारक गृहस्वामी, रेणुक पिता आर्यसमाजी छलाह। एहि कारण सामान्य किसान-परिवारक अपेक्षा रेणुक पारिवारिक पृष्ठभूमि भिन्न छल। पिताजीक संपर्क बंगालसँ सेहो छल, एहि स्थितिमे हुनक मानसिकतामे कतेको एहेन तत्त्व छल जे हुनका अपन परिवेशक जड़तासँ पृथक करइत छल। ओहिनो १९२१ इसवीक अंतधरि देशक मानसिक आ राजनीतिक वातावरण उग्र बनि रहल छल। तकर स्वर देशक कोन-कोनमे गुंजित भ' रहल छलैक।

गांधीजीक असहयोग आंदोलन आ चंपारणमे हुनक किसान आन्दोलनक प्रभाव बिहारक मानसिकताकेँ बदलबामे बड़ उत्तेजक भूमिका संपन्न करैत अछि। एहि सभ परिस्थितिमे जनमल आ पलल रेणु पर सामान्य किसान बालकसँ भिन्न प्रभाव अनुमेय अछि। ओना पिताजीक कठोर आर्यसमाजी व्यक्तित्वक प्रति रेणुक दबल-दबल विद्रोह जतय ततय व्यक्त भेल अछि। प्रारंभिक शिक्षाक लेल रेणुकेँ फारबिसगंज पठाओल गेल जे ओहि काल अंगरेज निलहे जमींदारक उन्नत कस्बा बनि गेल छल। ओहिठाम जाहि स्कूलमे रेणुक नामांकन भेल, ओकर नाम छल "ली-अकादेमी"। रेणु ओहि ठामसँ मैट्रिकुलेशन परीक्षामे उत्तीर्ण भेल छलाह।

आगुक शिक्षा लेल हुनका बनारस पठाओल गेल। मुदा ओ आगू नहि पढ़ि सकलाह। निश्चित रूपसँ ओहि काल हुनक संपर्क देशक व्यापक राजनीति आ ओहिसँ संबद्ध किछु व्यक्तिसँ भेल। समाजवादी वामपंथी आँदोलनक प्रभाव रेणु पर एहीठामसँ प्रारम्भ भेल। बनारससँ बिहार आपस आबि ओ भागलपुर टी. एन. जे. (आब टी. एन. बी.) कॉलेजमे अपन नामांकन करौलनि। मुदा, तावत सन् १९४२क उग्र आन्दोलन आरंभ भय गेल छल।

अपन बाल्यकालमे ओ बंगालसँ आबयवला यात्रा-दल, कानपुरसँ आबयवला

नौटंकी आ विद्यापति गौनिहारकेँ एक संग, सहवर्ती कार्यकलापक रूपमे देखने छलाह। हुनक समानता-असमानताक प्रति संवेदनशील आ कलाकार रेणुक आकर्षण तखनहिसँ छल। कालांतरमे ओ अपन कथा, रिपोर्ताज आ उपन्यास सभमे एकर उपयोगो कयने छलाह। पारिवारिक परिवेश हुनक अनुकूल नहि छल। सन् ४२क आन्दोलनसँ हुनक युवा मौन पूर्ण प्रभावित छल। तैं एहि आन्दोलनमे भरिसक ओ अधिकांश युवक जकाँ भाग लेने छलाह। एहि क्रममे हुनक संबंध नेपालक कोइराला परिवारसँ बेसी घनिष्ठ भय गेल। ओना, स्वयं हुनक अपन सूचनानुसार एहि परिवारसँ हुनक संबंध पहिनहि स्थापित भय चुकल छल। नेपालक मुक्ति आन्दोलनमे हुनक भूमिकासँ संदेह नहि कयल जा सकैछ। तराई क्षेत्रमे निरन्तर कार्यरत रहबाक कारणेँ' ४६क बाद हुनक स्वास्थ्य सेहो बिगड़ि गेल छल। मुदा, एहि दिस हुनक बेसी ध्यान नहि छल। निरन्तर एक स्थानसँ दोसर स्थान पर शरणागत होइत हुनक स्वास्थ्य आर खराब भय गेल। एहि मध्य ओ किछु कथा सेहो कलकत्ताक 'विश्वमित्र' पत्रिका मे लिखलनि। एहिमे "बटबाबा" आ ओहिसँ पहिनुक एकटा आर कथाक सूचना भेटल छैक।[1]

सन् ५०मे रेणु यक्ष्मासँ पीड़ित भय पटना टी. वी. सेन्टरमे भरती भेलाह आ श्रीमती लतिका रेणुक अथक सेवाक परिणामस्वरूप ओ स्वस्थ भेलाह। बादमे ओ वैवाहिक सूत्रमे बन्हि गेलाह। एहि बीच ओ "मैला आँचल" लिखि रहल छलाह। विवाहोपरान्त, रेणु लतिकाजी संग पटने रहए लगलाह। गाममे कनिक खेती-बाड़ी छल। प्रथम पत्नी एवं हुनक संतान सभ कोनो तरहेँ ओकरा सम्हारिकेँ रखने छल। पैघ पुत्र पद्मपराग अपन परिवारक संग गामे छलाह।

एहि ठामसँ रेणुक जीवनक घटनाक्रम तीव्र गतिसँ परिवर्तित होइत रहल। ओ साहित्यमें अप्रत्याशित उछालक संग प्रतिष्ठित भए गेलाह। लेखनक क्षेत्रमे ई प्रतिष्ठा कोनो आन लेखककेँ शायदे कहियो भेटल हो। एहि दस बरखमे ओ अपन अन्यतम लेखन संपन्न कयलनि। एतबे नहि, साहित्य आ साहित्यक संपर्कक दृष्टिसँ ई बरख सभ हुनक जीवन मे सभसँ बेसी महत्त्वपूर्ण मानल जायत। उपन्यास आ कथाक क्षेत्रमे एतेक ख्याति पबितहुँ रेणुक व्यवहारमे कोनो अंतर नहि आयल। ओ जहिया कहियो पटना अबैत छलाह तँ ओहिठामक साहित्यिक वातावरणक अंग बनि जाइत छलाह। अपन पैघत्वक मातल प्रभाव तँ कहियो हुनका ऊपर कदाचित् नहिए पड़ल; मुदा सरिपहुँ, एहि महत्त्वपूर्ण बरसमे ओ कहियो कतहुसँ एहेन आभासो नहि होय देलन्हि जे प्रतिष्ठासँ ओ विचलित भऽ गेल होथि। प्रायः एना होइत नहि अछि। रेणुक व्यक्तित्वक एहि शालीनतामे आभिजात्य खोज उचित नहि बुझि पड़ैत अछि। शालीनता जखन कृत्रिम होइत अछितँ ओहिसँ एकटा निष्करुण अनम्यता हुलकी देयऽ लगैत अछि।

---

१. टिप्पणी : सारिकामे रपट, मई, १९८४

सातम दशकक समाप्तिक काल देश आ स्वयं रेणुक जीवनक लेल अत्यन्त अन्तर्द्वन्द्वक काल रहल। प्रायः एक दशकक कठोर संघर्ष रेणुकेँ भीतर-बाहरसँ घेरि लेने छल। इएह कारण छल जे ओ बीमार रहए लगलाह। जै नीक होइत छलाह कि फेर अस्वस्थ भऽ जाइत छलाह। ई क्रम चलैत रहल। एहि बीच आपातकालमे जेल गेलाह। ओहि ठामसँ अबितहिँ जेना हुनकर जीवनमे एकटा आंतरिक संकट बढ़ए लागल। एहेन स्थिति मे हुनक भावुक मोनक भीतरे भीतर घुटनाइ स्वाभाविक छल। तीव्र घुटनक कारण हुनका पीबाक लति लागि गेलनि।

एहि बीच फिल्म निर्माणक प्रक्रियामे कतेक बेर हुनका बंबई प्रवास करऽ पड़ल। हुनक "तीसरी कसम"क निर्माण शैलेन्द्र कयलनि। एकर उपरांत "मैला आँचल"क फिल्म निर्माणक अनुबंध पूर्ण भेल। मुदा ओकर निर्माता चित्रगुप्त आर्थिक रूपसँ संकटमे पड़ि गेलाह। "मैला आँचल" निर्माणाधीन रहल, मुदा आइधरि पूरा नहि भए सकल। एहि बीच रेणुक स्वास्थ्यो ठीक नहि रहल। ओ पटना घुरि गेलाह। ७६मे गंभीर रूपेँ बीमार पड़ि गेलाह। पुनः आपरेशन भेल। स्वास्थ्यमे कनक सुधार आयल। मुदा, ई सुधार स्थायी नहि छल। ७७क मार्चमे रेणु गंभीर रूपसँ अस्वस्थ भए गेलाह। गुर्दा आ गॉल ब्लाडर मे घाह भऽ गेल छल। सूजनक कारण सुधार नहि भेल। १४ अप्रील ७७ केँ राजेन्द्रनगर निवास मे एहि लोकप्रिय लेखकक आकस्मिक आ असामयिक निधन भए गेल।

# एकटा अन्तर्कथा

रेणुजीक समक्ष भेला पर हमरा हुनक मुस्कानक सदिखन ध्यान रहैत छल। हम स्वयंकेँ एकटा व्यंग्यचित्रकारक समक्ष पबैत छलहुँ जे हमर माँस-मज्जा-स्नायु-त्वचाकेँ अपन मुस्कानसँ आर पार कऽ सकैत छल, ओकर प्रत्येक झुर्रीकेँ लक्षित कय सकैत छल आ हमर प्रत्येक ध्वनिसँ प्रतिकृत होइत ओकरा कतहुसँ मचोड़ि सकैत छल। संभवजे परती परिकथा क कतिपय पात्र हमर स्मृतिमे रहल होय। खैर, हमर एहि असहजताक अंत भेल, मुदा बड़ देरीसँ। ओना रेणुजीकेँ हम अपना प्रति कहियो प्रतिमुख नहि पयलहुँ, राजनीतिक बहसक मध्यो नहि। रेणुजी 'मूड' मे रहैत छलाह तैयो हठात् किछु बदलल नहि लगैत छल। विचारधाराक प्रसंग मे हमरा सभक अपनत्वक दूरी अपेक्षा कृत किछु बेसी छल, ई हम अनुभूत कयने छलहुँ। ओना, हम हुनक आलोचनासँ हतप्रभ कहियो नहि भेलहुँ। ओ एकदम निर्वैयक्तिक हेबाक आभास नहि दैत छलाह। एकर कारण कदाचित् किछु आरो रहल हो।

रेणुजीसँ हमर प्रथम भेंट राजकमलक संग भेल आ दोसर प्रेमेन्द्रक संग। दूनू भेंटमे हमर सभक भेंट एक तरहसँ असाहित्यके रहल। पुनः भेंट होइत रहल, मुदा बड्ड बेसी नहि। एक दू बेर दीर्घ भेंटोक अवसर आयल जखन हमर बैसकी बेसी काल चलल। एहि भेंट सँ हमरा लागल जे रेणुक व्यक्तित्व भीतर-बाहर प्रायः एक सन अछि।

हुनक व्यक्तिगत जीवनक विषयमे हमर ज्ञान प्रायः सीमित अछि। एकर एकटा कारण सँ प्रायः हमर अपन आकर्षण अछि। हम कहियो रेणुजीक व्यक्तिगत जीवनमे रुचि नहि लेलहुँ। मोन नहि पड़ैत अछि जे हम हुनकासँ वा हुनक कोनो दोस्तसँ व्यक्तिगत किछु जनबाक प्रयास कयने होइक। एखन रेणुपर लिखैत हम ई अनुभव करैत छी जे हुनका विषयमे किछु आर जानबाक चाहैत छल। जे होय, रेणुक साहित्यकार हमरा लेल पर्याप्त जिज्ञासाक विषय अछि। रेणु औराही हिंगनाक छलाह आ एकटा व्यवस्थित किसान परिवारमे जन्म लेने छलाह। कहियो-कहियो इहो सुनि पड़ैत अछि कि मालदह (पश्चिम बंगाल) क हरिश्चन्द्रपुरसँ सेहो हुनक कोनो संबंध छल। एहि विषयमे हम कोनो खास

रूचि नहि लेलहुँ । रेणुक प्रारंभिक जीवन पूर्णिया-वीरपुरक मध्य बीतल छल आ उच्च शिक्षा लेल हुनका बनारस पठाओल गेल । नेपालक कोइराला परिवारसँ हुनक बड़ आत्मीय संबंध छल । बादमे ओ नेपाल-क्रान्ति आ समाजवादी आन्दोलनसँ सेहो जुटलाह ।

रेणुजी अपना विषयमे किछु गप्प सेहो उड़ौने छलाह । सभ उड़बैत अछि । निश्चित रूपसँ एकर पाछाँ कोनो मानसिक कारण होइत अछि, मोनक कोनो फरमाइश होइत अछि, कहियो कोनो सामाजिक अपेक्षा होइत अछि । एहि कथा सभसँ कोनो अन्तर नहि पड़ैत अछि । संगी सभसँ ई कथा सभ ज्ञात भेल । मुदा, ई कथा सभ एकदम साधारण कथा छल, भावनामे निर्दोष । रेणुक बंगाली होयबाक गप्प ओहि निर्दोष अन्तर्कथामे सँ एकटा अछि । ई अन्तर्कथा सभ मात्र एकटा संकेत दैत अछि–रेणुक व्यक्तित्वक निर्माण गहन भावनात्मक आ सामाजिक अन्तर्विरोधक भीतरसँ भेल अछि । संभवतः इएह तीव्र विरोध रेणुकेँ लेखक, कार्यकर्त्ता आ कोनो हद धरि क्रान्तिकारी बनौलल । अध्ययन छोड़ि रेणु एकटा सक्रिय क्रान्तिकारी बनि गेलाह आ बहुत दिन धरि भटकलाक उपरान्त पटना आबि गेलाह । तखन प्रायः रेणुक विषयमे पटनाक साहित्यिक वातावरणकेँ कोनो ज्ञान नहि छल । एहि सभ कथाक पाछाँ लतिकाजीक व्यक्तित्व कार्यरत रहल । एहि संदर्भमे अपना दिसिसँ किछु कहब व्यर्थ अछि ।

सन् १९५४ मे प्रकाशित "मैला आँचल" सँ सभ किछु बदलि गेल । रेणुक नाम एकटा गलंजर जकाँ तीव्र गतिसँ पसरि गेल । स्व. नलिन विलोचन शर्मा घोषणा कयलनि– "हम अपन श्रेष्ठ उपन्यासक सूचीसँ गोदानकेँ छोड़ल । "मैला आँचल" लेल कोनो उपन्यासकेँ अपदस्थ कय सकैत छी ।" मैला आँचल" एकटा धमक्का जकाँ हिन्दीमे प्रकट भेल । रेणु कथा लिखि रहल छलाह– "ठुमरी"क कथा । 'अपरंपरा'क लेल ओ 'तीसरी कसम' कथा लिखने छलाह । पटनाक साहित्यिक वातावरण रेणुसँ भरि रहल छल । हुनक चारू दिसि एकटा लेखक समुदाय उभरि गेल छल । ओ बिहारक कथा-लेखकक लेल प्रेरणा स्रोत साबित भय रहल छलाह । हमरा सभक लेखनक क्षेत्रमे रेणुक ई योगदान बिसरायल नहि जा सकैत अछि । हुनकासँ प्रेरणा ग्रहण कय हमर युवा कथाकार कतेको सुन्नर कथा लिखलनि–खास कय ओ व्यक्ति सभ, जे गामसँ आयल छलाह आ जनिक अनुभवमे ग्रामीण जीवन एकदम टटका छल । आँचलिक कथाक एकटा फैशने चलि गेल । मुदा, ओहिमे अंचलक जीवन्त स्पन्दन नहि छल, मात्र अतीत छल आ ओहि पर आरोपित एकटा रोमांटिक व्यर्थता ।

---

१. मैला आँचलक एकटा प्रसंग मोन पड़ैत अछि, प्रशांतक संदर्भमे– "बाल्यकालसँ ओ अपन जन्मक कथाकेँ कहियो बिसरि नहि सकल । प्रत्येक इतिहास पर गर्व करयवला युगमे पलल हरेक व्यक्तिकेँ अपन खानदान लेल एहेन कथा चाही जकर इजोतमे ओ दुनियामे चकाचौंध उत्पन्न कय दैक । मुदा, डॉक्टरक वंश-इतिहास पर कारी रोसनाइ खसल अछि ।"

रेणु एहि सभ स्थितिसँ अपरिचित नहि छलाह। मुदा, एहि विषयमे किछु खुलासा बाजब ओ उचित नहि बुझैत छलाह। ई हुनक आदतिक एकटा हिस्सा छल।

सन् ५१ क जीवनमे अनुभव चक्रक एकटा आवर्त्तन रेणु पूर्ण करैत छथि।' ५०क नेपाली क्रान्ति आ ओकर बादक घटनाक्रमक उल्लेख रेणु एकटा आवेशक संग कयने छथि,– ''नो पासाराँ नो बाभाराँ'। ई दौर रेणुक जीवनक सक्रियताक दौर अछि। निरन्तर संघर्ष करैत रेणुक जीवन विकासक एकटा उच्चता पर पहुँचि जाइत अछि। मुदा, ई रेखा क्रमो एकदम सोझ सपाट ऊपर नहि चढ़ैत अछि। कतेको गिरह अछि। मुक्ति संग्राम, कौमी एकता, समाजवादक भविष्य, भारतीय परिस्थिति आ स्वयं अपना भीतर समटल देशकेँ लइ कए लेखकक आत्मसंघर्ष– एकटा अर्थ रखैत अछि।

देशक स्वतंत्रता समस्त भारतकेँ आंदोलित कए देने छल। स्वतंत्रताक झूठ साँच केँ जाँच करएवाला व्यक्तिसँ पृथको स्वतंत्र भारतक बधड़क सुना पड़ि रहल छल। शहर आ गामक दूरी लाँघि जन जीवनमे उत्साह आबि गेल छल। अपना देशक लोक किछु सोचय लगलाह, किछु चाहय लगलाह। पहिलुक बेर भरिसक हुनका अपन चाहबाक सार्थकताक अनुभूति भए रहल छल। ओ स्वतंत्र छलाह। ई साधारण घटना नहि छल। रेणु एहि स्पन्दित देश आ जनकेँ अपन उपन्यास सभमे लेखनीबद्ध कय लेलनि। अपन कथा सभमे हठात् किछु नवीन नहि लिखि पावि रहल छलाह। 'ठुमरी'क कथा सभमे स्वतंत्र भारतक घड़कब ओहेन नहि अछि। ई कथा सभ तैयो पहिलुक समय आ पहिलुक व्यक्ति सभसँ जुटल अछि। 'ठेस', 'लालपानक बेगम'' या ''पंचलैट'' मे कनैक अन्तर सँ देखल जा सकैत अछि, मुदासे ओतेक स्पष्ट आ रेखांकित नहि अछि।

नेपाली क्रांतिक दमनक उपरान्त रेणुमे अप्रत्याशित उजाहि आबि गेल छल। एना लगैत छल जे क्रांति असफल होइतो मरैत नहि अछि। ओ दूबि जकाँ दबि-दबि केँ उगए जनैत अछि। इएह तँ काल-कथाक जीवन स्रोत थीक। एहन समाचार हमरा सभकेँ भेटैत रहल कि 'रेणु' मैला आँचल'' क पात्रकेँ लए कए पुनः किछु लिखि रहल छथि, मुदा से अपूर्ण रहि गेल। रेणुक कल्पनामे अन्तर्निहित रहि जाय वाली काल-कथा निश्चित रूपसँ महत्वपूर्ण घटना-क्रमक संदर्भमे एक बेर पुनः चमकि सकैत छल। आलोकित भए हमरा सभकेँ आश्वस्त कय सकैत छल। जे-से एही संदर्भमे रेणुक विचारधारा पुनः एकबेर उधिआय लगैत अछि। ई काल खंड किछु विचित्र घटना-क्रम आ गतिविधि सबहिक अछि। सम्पूर्ण देशक स्तर पर किछु घटैत रहैत अछि। एहि क्रममे किछु वामपंथी शक्ति एक दोसराक लग अबैत अछि। पहिलुक बेर भारतमे लगभग आठ राज्यमे कांग्रेसी शासनक एकाधिकार समाप्त होइत अछि। बुरजुआ नेतृत्वक विभाजनक संकट उभरिकेँ सामने अबैत देखि पड़ैत अछि। दोसर बेर कांग्रेसक राजनीतिक एकाधिकार संपूर्ण राष्ट्रक तंत्र परसँ उठि जाइत अछि। एहि घटना सभक प्रवाहसँ रेणु जुड़ल छथि। आपात्-कालक

हुनक भूमिकापर हमरा सभकेँ विशेष ध्यान राखबाक चाही। रेणुक विचारधारा हुनक भावधारासँ बनल छल। हुनका विचारसँ अपन भाव-जगतक संरचना करबाक विवशता नहि छलनि। हुनक विचारक स्रोत कतहु बाहर-पुस्तकीय ज्ञानमे नहि छल।

लिखबामे यद्यपि पहिलुक जकाँ गति नहि रहि गेल छल, मुदा एकटा अदम्य साहस हुनकामे अवश्य उभरि आयल छल। ओ देशमे होमएवला घटनासँ उत्प्रेरित छलाह। हुनका आशा भए गेल जे भारतीय जनताक हस्तक्षेपेसँ परिवर्तन संभव अछि। कम्युनिस्ट पार्टीक प्रति हुनक तनाव बढ़ि गेल छल। ओ जयप्रकाशजी दिस आज्ञा एवं विश्वास भरल दृष्टिसँ देखि रहल छलाह जनताक भावनाकेँ रणनीतिमे बदलयवला नेतृत्व जयप्रकाशे दय सकैत छथि।

राजनीतिक हस्तक्षेपमे हुनक विश्वास बढ़ि रहल छल। हुनक मोनमे एकटा आशा पनपि रहल छल आ जखन किछु एना भेल तँ अचक्के सक्रिय भए गेलाह। अपन परवाहि नहि कय ओ संघटन, प्रदर्शन जुलुसक कार्यक्रममे भाग लेलन्हि। ओ पुनः अस्वस्थ भए गेलाह। अस्वस्थ पहिनेसँ चलि रहल छलाह, मुदा एहि बेर किछु बेसी गंभीर हालत भय गेलनि। गपक क्रममे बीतल स्मृतिकेँ दोहरा रहल छलाह। सन् १९४२ क घटनाक्रमक चर्च ओ कतेको प्रसंगमे करैत छलाह। स्पष्ट अछि जे एहि कालक घटना सभसँ हुनक भावात्मक संबंध छल। हजारीबाग जेलसँ श्री जयप्रकाश नारायणजीक भागि जयबाक कथा हुनका मोन पड़ैत छल। निश्चित रूपसँ एहि घटना सभसँ हुनक मानसिक प्रशिक्षण भेल छल। मानसिक क्षमताक प्रशिक्षणक गप्पपर ओ मुस्कुराइत छलाह। ओ विश्वास करैत छलाह जे एहि प्रशिक्षण लेल जिनगी स्वयं एकटा पाठशाला अछि। हुनक विश्वास छल जे राजनीतिक दृष्टिक कलात्मक उपयोगक लेल मात्र कार्यकर्त्ताक दृष्टिक विसर्जन आवश्यक छल। एहिसँ राजनीतिक पृष्ठभूमि स्वयं अपन गतिकेँ बेसी क्षमतासँ आ बेसी स्पष्टतासँ धारण करैत अछि। लेखकीय प्रतिबद्धता एहि सँ आहत नहि होइत अछि।

रेणुजी प्रतिबद्धताकेँ एतेक कोमल वस्तु नहि बुझैत छलाह कि ओकरा लेल गोहारि लगेबाक आवश्यकता बुझि पड़य। ओ ओकरा लेखक आ मानवक अविभाज्य नैतिकता मानैत छलाह। मुदा संगे हम इहो पओलहुँ जे कतोक राजनीतिक गतिविधिसँ ओ बड़ निराशाक अनुभव करैत छलाह। स्वयं भारतक समाजवादी आन्दोलनक गतिविधि सभसँ ओकर राजनीतिक विभाजनसँ ओ चिंतित छलाह। कम्यूनिस्ट पार्टीक टूटब पर "माया"मे ओ एक गोट मार्मिक कथा लिखने छलाह जे हुनक भावनात्मक ओजक प्रमाण अछि। भारतीय राजनीतिक गतिविधिपर आब ओ बेसी खुलि कऽआ निर्णायक ढंगसँ गप करैत छलाह।

समकालीन भारतीय राजनीति केँ निर्णयात्मक नहि बना पयबाक कारण ओ समस्त वामपंथी आन्दोलनक प्रति आलेचनात्मक दृष्टिकोण रखैत छलाह। हुनक विचार छल जे

भारतमे कोनो शाब्दिक ढंगकेँ वामपंथी एकताक बदला हमरा जनताक मध्यक एकताक आधारकेँ जनबाक चाह। श्री जयप्रकाशकेँ जनाधार छल, ओ जनताकेँ कोनो आन्दोलनक संग गोलबंद कय सकैत छलाह। घटनाक्रम निश्चित रूपसँ एकरा सिद्ध कय देलक।

भारतीय कम्युनिस्ट पार्टीक प्रति हुनक दृष्टि शनैः शनैः आलोचनात्मकसँ किछु बेसी कड़गर भेल जा रहल छल। मुदा, एहि कारण तनावक समय बड़ कम आयल। एकर कारण रेणुक मितभाषी भेनाइ नहि छल। मुदा, हुनका अपन विश्वासी सभ कम निराश नहि कयलक। एकरा यदि मोहभंग नहि कहल जाय तँ आरो की कहल जाय।' जाहि उत्साह आ सक्रियताक संग ओ सन् ७८ क आन्दोलनमे भाग लेने छलाह आओर जाहि तरहेँ ओहिसँ प्रेरित भए रहल छलाह, ओकरा बादक स्थिति सभ जाहि तरहेँ मिथ्या कए देलक, ओहिसँ गंभीर मानसिक निराशा उत्पन्न भेनाइ स्वाभाविक छल। रेणुक मोहभंग भेल। भारतीय राजनीतिमे नेतापंथी तत्त्वक वास्तविकता क्रांति सँ पैघ भय जाय, ई एकटा दुर्घटना छल। ई रेणुक जीवन केर सकरुण इतिहास बनिगेल। हुनक मृत्युमे एहि घटना-क्रम सभक योग बड़ बेसी छल।

यदि रेणुक जीवनी लिखल जाय तँ ओ पुनर्मूल आ पुनर्मूल्यांकनक समय कथाबनि जाय। ई सोचबाक आधार हमर ई अछि जे हुनका जबरदस्ती अनठाए देबाक चेष्टा कयल गेल अछि। तथाकथित समाजवादी लोक सभ प्रायः हुनक सभसँ बेसी उपेक्षा कयलनि अछि। ओकर बाद प्रगतिशील सभक बारी आओत। हुनकर जीवनक परिघटना सभकें हम सभ हरदम अनठौने छी। जे सभ हुनकर विषय मे लिखलनि अछि ओ हुनकर पूर्ण विकासक्रमसँ अपरिचित रहल छथि। हुनका विषयमे औपचारिक रूपसँ बहुतो गोटे लिखने छथि, मुदा सभटा सतही अछि। कतहु कतहु बात सभ जेहन भंगिमामे बाजल गेल अछि ओहिसँ सहमत भेनाइ बहुतो लेल संभव नहि।

रेणुक जड़ि दूर गामक जिनगीमे पैसल अछि– भारतीय गाम, छोट पैघ, कस्बासन। कहियो-कहियो शहरो गामक आभास दैत अछि। मार्क्स एहि ग्राम समुदायकेँ "नदीक द्वीप" कहने छथि– जडआ निरीह। मुदा ओ इहो लक्षित कयने छलाह जे अपन निरीहताक उपरान्तो ई ग्राम-समुदाय विचित्र शक्तिक उत्सर्जन कयने अछि। अनेको निरंकुश पूर्वी साम्राज्यक पोषण एहि गाम सभसँ भेल अछि। समय-समय पर एहन लहरि अवश्ये आयल जे एकर जड़ताकेँ भंग कयलक। मुदा, ई सभ एकटा पुराकथा थिक। रेणुक समकालीन गाम एकटा नम्हर आ कष्टकर बाटसँ गुजरि रहल छल। स्वतंत्रतासँ कम-सँ-कम ई कष्टकर दौर जनभावनाक भीतर समाप्त भय गेल छल। गाममे ई भावना जन आन्दोलनक बीचसँ जनमल छल। अपन समकालीन ग्राम-समुदायक निरीहताक उपरान्तो रेणु ओकरा जड़ नहि पओलन्हि। रेणुक साहित्यमे गाम जीवित अछि–स्पन्दित आ प्रतिक्रियाशील।

---

१. आत्मसाक्षी (माया, १९६५, विशेषांक, संपादक मार्कण्डेय)

रेणुकेँ एहि गाम सभसँ प्रेम छल। दीर्घकाल धरि ओ एहि गाम सभसँ जुड़ल छलाह। शहर आबि गाम हुनक आँखिमे प्रायः आरो चकमक भए उठल छल। शहरक संदर्भमे गामक जिनगीक कतेको जीवित रहस्य देखार होमय लागल छल। रेणुकेँ अपन भद्रता गामेसँ प्राप्त भेल छल, एहि कारण हुनकामे एक़टा गंभीर आत्मलीनता छल। शहरक भद्रता सतत आभास दैत रहैत अछि, ओ अपनाकेँ बिसरि नहि पबैत अछि। रेणु "मैला आँचल" पटनेमे रहि पूर्ण कयलनि। लगैत अछि, ओ पटनामे रहितो ओकर बाहर जीवि रहल छलाह। जखन अबोध वामपंथी भाषाक स्मृतिहीनताक सिकाइत करैत छथि तँ हमरा बुझाइत अछि जे ई सभ नवीन कहबाक आदतिसँ आर बेसी किछु नहि थिक। भाषा ने तँ कल्पनाहीन होइत अछि आ ने स्मृतिहीन। ओआगू-पाछू सँ जुड़बाक क्षमताकेँ विनष्ट कए जीविते नहि रहि सकैत अछि। रेणुक भाषामे तँ स्मृति एतेक जीवंत अछि जे ओकरा बीति जेबाक आभासो नहि होइत छैक। एहेन समृद्ध स्मृतिशील भाषा केँ रहैत यदि केओ सिकाइत करैत छथि तँ हम ओकरा अनठाय सकैत छी।

एहि भारतीय गाम सभकेँ रेणु फेरोसँ आ नवीन सिरासँ देखनाइ परखनाइ आरंभ कय देने छलाह। उत्पादकता आ सामाजिक न्यायक प्रारूप प्रायः सभक एकहि रंगक अछि। सामंतवादक पेटगर अजगर सभ पर कुंडली मारने बैसल अछि। गुन्नार भिडंल केँ बिनु पढ़नहि रेणु जनैत छलाह जे एशियाक देश सबहिक कृषि उत्पादनमे वृद्धि आ सामाजिक न्याय, दूनूकेँ एक दोसराक प्रगतिमे योगदान करबाक अछि। सम्पूर्ण प्रारूप एहि योगमे बाधक अछि। ई प्रारूप बदलने बिना प्रगति नहि होयत। मुदा, जाधरि स्वरूप नहि बदलय ताधरि गाम सूतल रहय, एहिसँ बेसी हास्यास्पद बात आर की भय सकैत अछि ?

भूमि-संबंध आ ओकर अन्तर्विरोधक विषयमे रेणुक ज्ञान किताबी नहि छल। एतबे नहि, ओ ग्रामीण संस्थाक निरंकुशताकेँ प्रत्यक्षतः देखने छलाह। फलतः हुनक गाममे अन्तर्विरोधक मार्मिक प्रकरण अछि। ई प्रकरण सभ ओ कल्पना सँ नहि गढ़ने छथि। बाल्यकाले सँ एहि निरंकुश व्यवस्थाक बोध हुनका छल जे अन्ततः एकटा सामाजिक संघर्षक दर्शनमे बदलि गेल। एहि दर्शनकेँ रेणु जीवनमे उतारलन्हि अपन कार्य व्यापारक रूप मे। नेपाली क्रांति आ समाजवादी आंदोलनसँ जुटि ओ अहि दर्शनकेँ व्यावहारिक सत्यता बना लेलन्हि।

लोकतंत्र आ सम्पूर्ण क्रांतिक अनिवार्य आ ऐतिहासिक संबंधक विषयमे हुनक धारणा स्पष्ट छल। ई धारणा व्यावहारिक बेसी छल, सैद्धान्तिक कम। 'दूरदृष्टि' जकाँ एहि प्रश्न सभ पर ओ बहस नहि करैत छलाह। एहि प्रश्न सभ पर ओ व्यावहारिक कार्यक्रमकेँ बेसी अहम् मानैत रहलाह, एहिमे दू मत नहि अछि। मूलगामी परिवर्तन लेल सरकारी तंत्रमे हुनक विश्वास नहि छल। ओ एहि तंत्रक मानसिक संरचनाकेँ बेसी नीक जकाँ बुझैत छलाह। लोकतंत्रक बिना सामाजिक न्याय संभव नहि। मुदा हम जाहि

लोकतंत्रमे छी ओ एक प्रकारक राज्यतंत्र थीक । तैयो ओ पहिलुक तंत्रक अपेक्षा बेसी गतिशील अछि । एहितंत्रक दूनू पक्ष पर हुनक सावधान दृष्टि छल । इएह कारण अछि जे एहि तंत्रक निरंकुशताक विरुद्ध जखन संघर्ष प्रारंभ भेल तँ ओ अग्रिम पंक्तिमे आबि गेलाह–नेता जकाँ नहि, कार्यकर्त्ता जकाँ ।

एकटा संरक्षणशील समाजमे क्रांतिकारी प्रक्रियाक जटिलतासँ रेणु अपरिचित नहि छलाह । ओ स्वयं नेपाली क्रांतिक पृष्ठभूमिमे एहि समस्त उलझनकेँ अनुभव कयने छलाह । एहिकारण सँ ओ निराश नहि भेल छलाह । ओ जनताक शक्तिमे विश्वास करैत छलाह । निश्चित रूप सँ ओ नेतृत्वक संबंधमे एतेक आश्वस्त नहि छलाह । ओ नेतृत्वक सीमाकेँ बड़ सावधानीसँ जाँच पड़ताल कएने छलाह । इएह कारण अछि जे सम्पूर्ण क्रांतिक संदर्भमे ओ समस्त तथाकतित क्रांतिकारी शक्तिक एकताकेँ लय कहियो आश्वस्त नहि बनि सकलाह । मुदा, अपन एहि भावनाकेँ ओ रणनीति पर कहियो नहि थोपलनि । ओ जनैत छलाह जे एहिसँ आन्दोलनमे बाधा आओत आ ओकर भावनात्मक शक्ति क्षीण भय जायत । श्री जयप्रकाशक क्रांतिकारी व्यक्तित्व आ कर्त्तव्यमे हुनक आस्था प्रायः ध्रुव छल ।

आजादीक बादेसँ वामपंथी एकताक प्रसंगमे विभिन्न राजनीतिक पार्टीमे सरगर्मी चलि रहल छल । रेणु कतेको कथात्मक प्रसंग सभमे एकर नाटकीय चर्चा कयने छथि । यद्यपि ई प्रसंग सभ कथात्मक अछि, तैयो कथासँ बाहर एकर महत्त्व मानबाक चाही । 'परती परिकथामे विस्तारसँ प्रस्तुत कुवेर सिंह आ जितेन्द्रक विषयमे वामपंथी एकताकेँ लय हुनक टक्करक चर्चा कतेको दृष्टिसँ महत्वपूर्ण बनि जाइत अछि । कांग्रेस राजनीतिक प्रभुत्वकेँ बिनु तोड़ने ई संभव नहि होयतैक । मुदा, की एहि एकाधिकारकेँ मात्र असगर पार्टी शक्ति पराजित कए सकैत अछि ? वामपंथी शक्तिक एकताक पाछाँ इएह बुद्धि कार्य करैत देखि पड़ैत अछि । रेणु कम्युनिष्ट नहि, समाजवादी छलाह, मुदा हुनक समाजवाद एहि अर्थमे बेसी नीति-निपुण आ उदार छल । फ्रांस आ इटलीक अनुभवसँ सेहो वामपंथी एकताक समझ पुष्ट होइत छल, लोहियाक कम्युनिस्ट विरोध श्री जयप्रकाशसँ बेसी तीखआ कठोर छल ।

संपूर्ण क्रांतिक संदर्भमे ई एकता देखाइयो पड़ल छल । भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी केँ छोड़ि दोसर वामपंथी पार्टी सभ एहि परिवर्तनकेँ समर्थने टानहि केलक, ओकरा बाहरसँ शक्ति देबाक वचन सेहो देलक । नागार्जुनसन कवि-लेकाक पटनामे आन्दोलनक समर्थन कए रहल छलाह । भारतक कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्सवादी) क नीति सेहो समर्थनक छल । मुदा, ई सभ ओहने, क्षणस्थायी सिद्ध भेल जेना १९६७ मे भेल छल । दू' बरखक भीतरे क्रान्तिकारी लहरि बिखरि गेल । निश्चय, एहिसँ रेणुकेँ भावनात्मक रूपसँ धक्का लागल छल । यद्यपि ओ स्पष्ट रूपसँ एहि विषयमे किछु नहि लिखलनि मुदा यदि हुनक डायरी आ कागज सभ हमरा उपलब्ध भय जाय, तँ ओहिसँ एहि पर प्रकाश पड़ि सकैत अछि ।

ई घटना सभ रेणुक विश्वासकेँ भीतरे-भीतरे चाहे तोड़ने नहि हो, मुदा निराश अवश्य कय देने छल। ई निराशा कोन कोन रूपमे प्रकट भेल ई हुनक नजदीकक लोके कहि सकैत छथि। हुनका पर विशेषांको निकलल ओहूसँ एहि पक्षपर कोनो विशेष प्रकाश पड़ैत नहि देखाइत अछि। एहि निराशाकेँ बीमारी कतेक नुकौलक ई कहनाइयो हमरा लेल संभव नहि। मुदा ई अवश्य प्रतीत होइत अछि जे बीमारी रक्षा-कवच जकाँ काज कए रहल होयत, ठीक ओहिना जेना "मुक्ति प्रसंग" कालक बीमारी-राजकमल लेल रक्षा कवचक काज कय रहल छल। मुदा, एहि समानताकेँ कोनो हद धरि निर्णायक मानि लेनाइ संभव नहि।

एहि प्रसंगकेँ एकटा अन्तर्कथा जकाँ ग्रहण करबाक पाछाँ हमर अपनो सीमा रहल अछि। संभवतः एहिमे किछु त्रुटि रहि गेल हो। परन्तु एकरा स्वाभाविक मानल जा सकैत अछि। ई पृष्ठभूमि एतबा सँ संभव कइए दैत अछि जाहिसँ रेणुक साहित्यक सामाजिक पृष्ठभूमि लेल-लिखनाइ-बजनाइ-जननाइ-एकर सही आलोचनात्मक उपयोग कयल जा सकय। रेणुक संबंधमे एखन बहुत किछु कहनाइ शेष अछि।

# धरतीपुत्रक रपट

जियो बोगजा रिपोर्ताजकेँ एकटा "साइसिमोग्राफ" कहने छथि जे सुदूर आ आन्तरिक कंपनक गतिविधिकेँ सूचित करैत अछि। धरती आ धरतीपुत्रक रिपोर्टिंग सँ साहित्यिक लेखन प्रारंभ करयवला रेणुमे आश्चर्यजनक संवेदनशीलता अछि। ई साहित्यिक रिपोर्टिंगक मात्र सूचना नहि दैत अछि। ओ मानवीय स्तरपर कंपन, उथल-पुथल आ आन्तरिक जीवनलयक समस्त उतार-चढ़ाव सेहो बड़ गंभीरतासँ उजागर करैत अछि।

धरतीपुत्रक रागविरागक ई संसार अपन छाया-छविमे जतबा समृद्ध अछि, ओतबे सामाजिक-सांस्कृतिक क्रियाकलापोमे। व्यापाररत जीवन आ सामाजिक सम्बन्ध-तनाव सभकेँ तथा गहींर स्तरपर अन्तर्लयनसँ उत्पन्न जड़ता केँ मूर्त्त कयनिहार ई सभटा रिपोर्ताज निश्चित रूपसँ महत्त्वपूर्ण अछि। ई रचना सभ तथाकथित शब्दचित्र आ ललित रंग-रेखावला संस्मरणसँ अपनाकेँ अलग करैत अछि।

रेणुक ई रिपोर्ताज शैलीकृत ललित विवरणसँ भिन्न अछि। श्री रघुवीर सहाय ठीके लिखने छथि-'रेणुक दृष्टि एके संग बाहर आ भीतर दून दिस रहैत अछि। इएह हुनक विवरणकेँ अर्थ दैत अछि।'[1] अर्थ आ व्यापारसँ भरल एहि विवरणमे एकटा पूर्ण लोक-लहरि अछि जे हमरा क्रमशः "मैला आँचल", "परती : परिकथा" सँ होइत "ठुमरी" क संसारमे लए जाइत अछि। एहेन प्रतीत होइत अछि जेना एके अविभाज्य तत्व एहि सभ कृतिमे अछि। एहि अविभाज्य तत्वक व्याख्यासँ रेणुक कथात्मक संरचना पर नवीन प्रकाश नहि पड़ैत अछि, कलाक वास्तविक समकालीन अर्थ सेहो प्रकट होइत अछि।

विशाल हिन्दी प्रदेशक सांस्कृतिक परिदृश्यक विविधताकेँ बुझबामे आँचलिकता एक हद धरि सहायक होइत अछि। ई किछु विचित्र सन गप अछि जे एहि आँचलिकताकेँ शहर बनाम गामक बहसमे घिसिआयल गेल अछि। भारतीय उपमहाद्वीपक विस्तारमे एहि अँचल सभक अपन सहवर्त्ती अस्तित्व रहल अछि। सम्पूर्ण जाति एवं राष्ट्रीय जीवनक धारासँ सहवर्त्ती होइतो ई अंचल सभ अपन स्वतंत्र परिचय बनौने अछि। जातीय अस्तित्वक अंगक रूपमे एकर महत्त्व हमर इतिहास-भूगोलमे सर्वदासँ स्वीकृत अछि।

---

1. "ऋण जल : धन जल" क भूमिकासँ

हमर सामाजिक-सांस्कृतिक जीवन आओर क्रियाकलाप पर प्रभावकारी ढंगसँ कार्य करयवला ई "तत्व" समयक मारिक पकड़िमे आबियोकेँ जीवित अछि। एहि जिनगीकेँ अपन साहित्यिक रिपोर्ताज मे उतारबाक रचनात्मक काज रेणु अपन लेखनक आरंभ मे सम्पन्न कयलनि। एहि रिपोर्ट सभकेँ पढ़ैत रेणुसँ एकटा आर साक्षात्कार होइत अछि टटका सरोकार आओर चिंतासभवला रेणुसँ, धड़कैत आ प्रतिक्रिया करैत रेणुसँ।

धरतीक रपट आ धरतीपुत्रक रपट रेणु लेल अलग अलग क्रिया नहि अछि। धरती अपन जनसँ जीवित होइत अछि। रेणुक लेल जन धरतीक पुनरुज्जीवनक कारण आ हेतु अछि। एहि रपट सभमे लघु आ विराटक अन्तर्योजना किछु एना प्रभावी अछि जे हम ओहिमे सम्पूर्ण वर्तमान संग अपन अतीत केँ सेहो समेटैत चलैत छी।

एहि आंचलिक रपट सभक सार्थकता, हमर दृष्टिमे, एकटा अन्य कारणसँ सेहो अछि। ई रपट सभ देखबैत अछि जे कोना भारतक अंचल परिवर्तन लेल छटपटा रहल अछि आ राष्ट्रीय धारासँ मिलि जयबाक ओकर प्रयत्न कतेक महत्वपूर्ण अछि। भारतमे आधुनिकताक परिकल्पना, एहि अंचल सभक बिनु राष्ट्रीयधारामे शामिल भेने असंभव अछि। रेणुक ई रिपोतर्जि इएह सिद्ध करैत अछि जे भारतीय उपमहाद्वीपक स्तर पर ग्राम समुदाय आ अंचल सभक जीवनक जड़ता टूटि रहल अछि आ स्वतंत्रताक बाद ओकर स्पन्दन एहि कालातीत, जीवनक द्वीप सभ जकाँ आत्मनिर्भर (अथवा जड़) गाम वास्तविकताकेँ बदलत; एहने क्रांतिकारी आशा सभ आरो जन-समुदायक संग रेणुक मोनमे सेहो छल। हुनक एहि साहित्यिक रपट सभक महत्त्व अहि मौलिक कारणसँ सेहो अछि।

रेणुक साहित्यिक रिपोर्ताजक तीनटा स्पष्ट शृंखला देखाइ पड़ैत अछि। प्रथम शृंखलामे "विद्यापति" आ "रसप्रिया" वला रिपोतर्जि अछि। दोसर शृंखलामे "सोनो आमाँ" आ तेसर शृंखला मे "ऋणजल-धनजल" अबैत अछि।

विद्यापति-रसप्रिया शृंखलाक रिपोर्ताज मे एकटा तन्मयता अछि ! जयदेव, विद्यापति, चण्डीदास, मीरा कबीरसनक तन्मयता ! विद्यापतिक ई लहरि हमरा रेणुक कथा सभामे लय जाइत अछि आ हुनक उपन्यास सभमे सेहो। एहि रपट सभमे एकटा स्वतंत्र आन्तरिक लय अछि, जकर संबंध एकटा व्यतीत होइत देशकालसँ सेहो अछि, आ ओहि समुदायसँ सेहो अछि जे एहि देशकालक संग नाभिनालसँ जुड़ल अछि। "मिरदंगिया" एहि संसारक चरित्र अछि– रिक्त होइत संसारक। मुदा ई संसार ओकरा लेल एखनो अर्थहीन नहि भेल अछि। राग-विरागक सम्पूर्ण आत्मिक संस्कार मिरदंगियाक संग हमर कल्पनामे जीवित भय उठैत अछि। एकर छाहरि-छवि मात्र प्रतिकृति नहि अछि। रेणु संवेदनशीलतासँ अर्थ आ आकारमे स्वतंत्र, मुदा वर्त्तमानमे विवश एहि संसारकेँ भावनामे जीवित रखबाक एकटा महत्त्वपूर्ण प्रयास केने छथि।

छोट-छोट स्वप्नसँ लय कय अतिकाय दुःस्वप्न सभ धरिरपोर्ताजक विषयक चयन ई सिद्ध करैत अछि जे हुनकर रपटक संसार छोट आकार वाला पैघ संसार अछि। ओकर विराटता एहि लघु-लघु आकारक अन्तर्लयनमे अछि। विद्यापतिसँ डायन कोसीक आन्तर्य एहि दिस सेहो स्पष्टतः अछि।

रेणुक एहि रपट शृंखलामे विषयक संग-संग लेखकीय "टोनो" बदलि जाइत अछि। विद्यापति शृंखलाक रपट जतय अपन टोनमे रसमय, स्मृतिसँ उत्तेजित अतीत आ भावनाक स्मृति-संसारकेँ पुनरुज्जीवित करयवाली अछि ततहि "डाइन कोसी" आ "ऋण जल-धन जल" शृंखलाक रिपोर्ताज अतिशय आ अतिकाय आकारवला दुःस्वप्न सन आतंककारी अछि। मुदा रेणु एहि दुःस्वप्न सभकेँ चुनौती जकाँ स्वीकार कए चलैत छथि।

साहित्यिक रिपोर्ताज रेणुक कलात्मक संरचनोक अंश अछि। जाहि लोक-लहरिकेँ रेणु आगू चलि कँ अपना कलाक विषय बनौलन्हि, ओकर जीवन एहि रपट सभमे अछि। जीवित साहित्यिक तत्व जकाँ ओ रेणुमे प्रकट होइत अछि। इएह कारण अछि जे रेणुक रिपोर्ताज शैलीबद्ध आ रीतिबद्ध भाव-मुद्रा सभसँ प्रायः मुक्त अछि। एहिमे राग-विरागक [illegible]टर्कीयताक संग-संग प्रगतिक आत्मीयता सेहो अछि जे रेणुक समस्त कला-साहित्यक [illegible]ोपता अछि। एहिमे अतीतक व्यामोहपूर्ण इन्द्रजाल सेहो अछि, व्यतीत रहितो तथ्यक [illegible]ड़ा सेहो अछि आ संग-संग परिवर्तनक सहज उत्साह-उल्लास सेहो अछि। अनुभवक [illegible]हेन गहनता अन्यत्र कम भेटैत अछि, रेणुक लघु उपन्यासोमे नहि।

रेणुक ई कथा रपट सभक आधार बड़ विविधतासँ भरल अछि देश कालक भीतरो अछि आ जन-जीवनक सांस्कृतिक अन्तरालोमे अछि। दुखक बात ई थीक जे रेणुक रिपोर्ताजक एकटा पैघ हिस्सा पत्र-पत्रिकामे बंद पड़ल अछि आ कतेको प्रायः अनुपलब्ध अछि। एहि सीमा सभक बादो जाहि तीन शृंखलाक हम चर्च कयने छी ओ रेणुक संदर्भमे प्रतिनिधिक महत्त्वक अछि। रेणुक साहित्यक संकलन-प्रकाशन एखनधरि पूर्ण नहि कहल जायत। एहि सीमाकेँ स्वीकार करबाक सिवाय हमरा सभ लग कोनो प्रकारक विकल्प नहि अछि। "जी-रस"क लेल लग पासक दुनियाक कतेको मार्मिक रेखाचित्र सेहो ओ कलात्मक क्षमतासँ देसी आत्मीय रंगमे उजागर कयने छथि। ओहिमे रूप-रचनाक अतिरिक्त स्वादक आनंद सेहो अछि।

विद्यापति शृंखला द्वारा रेणु सांस्कृतिक अन्तरालकेँ भरवाक प्रयास कयने छथि। कोनो कोठरमे पसरल मिथिला सांस्कृतिक भावनात्मक तत्वकेँ जाहि तरहेँ एहि रपट सभमे प्रकट कयल गेल अछि, ओकर अपन रस आ स्वाद अछि. जे हुनका अपन कथा-साहित्यमे सर्वथा अलग पहिचान देलक अछि। रिपोर्ताज कथा सभक प्रसंगमे ओकर विस्तृत चर्चा कयल गेल अछि।

[illegible] अपनो शृंखलाक रिपोर्ताज भावना संसार क एकटा दोसर परिपार्श्व प्रकट

करैत अछि। क्रांति-कथा सभ एकर अविभाज्य अंग अछि। एहि क्रमक अन्य रचना सभ हमरा बहुत चेष्टा कयला सन्तो नहि उपलब्ध भेल, संभवतः हुनक डायरीसँ ओकर सभक ठीक ठीक सूचना उपलब्ध भए सकय।

"नेपालः हमर सोनो आमाँ" आ "क्रांतिकथा" क शीर्षकमे विभाजित ई रपट सभ वस्तुतः एकहि वास्तविकताक प्रतिरूप अछि। सोनो आमाँ-छोटकी माए कहियो बंगालक धरती अछि, जकरा रेणु अपन जन्मभूमि मानैत छथि आ कहियो नेपालक धरती जे हुनकर वास्तविक छोटकी माए थीक। रेणु जीवित रहितथि तँ आगू लिखतथि–धरतीः हमर सोनो आमाँ। क्रांतिक प्रेरणा सँ भरल ई कथासभ अपन गतिमे अतीतक नहि अछिः ओ ओहि भागक अछि जे व्यतीत भयोकेँ वर्तमान पर कुंडली मारने बैसल अछि। परिवर्तनक लेल बजबैत धरती, आ जन – छटपटाइत धरतीक धड़कब – एहि रपट सभमे बेर बेर सुनाइ पड़ैत अछि। ई दुनिया तेसर दुनियाक समस्त पीड़ा सहैत अछि – नवजन्मक पीड़ा सभ। एहि दुनियासँ रेणु जुड़ैत छथि। ओना तँ भारतीय साहित्य मे ई गंध नवीन नहि अछि, मुदा ओकर विस्तार एकदम नवीन अछि।

एहि रिपोर्ताज कथा सभक आ रपटक अपन विचारधारा आ भावधारा अछि। विचारधारा आ भावधाराक एहेन एकान्त समन्वय बादमे स्वयं रेणुक साहितयमे नहि भेटैत अछि। स्पष्टतः एहि लेखनमे ओहेन कोनो आंतरिक जटिलता नहि अछि जे तथाकथित आधुनिक लोकमे बेर बेर प्रकट भए अपन अर्थ आ आकर्षण हेरा दैत अछि। धरती आ धरतीपुत्रक मुक्तिक ई कल्पना ई सहमुक्ति –एहि रचनाक विचारधारामे रचि-बसि गेल अछि। क्रांतिकारी कथा सभ एकर आगुक क्रम अछि। एहि क्रांतिकारी कथा सभक टोन सोना आमाँक टोन सँ भिन्न नहि अछि। समयक संग-संग ओहिमे गरिमा आ दृढ़ता आयल अछि। अन्य पत्र पत्रिकामे सेहो ओकर क्रम भेटि जायत। क्रांतिकारी मानसिकताक अनाहत निरंतरताकेँ चिन्हबा लेल ई रिपोतजि सभ दस्तावेज सन महत्त्व रखैत अछि। एहि दस्तावेज सभकेँ समन्वित रूपसँ जाँचबाक आवश्यकता अछि।

आजादी रेणु लेल एकटा संपूर्ण भावना अछि। अपन रिपोर्ताज, कथा, उपन्यास आ डायरी सभमे ओ एहि संपूर्ण भावनाकेँ अभिव्यक्त कयने छथि। स्वतंत्रताक अर्थ हुनका लेल संपूर्ण क्रांतिए भए सकैत अछि। मुदा, स्वतंत्रता अपन राजनीतिक अर्थमे मौलिक अछि। ओ संपूर्ण क्रांतिक धुरी थीक। एहिमे परिकल्पना सभ अछि, गाथा आ मिथक सेहो अछि। क्रांतिकथाक परिपार्श्वमे विकसित एहि रचना सभक विषयसँ सहजात विषयक स्थूल संपर्क बड़ टटका अछि।

रेणुक ई रिपोर्ताज मात्र परिदृश्यात्मक नहि अछि जेना पहिलुक दृष्टिमे प्रतीत होइत अछि। अपन रूप - गठनमे सेहो ई औपचारिक नहि अछि। एकर सुन्दरता एकर रचनात्मक स्वरूपमे नहि अछि। एहि मे लोक दृश्यतत्व अछि, मुदा ओ मात्र इएह नहि अछि। सौंदर्यकेँ

117176

रेणु मानसिक प्रत्यक्षीकरणक विषय नहि मानैत छथि। हुनका लेल सौंदर्यक विषय लोकमे अछि। ओ मात्र भोक्ताक मोनक विषय नहि अछि आ ई विषय जन सेहो थीक, ओकर वास्तविक सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक स्थिति सभ सेहो अछि।

बनराजि, उपत्यका आ अधित्यकाक संग मैदानक ई परिदृश्य अपन निर्धनता, भूख, बीमारी, शोषण आ दासताक प्रतिमुख तत्त्व सभक लेल सेहो ओतबे ध्यानाकर्षक अछि। हमरा सभक एकटा वरिष्ठ कथाकारक सिकाइत अछि जे आइ कालहुक बेसी हिन्दी कथा रिपोर्ताजसँ उपर उठिकेँ नहि लिखल जाइत अछि। रपट सभसँ ई कलात्मक दूरी अपन चिन्ताक विषय भय सकैत अछि, मुदा, भारतवर्ष एखन वास्तविक साहित्यिक रपटक लेल अपन आँखिए खोलि रहल अछि। जाहि घटनाक्रम सभसँ प्रतिदिन हमर देश जाय रहल अछि ओहिमे भूदासक जीवन, रौदी, बाढ़ि, अकाल, हरिजन-हत्या सभ भूमि, संघर्ष, मंहगी, बेकारी आ मूर्खताक अन्य अनेको तत्त्व वर्तमान अछि। ई समस्त समस्या सभ व्यापक आ वास्तविक सूचनाक अपेक्षा रखैत अछि। कलाकारक मौन यदि एहि समस्या सभसँ प्रतिकृत होइत अछि तँ एहिसँ ओकर रचनात्मक संभावना बढ़तहि अछि। एहेन वस्तुगत सूचना सभसँ रेणुक मोनकेँ प्रेरणा भेटैत अछि। कलाक कोनो विधा रेणुक लेल हाथी दाँतक मीनार नहि थिक।

अतिकाय दुःस्वप्नवला शृंखलामे आयल रिपोर्ताजक विषयमे श्री रघुवीर सहाय ठीके लक्षित कयने छथि जे एकरा लेल रेणुकेँ देश पार कए कतहु जाय नहि पड़ैत छनि जतय देश मे संक्रमण होइत अछि ओतय काल मे यात्रा अनिवार्य भय गेल अछि।''[1] स्पष्टतः देश आ कालमे मानवकेँ प्रतिकूल हेबाक ई कथा सभ विराट लोकवृत्तमे बदलि जाइत अछि आ ओकरेसँ 'मैला आँचल' जन्म लैत अछि।

साधारणक प्रतिष्ठाक लेल हमर देशमे विचारधारात्मक संघर्षक एकटा नम्हर परंपरा रहल अछि। रेणुक साहित्यमे एहि विचारधाराक अभाव नहि अछि। ओना हुनक भावधारामे ई संघर्ष बेसी साकार भेल अछि। सामाजिक दौड़होमे, कालमे पिछड़ल एहि साधारण लोकक काल कथा रेणु लिखने छथि। ई काल कथा घटना सभसँ बनैत अछि आ घटनाहीन निरंतरतासँ सेहो बनैत अछि। हुनक घटनाहीनताक एकटा सामाजिक कारण अछि, जकर जड़ि हमर संरचनामे बड़ दूर धरि, हमरा पाछू लए जाइत अछि। की आश्चर्य अछि जे संपूर्ण व्यवस्था हुनका घटनाक्रमसँ जबरदस्ती बाहर राखि जड़ बनएबाक निरंतर चेष्टा कयने अछि। एहि मर्मकेँ बुझि रेणु ओकरा सामाजिक धाराक भीतर घीचबाक सतत प्रयास केने छथि। ई रेणु लेल न्यायक संघर्ष बनि गेल अछि।

न्यायक लेल संघर्षक ई गाथा रेणुक रिपोर्ताज कथासभमे लयात्मक मांगबबनि जाइत अछि—

---

१. ''ऋणजल : धनजलक'' भूमिकासँ

"जिदन संकु-संगेन
इमिन् रयो-लं-सलय-एला ।"[१]
रेणु जनैत छथि–
हिसौम भलाई का बी रे दी
हारखेन सामेत भेनाक आ
मुरुकिया मोरु ही नोमरा नोलोम देयाय ताम ।[२]

"ऋणजल-धनजल" रिपोर्ताज श्रृंखलाक अन्तिम कड़ी सेहो अछि आ संगे एकटा सम्पूर्ण, स्वतंत्र वृत्त-चित्र सेहो। एहि वृत्त चित्रके हम रसप्रिया (विद्यापत) या सोना आमॉ श्रृखलासँ अलग एकटा तात्कालिक घटना जकाँ नहिं देखि सकैत छी। वस्तुतः बाढ़िं आ रौदी-दूनू भारतीय अकालक तत्त्व अछि। घटना सभ तँ मात्र व्याज होइत अछि अकाल जेना भारतक गामक नियति धीक। भारतीय गाम सभक आर्थिक जड़ता जतेक, एकरूप अछि ओकर सांस्कृतिक वैभव ओतद विविध अछि। चिरकाल सँ सहजीवी अनेको जाति समुदायबला ई गाम-संस्कृति "माटिक प्रतिमा उदासिनी" बनि जाय, एहिसँ पैघ दुर्घटना संपूर्ण इतिहास में आर की भय सकैत अछि।

ऋणजल-धनजल एकटा अतिकाय दुःस्वप्न अछि। एहि घटनाक्रम सभसँ रेणुक व्यक्तिगत संबंध अछि। हुनके शब्द में, "हमर गाम एहन इलाकामे अछि जाहिठाम प्रत्येक बरख पश्चिम-पूरब आ दक्षिणक कोसी, पनार, महानंदा आ गंगाक बाढ़ि सँ पीड़ित प्राणी सभक समूह आबि शरण लैत अछि। साओन भादोमे रेलक खिड़कीसँ विशाल आ सपाट परती पर गाय बरद महीस-बकरीक हजारों झुँडक झुँड देखि लोक विभीषिकाक अन्दाज लगा लैत अछि।"

सन् ४७ कै आसपास आरंभ भय कऽ इ श्रृंखला ७५ धरि चलैत अछि। कोसी क्षेत्र सँ परिदृश्य बदलि पटना धरि व्याप्त होइत अछि। जतय पत्रकारिता लेल बाढ़ि आ रौदीक समाचार अछि, ओतय रेणु लेल ओ सभ भारतीय गामक काल-पृष्ठ पर लिखल नियतिक अभिलेख अछि। एकरा नाटकीय बनएवाक कोनो कारण रेणुक लेल नहि अछि। ओ उपमहाभारतीय क्षेत्रक रहनिहार छथि, जतय हिमनदीसभ आ पर्वतीय बरखाक बाढ़िक विभीषका एकटा निर्धारित तत्त्व अछि। पटनाक बाढ़िक वर्णन निश्चित रूपसँ नाटकीय अछि, अतिरिक्त संयोजित अर्थमे।

कोसी अंचलमे बाढ़ि जाहि ठाम एकटा नियत घटनाक्रम अछि, ओतय पटनाक बाढ़ि एकटा आकस्मिक दुर्योग अछि। एहि दूनू प्रकारक घटनाक्रमक विभीषिका सभक चित्रण लेखक कयने छथि। ओना दुहू प्रकारक घटना एक्के आततायी अनुभवकेँ मूर्त्त करैत

१. सुखक जीवन लेल, आऊ, खोजवाक अछि, पायब। –एकटा संथाली गीतक कड़ी
२. देशक भलाइक काजमे डःख आ कष्ट अछि, अपन मोनक दृढ़ताकेँ नहि छोड़ू भाई। एकटा संथाली कविता

अछि। देश आ कालक बदलैत परिदृश्यमे एक्के अनुभव सतत बनल रहैत अछि-आतंक आ मृत्यक अनुभव। मुदा, एहि सभक मध्य संघर्षशील मनुष्यक ओ गाथा सेहो साकार होइत अछि, जकरा कारण ओ एहि समस्त परिस्थितिमे अजेय बनल रहि जाइत अछि। जे किछु होइत अछि, ओ रुचिगर सेहो भय सकैत अछि, मुदा हुनका लेल जें ओहिसँ बाहर रहि गेल होथि, जे घटनाक परिधिमे छथि हुनका लेल घटनाक वैह अर्थ नहि होइत अछि। एहि अर्थकेँ एकटा संपूर्ण स्थिति में बदलि रेणु हमारा घटनाक परिधिमे लय अबैत छथि। घटना प्राकृतिक सेहो भय सकैत अछि आओर मानवकृत संकट सेहो। हिनक आपसी संबंधकेँ सामाजिक एवं मानवीय हितमे तय केनाइ रेणुक एहि रचनाधर्मी रिपोर्ताज सभक उद्देश्य अछि। ई एहि रपट सभक गंभीर सामाजिक अर्थ अछि।

सभसँ पहिने ऋणजल, वस्तुतः रघुवीर सहायक शब्दमें ई नाटक कविता, कथा सभ किछु अछि। रपटक आन्तरिक संरचना सर्जनात्मक, कलात्मक बनि सकैत अछि-एकरा रेणु सिद्ध कय देलनि। नाटकीय प्रत्यक्षता आ कोनो मार्मिक संगीतक दुःखद अन्तर्ध्वनि सभ सँ समेकित एहि रपट कथा सभ मे मानवीय तत्त्व कलात्मक तत्त्व सँ अभेद संबंध स्थापित करैत अछि। हमर व्यवस्था आ सामाजिक नैतिकता केँ लगातार चुनौती दैत ई घटना सभ छिटपुट घटना नहि अछि।

रेणुक प्रारंभिक रचना सभ मे, एकटा विचित्र प्राणशक्ति लक्षित कयल जा सकैत अछि। ई प्राण-शक्ति अजेय अछि। कुरूपता आ मारूक विभीषिका सभक मध्य मृत्यु आ दुर्योगसँ संघर्ष करैत ई प्राण शक्ति समस्त घटनासँ ऊपर अछि। इएह मानवीय प्राण-शक्ति आ युयुत्साक परिणाम थीक।

ई रचना सभ, जेना रेणु स्वयं कन्हैत छथि, मात्र पिण्डप्रहार नहि थीक। एकरा अलग-अलग एकाइमे देखएवला दृष्टि इतिहास आ यथार्थक बाधक तत्त्व केँ अनठा दैत अछि। रेणुक नाटकीयताक नाटकीय व्याख्या सँ, जेना निर्मल वर्मा कहैत छथि, - किछु प्राप्ति नहि भय सकैत अछि। एहि नाटकीयताक हमरा लेल एतबे महत्त्व अछि जे एकरा द्वारा हम कथा भागक तीव्रता जकाँ कथोपकथम भागक तीव्रताकेँ सेहो चीन्हि लैत छी। नागरक उपन्यास जकाँ हुनक कलात्मक पहिचानमे सर्वत्र ई तीव्रता नजरि आओत। ई पहिचान हुनका सतीनाथ भादुड़ी सँ सेहो प्राप्त भए सकैत अछि। भारतीय कथा-साहित्यमे ई एकदम नव आ आकस्मिक तत्त्व तँ नहि अछि। ई दोसर बात थीक जे भारतीय उपन्यास सभमे निर्मल जी के ई सभ किछु पहिलुक बेर रेणुमे प्राप्त होइत छनि।

घटनासँ कथन आ संवादक आकार पैघ भय जाइत अछि–ई स्वभाविको थीक। पटनाक बाढ़िक प्रसंग अपन आकारमे नहि, प्रकारमे नाटकीय भयगेल अछि। "गोलघर डूबे गेछे"–एहि नाटकीय संवादमे चाहे कतबो अतिरंजना हो, मुदा बाढ़िक आतंककारी क्रममे ई नाटकीय नहि रहै अछि। आतंक माथ पर चढ़ि जाइत अछि–"लौटा लिअ भैया।

आगू बढ़नाइ जरूरी नहि।'' आत्मसंतोषक लेल एतबे किछु बेसी अछि। मुदा ईतँ एकटा बचाव थीक, व्यक्तिगत।

आ आब रौदी। सन् ६६ क अकालक अति मारूक परिस्थिति। बाढ़िक कारण करुणाक दृश्य अछि। रौदी एकटा अदृश्य कारक अछि। एहि रौदीकेँ प्राकृतिक घटनासँ बेसी मानवीय दुर्भावनाक रूपमे चित्रित कय लेखक वर्ग-विभाजित समाजमे नुकायल वास्तविकताके उघारि कऽ राखि देलनि अछि। ऋणजलक अदृश्य आतंक निरन्तर दृश्य होइत जाइत अछि–पशुधन आ मनुष्यक अपूरणीय क्षति। जीवन पर मृत्युक मड़राइत छाहरि। गया, पलामूक ई एकटा एहेन अनुभव अछि, जकरा रेणु पूर्ण इमानदारीक संग प्रस्तुत कयने छथि। रौदीक एहि रपट जिज्ञासाक नाटकीयता नहि अछि। ओहि मे एकटा करुणाशील उत्ताप अछि, जीवित क्रोध। एहि विरोधी भावनामे कम नाटकीयता नहि होइत अछि। संभवतः बेसीए होइत अछि।

रेणु लिखैत छथि– ''पछिला कतेक बरखसँ हजारो नाम, शब्द, देश, समस्या आ समाचार सभ हमरा लेल अर्थहीन भए रहल अछि, होइत जा रहल अछि।'' स्पष्ट अछि जे एकटा संवेदनशील आ विचारसँ उत्तेजित मानसमे एकर प्रतिकृति सभ तँ देखाइ पड़बे करत। वाच्ये व्यंग्य भएगेल अछि, समाचार व्यर्थ भए रहल अछि, मानवक समाचार तैयो मानवकेँ तंग करैत रहैत अछि, करैइत रहता मनुष्य भावनाहीन भइए नहि सकैत अछि। परिघटनासभ जखन प्राकृतिक कारण सभसँ बेसी मानवीय कारण दिसि संकेत करैत हो, तखन तँ आओरो नहि। व्यर्थता षड़यंत्र भरल अछि। रेणुक मोन एकरा सहजहि चिन्ह लैत अछि। हम अपन-अपन दुरूक्खा दरवज्जा बंद कइयोकेँ एहि गंधसँ बचि नहि सकैत छी। ई स्थिति तँ आर मारूक भए जाइत अछिएने तँ शुद्ध हवा भीतर आबि सकैत अछि आ ने गन्हाइत हवा बाहर जा सकैत अछि। आ रेणुक मोनमे तीव्र प्रतिक्रिया होइत अछि – फूसि, बकवास, स्टंट, फ्रॉड।

रौदीक एहि रपटमे आंतरिक विवशताकेँ रेणु सूब चीन्हने छथि – की भय गेल छनि हुनका। आत्मालापमे डूबल ई नाटकीयता अनचोके प्रगीतमे बदलि जाइत अछि। एकटा दुःखद गीतक कडी जकाँ रौदी रेणुकेँ मोनक अतल गहिंरइ धरिक स्पर्श कयने अछि। मनुष्यक नियति की इएह थीक ? व्यवस्था की एही विडंबनाक नाम थीक ? की ईश्वर एकर असगर निर्देशक छथि आकि हुनक किछु मानव अमला सेहो छथि जे अलग-अलग हिस्साक निर्देशन कय रहल छथि ? रेणु रौदीक एहि घटनाकेँ एही सामाजिक अर्थमे देखैत छथि।

तीन चारि जिलाक ई क्षेत्र रौदीक चपेटमे एकटा अलग एकाई बनि गेल अछि। प्रशासन अपन सुविधाक लेल एकरा बाँटि सकैत अछि आ एहि तरहेँ उत्तरदायित्वसँ मुक्ति पाबि सकैत अछि। मुदा ई रौदी प्रशासनिक घेरा केँ तोड़ि देने अछि। अन्तर्राष्ट्रीय राहत

दल आबि रहल अछि, बी.बी.सी., यू. एम. आ. क टीम आबि रहल अछि। प्रयास चलि रहल अछि, लड़ाई चालू राखनाइ अछि, – मनुष्यक मुक्ति लेल होबएवला लड़ाई– जन आ जन संस्कृतिक हकमे लड़ाई चलि रहल अछि–तेसर दुनियाक भीतर एकटा क्रांतिकारी प्रक्रिया जारी अछि। एकटा मैल ऑचर, एकटा परती परिकथाक क्रममे जारी लड़ाई समकालीन यथार्थक अर्थसँ जुड़ल लड़ाईमे बदलय लगैत अछि।

ग्राम-व्यवस्थाक बदलवामे बुद्धिजीवी सभक भूमिका के खाहे गांधी देसी महत्त्व देने होथि, मुदा ई सत्य अछि जे जाधारि गाममे कृषि-क्रांति नहि होयत, ओकर जनाधार नहि बदलत ताधरि ई काज शहरक बुद्धिजीवी सभक उत्तरदायित्व थीक। आ गामसँ संबन्द्ध बुद्धिजीवीक लेल तँ ई एकटा अतिरिक्त उत्तरदायित्व अछि। रेणु एहि उत्तरदायित्वक पालन कोनो औपचारिकताक लेल नहि कए रहल छलाह। हुनका लग एकटा संपूर्ण क्रांतिक सपना छल जाहिमे गाम-बाहरक अन्तर समाप्त भए जयबाक छल।

# कथाक रंग परिवेश

की रेणुक कथा योगपद आ कथाक उपन्यास वैह थीक जे हुनक बृहत्तर उपन्यासक अछि ? कोनो पाठक – आलोचकक मोनमे ई प्रश्न उठि सकैत अछि। रेणु रहितथितँ पुछितियनि – एहि असंभव मायाक रहस्य स्वयं हुनकहिसँ फुजि सकैत अछि की ? पुछितियनि नहि, मात्र जिज्ञासापूर्ण शब्दमे बजितहुँ आ तखन हुनक मुस्कीक मधुर आँच मे जँचितहुँ। उत्तर जँचितहुँ। आइयो हुनक कथा सभ पर लिखैत ई प्रश्न ओहिना उल्लंग ठाढ़ भऽ गेल अछि।

निस्पृह यर्थाथसँ एहन मोहक परिवेश कोना जन्म लैत अछि ? कठोरताक कोखिसँ जनम लैत ई कोमलता कतेक सकरुण अछि ? "रसप्रिया" सँ "अगिनखोर" धरिक कथा यात्रामे एकटा प्रश्न उभरैत अछि। अपन संरचनामे ई कथा सभ जेहन हो, मुदा, अपन स्पर्शमे कतेक तरल अछि– ऐन्द्रिय स्पर्श जकाँ रूप-रस-गंध-शब्द स्पर्श नादमय–ई कथा सभ कतइ सँ अपन जीवन स्रोत अर्जित करैत अछि ? एकर उत्तर स्वयं रेणुक शब्दमे देमय चाहब। "तीन बिंदियाँ" कथामे ओ लिखने छथि–"मूल रागसँ चोरानुक्की खेलाइत ई छोट-छोट आँचलिक रागिनी सभ...।" मूल राग आ आंचलिक रागिनी सभ गंधवहकेर रहस्य। मूलराग अपन स्थान पर स्थिर अछि, अनाहत, आ छोट-छोट रागिनी सभक वितान ओकर चारू कात लहराइत रहैत अछि– भाव-सृष्टि करैत रहैत अछि। आ कतहु-कतहु ठीक एहिसँ स्वतंत्र पद्धतिक सहारा सेहो रेणु लैत छथि। "लालपानक बेगम" वा "ठोस" मे मूल रागे गति उत्पन्न करैत अछि, रागिनी सभ स्थिर भऽ जाइत अछि। यदि स्थिर नहि भऽ जाइत अछि तँ मूलरागक गतिमे ओकर लय भऽ जाइत अछि। हेर्मन हेसक कथा जकाँ वा ओहूसँ बेसी हेर्मन ब्रोश जकाँ। दृश्य जीवनक स्पर्शमे तदाकृत होमऽ लगैत अछि, मात्र पटभूमि बनल नहि रहि जाइत अछि। बाल्यकालक प्रेमक पवित्रतामे सामाजिक संदर्भ सहित–मूर्त्तभऽ उठैत अछि। "रसप्रिया"क मिरदंगिया अपन गंध परिवेशमे सामाजिक संदर्शक पीड़ा लेने साकार होइत अछि। आ ई पीड़ा मोहनाक मायक निश्छल प्रश्नमे अछि– "आर तँ किछु नहि कहैत छल ?" नहि, कहबाक स्थितिकेँ पार कऽ गेल अछि परिस्थिति। साधारण जीवनमे ई 'दोस्त राग' केहन जटिल भऽ उठैत अछि।

ई कोनो बीतल संसारक "स्मृति" मात्र नहि अछि। ई तँ एकटा सनातन भावना थीक, जे कथासँ होइत हमरा सभकेँ बंदी बना लैत अछि आ एहि बंधनमे हम अपन सभ किछु बिसरि जाइत छी।

हमरा बूझि पड़ैत अछि जे रेणुक कथा सभकेँ कालक-क्रममे राखिकेँ देखनाइ निरापद नहि अछि। ठीक ओहिना, जहिना हुनक उपन्यास सभकेँ कालक्रममे राखि एकटा विकासात्मक रूपरेखा नहि बनाओल जा सकैछ। मुदा, रचना-क्रमक विकास ह्रासक लेखा-जोखा सेहो अपन महत्त्व रखैत अछि। ओहि संबंध मे फेर कहियो यथा-प्रसंग गप्प करऽ चाहब। एखन एहि प्रसंग केँ स्थगितो राखल जाय सकैत अछि। रचनात्मक शक्तिक व्यतिक्रमक उपरान्तो रचनात्मकता अपन अर्थ बनौने राखि सकैछ। रसप्रिया रेणुक प्रारंभिक कथा सभमे सँ अछि, मुदा ओकर मर्म रेणुक संपूर्ण कथा साहित्यमे पसरल अछि– एकटा कलाकारक संघर्ष। ठीक ओहिना, जाहि तरहेँ "तीन बिंदिया" मे मितालीक संघर्ष अछि। दुनूक परिणाम अलग अछि की ? ऊपर सँ एहिना प्रतीत होइत अछि। मुदा भीतरसँ दुनू अपन प्रभावमे अखंड अछि। एकटा कलाकारक आत्मा ओहि व्यथा-विगलित असफलतोकेँ सार्थक कऽ दैत अछि। एकटा जीवंत प्रेरणामे सभ किछु सार्थक भऽ जाइत अछि। की सफलता एहि सँ पैघ वस्तु थिक ?

यथार्थवादक कोनो रूढ़ शैली हो, ई माननाइ एकतरहे निठाह सतही प्रयास अछि। शैली सभ स्वतः रूप वर्ग बनि कऽ यदि नहि रहि जायतँ ओ मानव आ ओकर जिनगीक संबंधकेँ साकार करैत अछि, ओकर स्थिति केँ निखारैत अछि आ ओकर अनुभवसँ संघर्ष करैत अछि। तँ ओकरा यथार्थ सँ विमुख आ स्वतंत्र मानवाक कोनो कारण हमरा नहि देखि पड़ैत अछि। रेणु अपन कथा सभ लेल बड़ बेसी औपचारिक शैलीक प्रयोग नहि कयने छथि। अथवा कोनो रूढ शैलीक प्रयोग ओ आत्ममुग्धताक आग्रहसँ नहि केने छथि। आंचलितकता हुनक शैलीमे अछि मात्र 'टोन'क अनिवार्यता सँ-विषय-वस्तुक अनिवार्य कारण सँ। एहिसँ बेसी हुनका लेल शैलीक कोनो महत्व हो, एहन नहि जानि पड़ैत अछि।

संवेग केँ कलात्मक महत्व दए भावना आ विचारक उपेक्षा यथार्थवाद नहि थीक। रेणुक कथा संवेगक कथा नहि अछि। ओहिमे मानवीय भावना आ विचारक समृद्धि हुनक मूर्त्त – अमूर्त्त कारकक पहिचान सेहो अछि। इएह कारण थीक जे हुनक कथाक मानवीय सत्य विश्वक भीतरी कारक शक्तिसँ स्वतंत्र नहि अछि। मानवीय सत्यकेँ स्थिर स्वरूप मे बंदी करबाक चेष्टा रेणु नहि कयने छथि।

कथामे "टोनक" ई वैविध्ये हुनक दृष्टिक विस्तार सूचित करैत अछि। दृश्यपट आ "टोन" परस्पर पूरक तत्व जकाँ एहि कथा सभमे प्रकट होइत अछि। कोनरॉड लिखने छथि– "वास्तविकताक रोमांटिक अनुभूति कदाचित् स्वयं मे अभिशाप बनि सकैत अछि, मुदा जखन ओ कोनो व्यक्तिगत अनुशासन आ दायित्वसँ रेखांकित होइत अछि आ

मानवीय सत्ताक कठोर तथ्यक पहिचान बनि जाइत अछि, तखन समस्त मानव-भावनाक सार तत्त्वक रूप मे "विश्व-दृष्टि" बनि जीवनक अंतरंगकेँ उजागर करए लगैत अछि" रेणुक कथामे वास्तविकता के एही तरहक रुमानी (स्वप्नजीवी) अनुभूति आ भावना अछि।

राजेन्द्र यादव सेहो एहि तथ्यकेँ एहि रूपमे प्रकट कयने छथि– "अपन कथा सभक योजनामे ओ बंगलाक तरलता आ हिन्दीक यथार्थ बोधक सुन्दरतम मिश्रण कयने छथि।" एहिमे बंगला आ हिन्दीक दुराग्रह छोड़ि देल जाय तँ उपर्युक्त उद्धरण सार्थक एवं सटीक भऽ जाइत अछि।

वास्तविकता जखन मोन पर प्रतिक्रिया करैत अछि तँ ओ अनुभूति सभमे प्रकट होइत अछि आ पुनः अनुभूति भावनासभमे अपना केँ सजबैत अछि। एहि प्रकारेँ संसारक एकटा रूप बनैत अछि। कथा सभमे अभिव्यक्त होमयवला संसार भावना-व्यापार सभक परस्पर संबंध आ विच्छितिसँ भिन्न नहि भऽ सकैत अछि। कखनहुँ-कखनहुँ सँ इन्द्रजाल सन लागयवला घटनो सभ एहिसँ फराक नहि होइत अछि। असंभव आ प्रायः विशलकाय सन लगायवला घटना सभ सेहो वास्तविकताकेँ एकटा 'दोसर दृष्टि'सँ प्रत्यक्ष करैत अछि। मुदा, एहि जटिल पद्धतिक, फेंटेसी–रोमांस आदिक, उपयोग रेणु कमे कयने छथि। अधिकांश कथा सभमे गंध– परिवेशसँ मानवीय भाव–व्यापाररत जीवनकेँ लेखक प्रतिकृत कयलनि अछि।

रेणुक कथासभक संसार आंचलिको अछि आ शहरी सेहो। मुदा, तथाकथित "आधुनिकता" सँ भिन्न ओकर एकटा जातीय स्वरूप अछि। रेणुक कथासभक पात्र असगर होइतो असगर रहबाक नियतिसँ अभिशाप्त नहि अछि। ओ अपन एकान्तक व्यक्तिगत त्रासदी केँ सेहो ओहि रूपमे नहि देखैत अछि, जाहि रूपमे रेणुक समकालीन किछु कथाकार देखने छथि। ई भिन्नता रेणुक कथा सभकेँ अलगसँ अस्तित्व दैत अछि। पात्र आ परिवेश कथा सभमे जाहि सहजतासँ घुलिमिलि जाइत अछि ओहिसँ प्रतीत होइत अछि जे कथाकार ओकरा ऐकात्म्य मे देखने छथि। कोनो कथा-प्रक्रियामे ओकरा एक करबाक आवश्यकता रेणु कहियो अनुभूत नहि कयलनि। इएह कारण थीक जे अपन समस्त रुमानियत (कल्पनाशीलताक) उपरान्तो रेणुक कथा सभ मानवीय संसारक सत्यता केँ तह पर तह देखार करैत अछि– कखनहुँ भीतरसँ बाहर आनि आ कखनहुँ बाहर सँ भीतर आनि।

जीवन मे साधरणो अछि आ असाधारण सेहो। कखनो-कखनो विभाजक रेखा खत्म भऽ जाइत अछि आ तखन साधारणोमे असाधारण सहजहि झलकि जाइत अछि। जकरा हम सामान्यतः भावहीनता सत्ता जकाँ देखैत छी, ओहिमे भावना सभ ओहिना अछि, जाहि तरहेँ आत्मलीन सत्ता मे अछि। रेणु आत्मलीनता सँ जनमल असाधारणताक भ्रम तोड़ि कथाक संसारमे अबैत छथि। असगर भेनाइ अद्वितीय भेनाइ थीकरो ओ नहि मानैत छथि!

हुनक कथासभमे असगरपनक ई देवीकरण नहि भेटत। अपन साधारणो पात्रकेँ ओ मानवीय सत्ताक संपूर्ण समृद्धि देने छथि। एहि अर्थमे ओ प्रेमचंदक कथा परम्पराकेँ आगू बढ़ौने छथि।

रेणुक आंचलिकता एकदेशीय तत्व नहि थीक। ओ स्थानीय सेहो नहि अछि। ओहि मे ग्रामांचलक समस्त स्पन्दन बंदी रहैत अछि। इएह कारण अछि जे रेणु आंचलिक रहितो स्थानीय भऽ पवैत छथि। प्रेमचंद सँ हुनक समीपताक रहस्य एहि बातमे सेहो नुकायल अछि। रेणु सामाजिक-मानवीय यथार्थकेँ आंचलिक लागऽ वला कथा सभमे अवश्य बन्हने छथि, मुदा ई बंधन एक प्रकारक ओहने अनुशासन अछि जाहि दिस कॉनराई संकेत कयने छथि। अपन कथा प्रक्रियामे रेणु आलोचनात्मक यथार्थ वादक सीमाकेँ नाङघ जाइत छथि। हुनक साहित्य एहि अर्थ मे सामाजिक यथार्थवादक साहित्य थीक जे ओहि मे मात्र 'व्यवस्थ्ाक' तात्कालिक अन्तर्विरोधक आलोचानात्मक चित्रण नहि प्रत्युत ओहिमे समस्त जन-जीवनक दृष्टिकोणसँ परिस्थितिक आ संबंध परिवर्तनक एकटा सशक्त भाव-धारा काज करैत अछि। अपन विचारधारामे प्रायः ओ "आलोचना" सँ आगू नहि बढ़ि सकलाह। मुदा, जेना कि कमलेश्वर लक्ष्यो कयने छथि एहेन अन्तर्विरोध बालजाकमे सेहो अछि आ किछु हद धरि ताल्सतोयमे सेहो। स्वयं प्रेमचंदक प्रारंभिक साहित्यमे एहेन अन्तर्विरोध भेटि जायत।

कथा सभक अपेक्षा उपन्यास सभमे ई सामाजिक यथार्थ वेसी व्यापक आ परिपक्व अछि। यदि "परिप्रेक्ष्य" केँ ध्यानमे राखी आ कार्य-व्यापारक विविधता केँ एकमात्र आधार नहि बनाबी तँ ई स्पष्ट भऽ जायत जे हुनक कथा सभमे सामाजिक यथार्थ अपन आंतरिकताक संग व्यक्त भेल अछि। कथासभक संदर्ब मे एकरा हम विस्तारसँ स्पष्ट करय चाहब।

रेणुक कथा सभ जतय भावनाक संसारकेँ निरंतर आभास दैत अछि, ओहिठाम ओहिमे सामाजिक संदर्भक कटु अनुभूतियो भेटैत अछि। ई सामाजिक संदर्भ भावनाक भीतर रुपाकार ग्रहण करैत अछि। एहिमे वर्तमान असंगतिकेँ नङ्घबाक एकटा प्रबल भावना कोनो अमूर्त्त भविष्यसँ नहि जुटैत अछि, मुदा भविष्यक एकटा मूर्तिमान संकल्पना सँ जोराइत अछि। ओना "समाजवादी" सत्यकेँ रेणु अलगसँ चित्रित करबाक चेष्टा नहि कयने छथि। रेणु ने तँ अपन यथार्थकेँ जीवन-शून्य मूल्य सभक (परिकल्पना सभक) "यूटोपिया" सँ आच्छादित कयलनि अछि आ ने ओकरा अपन अतीतक "एपिटाफ" बनौलनि अछि। इएह कारण अछि जे अतीत वर्त्तमान-भविष्यक एकटा जीवंत निरंतरता अहि कथासभक विशेषता बनि जाइत अछि।

एहि संदर्भमे कथा पर गप्पक एकटा गंभीर क्रम बनैत अछि। नव कहानीक आंदोलन संग जाहि बृहत्तर वास्तविकताकेँ लेखक सभ कथाक विषय आ परिप्रेक्ष्य बनौलनि ओहिमे

रेणुक स्थान कोनो आन लेखकसँ कम नहि अछि। एहि आन्दोलनक दुर्भाग्य ई रहल जे अपन प्रारंभिक स्थितिमे जाहि व्यापकताक संग ओ परिचालित भेल, ओहि सँ आसते-आसते कटैत चलि गेल। 'आधुनिकताक' तथाकथित आग्रह ओकरा अपने परिप्रेक्ष्यसँ भटका देलक। यदि एना नहि होइत तँ हिन्दी-कथा निश्चित रूपसँ समृद्धतर भेल रहैत एहि भटकावक परिणाम ई भेल नवकथाक किछु लेखकक पाँच मे आबि गेल आ हुनके विश्वास वा धारणा सभकेँ जगजियार करबाक बाट ताकय लागल। फलतः भारतीय जन-जीवनसँ ओकर लागि क्रमशः कम भेल गेल आ ओकर मूल संवेदना अपने जीबैत संदर्भसँ कटि गेल।

भरिसक रेणु एहिसँ अपन कथासभक रक्षा कयलनि। व्यक्तिगत चेतनाक भीतर कतिपय स्थितिकेँ सहज रूपेँ स्वीकारैत आ किछु दोसर भावनात्मक बिडंबनाकेँ नकारैत रेणु अपन कथा सभमे एकटा निरंतरताक निर्वाह कयने छथि। ई निर्वाह एकटा सक्रियता अछि, एकटा संघर्ष अछि। ई मात्र औपचारिकता नहि थीक। ई कलाक भीतर एक प्रकारक चुनाव सेहो अछि। ई चयन एतेक आसान नहि अछि, आजुक स्थितिमे तँ आर नहि। व्यक्तिगत भावना आ बाह्य वस्तुगत स्थितिक समस्त तिक्ख विरोधक भीतर कलाकारक ई चुनाव चुनौती सभसँ भरल अछि। रेणु एहि चुनौती सभकेँ घोषणाक संग नहि स्वीकारलन्हि। प्रायः ओ घोषणा सभसँ अलग-अलग एकरा चुपचाप स्वीकार करैत रहलाह। मुदा, एहि चुप्पी मे एकटा सार्थक संकल्प निहित अछि। ई चुप्पी हुनक आंतरिक दृढ़तासँ सार्थक होइत अछि।

जीवनक एकटा उद्याम भावना हुनक कथा सभमे सर्वत्र अँखिदेखार अछि। उदासीक भीतर निरंतर वर्तमान प्राण-शक्ति। ई अक्षय प्राण-शक्तिए उदासीकेँ सह्य बनाय दैत अछि। निराशाक भीतर संचरणशील उत्साह आस्ते-आस्ते स्थायी बनि जाइत अछि। कथासभक ई जीवित सत्य रेणुकेँ अन्य कतेको समकालीन लेखकक रुग्ण मानसिकता सँ फराक करैत अछि। ई रुग्ण मानसिकता अपन भीतरसँ ओहि प्राण शक्तिकेँ बाहर नहि आबय दैत अछि जकर घोषणा एहेन लेखक बेर-बेर करैत छथि। रेणुक कथामे जीवनक स्पंदन अछि मुदा, से एकर उपरान्तो जे परिस्थिति सभ दमघोंटू अछि। परिस्थितिसभसँ संघर्ष करैत रेणुक पात्र सभमे एकटा विचित्रता अछि— आस्थाक ई आस्था एहि लेल विचित्र लगैत अछि जे रेणुक समकालीन कथा-लेखनमे ई आस्था दुर्लभ होइत गेल अछि।

ई आस्था कोनो सरल, बालसुलभ उत्साहक परिणाम नहि थीक। ई आस्था मात्र सिद्धान्तमूलक सेहे नहि अछि। रेणुक कथासभक पात्र एहन नहि अछि जकरा अपन आस्थाकेँ सिद्धान्त मे घोषित करबाक पूर्ण परामर्श भेटल होएक। हिनक आस्था जीवनसँ उत्पन्न होइत अछि। जीवन संघर्ष करैत अपन आस्थाक निर्माण करैत अछि, आ ओकर रक्षा करबाक संघर्षमे मिझरा जाइत छथि। इएह कारण थीक जे औपचारिक आस्था सभसँ

रेणुक कथा-पात्रक नैसर्गिक सामाजिक आस्था अलग भऽ जाइत अछि । आस्थाक रक्षाक ई लड़ाई कलात्मक सीमा पर चलैत रहैत अछि, चलैत रहैत अछि ।

हुनक कथासभ पर अलगसँ विचार करबाक आवश्यकता एहि लेल सेहो अछि जे ई कथासभ समकालीन जीवनक अपन पार्श्व सभकेँ एकहि संग उजागर करैत अछि । ओहिमे विषय-वस्तुक सीमा नहि अछि । ई ग्रामीण मेहनती किसान सभक कथा अछि आ शहरी मध्यवर्गक कथा सेहो । ओहिमे कतेको तरहक पात्र अछि । पात्र सभक एहेन "टाइपोलॉजी" दोसर लेखकमे कम भेटत । अनेको वर्गक एहन स्पन्दनशील पात्र रेणु कथा-साहित्यमे भेटत, जकर विस्तार सरिपहुँ हमरा प्रभावित कयने बिना नहि रहैत अछि । एहि पात्र सभ मे मिरदंगिया पचकौड़ी अछि, "तीसरी कसम"क बहलमान हिरामन अछि, 'बेसक' चटाई बुनखला सिरचन अछि, "लालपान की बेगमक" बिरजूक माए अछि, "अच्छे आदमी'क उजागिर अछि आ हिनका सभक संगे दूर्वादास सेहो अछि मीताली-गीताली सेहो अछि । एकरा सभक बीच हाराधन अछि । एहि प्रकारेँ पात्रक कतेको स्वतंत्र वर्ग रेणुक कथा सभमे अबैत अछि । एहि स्वतंत्र वर्गक पात्र सभक अपन व्यक्त्वि सेहो अछि अपन स्वतंत्र लक्षणशीलता आ अस्तित्वो अछि । ई पात्र सभ अपन जीवन-क्रम आ सुख-भोगमे अत्यन्त सजीव आ व्यक्तित्व संपन्न बनि उभारैत अछि ।

पात्रक व्यक्तित्व के मात्र आकारक विशेषताक रूप मे रेणु चित्रित नहि केने छथि । ई पात्र सभ व्यक्तित्वक प्रकार छथि । हिनक भाव-भोग हिनका आन्तरिक आकार-प्रकार आ स्वतंत्रता दैत अछि । हिनक स्वलक्षणशीलता हिनका स्वतंत्र व्यक्ति वनवैत अछि । निश्चित रूप सँ ई साधारण रहितो भीड़ मे अनचिन्हार नहि छथि । कथा सभक प्रत्येक पात्रक संग रेणु न्याय करैत छथि । प्रत्येक पात्रक सामाजिक जीवनक इतिहास सँ स्वतंत्र—अपना आप मे कोनो सिद्ध एकाइ नहि होइत अछि । वस्तुतः एहन पात्र सभक सृष्टिक द्वारा ओ जीवनक देश-काल-सापेक्ष स्थिति सभक संयोजन करैत छथि । ई पात्र निरविधि, कालातीत आत्मा सभ नहि अछि । एकरा अपन देशकाल गढ़ने अछि, ई एकटा विशेष ऐतिहासिक परिस्थिति मे जनम लेयऽ वला पात्र सभ अछि । ई पात्र अपन बाह्य-वास्तविकता पर प्रतिक्रिया करैत अपन व्यक्तित्वक निर्माण करैत अछि । एहि प्रकारेँ एहि पात्र सभक संग देश कालक यथार्थ साकार होइत अछि-संबंधक संसार लक्षित होइत अछि । ई पात्र विचार आ भावनाक कतेको धाराक उत्सर्जन करैत अछि ।

रेणुक कथा सभ मे परिस्थिति मानव-जीवन सँ जुड़ि साकार होइत अछि । एहेन नहि जे ओ खाली कथाकारक मानसिकताक अंग बनि रहि जाय । प्रायः परिस्थिति के कथाकार पात्रक संदर्भ तोड़िअलग कऽ दैत अछि आ अपन भावनाक आकार मे प्रस्तुत करऽ लगैत अछि ।

आधुनिकतावादी कथाकार सभ बहुधा अपन कथा सभमे एहने परिस्थिति बना लैत छथि आ ओहि पात्र सभकेँ स्थापित कऽ दैत छथि । रेणुक कथा सभमे परिस्थिति पात्रक

अछि-चाहे ओकर भीतर होय वा बाहर। परिस्थितिकेँ असंभव मानसिक आकारमे गढ़बाक चेष्टा रेणु बड़ कम केने छथि। जतय एहनो मानसिक परिस्थितिक छैक ओतय हुनका एकटा मानवीय वास्तविकता सतत अभिप्रेत छनि। निश्चित रूपेँ परिस्थितिक मानसिकताकेँ अस्वीकार नहि कयल जा सकैत अछि। मानवीय परिस्थिति खाली बाहरी नहि होइत छैक। जार्जा लूकाच एहि संबंध मे बड़ विस्तार सँ लिखैत आधुनिकतावादी लेखन आ यथार्थवादी लेखनक भीतर परिस्थिति सभक स्वरूपकेँ उद्घाटित कयने छथि।

मानसिक स्थितिक योग सेहो एकटा परिस्थिति थिक। मुदा एहि 'योग' केँ आत्मसंभव" बना देब आधुनिकतावादी करतब थीक। रेणु एहि आत्मसंभव स्थितिक कथाकार नहि छथि। हुनक कथा सभमे परिस्थिति सतत मूर्त्त बनि व्यक्त होइत अछि, भने ओ कतबो सूक्ष्महो। ई दोसर बात थीक जे एहन परिस्थितिमे हुनक मोन सहज रोमांससँ परिचालित होइत अछि आ जटिल मनोविज्ञानसँ सेहो। रेणुक कथासबहिक समीक्षाक प्रसंगमे एतऽ प्रयास कयल जायत जे एहि स्थापना सभकेँ सोदाहरण प्रमाणित कयल जाय। मानवीय भावना आ वस्तुगत परिस्थितिक द्वन्द्व आजुक स्थितिमे जटिलसँ जटिलतर भऽ गेल अछि, मुदा एहिसँ कलात्मक चेतना सेहो अनिवार्यतः जटिल बनि जाय– एहेन नहि अछि। रेणुक कलात्मक चेतनामे परिस्थितिक अनावश्यक जटिलता नहि उत्पन्न होइत अछि।

रेणुक कथासभमे वातावरण अपेक्षाकृत बेसी प्रभावशाली तत्त्व अछि। एकर कारण हुनक कथासभकेँ जीवनसँ संयुक्त रहनाइ थिक ओ कार्यरत जीवनक कथाकार छथि। क्रिया-कलाप सँ भरल हुनक कथासभ अपन पृथक वातावरण बनवैत अछि। कतहुँ ई वातावरण अत्यन्त तनावपूर्ण स्थितिक अछि तँ कतहुँ अत्यन्त रसमय स्थितिक। आंचलिक वातावरण केँ रेणु अपूर्व मूर्त्त रूप प्रदान कयने छथि। वातावरणक जीवंतता देखि राजेन्द्र यादव ठीके कहने छथि जे– "वातावरण जीवित पात्र जकाँ सोंझामे ठाढ़ भेल अपन हक मानू.हठात् अगबे रेणुएटा सँ मँगैत हो।" वातावरणक सजीव हेबाक दोसर कारण थीक रेणुक कलाक एन्द्रियता।

"गंध-परिवेश" सँ रेणुक एहि कलात्मक विशेषताकेँ रेखांकित करबाक चेष्टा कयल गेल अछि। वातावरण मूर्त्त भए सकैत अछि आ अमूर्त्त सेहो। विचार आ भावक प्रवाहक अंग बनि ओ एकटा प्रवाहमान सत्ता जकाँ अधिकारसँ बाहर सेहो जा सकैत अछि। मुदा, ऐन्द्रिय सत्ताक रूपमे ओ सर्वदा हमरा सब लेल प्रत्यक्ष रहैत अछि। रेणुक कथा सभमे जे प्रत्यक्षता अछि, ओ वातावरणक मुक्त कारणे अछि। रेणु वातावरणकेँ संगीतक ध्वनि, लहरि सँ भरि हमरा सभकेँ उदास कऽ दैत छथि वा उद्वेलित; ओकरा छाहरि-छविमे सजीव बना हमरा अभिभूत करैत छथि वा आतंकित, मुदा वातावरण गोचर रहैत अछि, स्पर्श सँ बाहर नहि जाइत अछि। चेतनाक अन्तर सँ सेहो ओकर लहरि उठैत रहैत अछि, स्मृतिक

रूपमे जुड़ल आ घटनाक प्रभावक रूपमे अदृश्य। ओकरा अहाँ चाहितो कथासँ फराक नहि कऽ सकैत छी– चाहे ओ "तीसरी कसम" हो वा "आदिम रात्रिकी महक"। सामाजिक वातावरणक आन्दोलित चित्र सभ रेणुक कथा सभमे बेर-बेर प्रकट होइत अछि। किछु कथामे वातावरण बड़ आतंकपूर्ण अछि। ई आतंक घटनाक नहि अछि, मूढ़ताक अछि जकरा तोड़बाक सतत् चेष्टामे कथा आकार ग्रहण करैत चलइत अछि।

रेणु संघटित परिवेशक अतिकोमल कथा सेहो लिखने छथि। एहेन कथा सभमे रिपोर्ताजिक तेज घटनाक्रम आ परिवेश नहि अछि। एकर विपरीत एहिमे वातावरणक एकतान संश्लिष्टता अछि जाहिमे पात्रक स्थिति बनैत–बिगड़ैत अछि। एहेन वातावरणकेँ "प्रभाववादी" सेहो कहल जा सकैत अछि। ओना, लेखक मनोवैज्ञानिक अभिप्रायक प्रयोग द्वारा ओकरा मात्र प्रभाववादी होयबासँ बचयाक भरिसक सफल चेष्टा कयने छथि। ई वातावरण प्रभाववादी होयबासँ एहि लेल बचि जाइत अछि जे ओहिमे इच्छाक मायाजाल ओतेक नहि होइत अछि जतेक छाया-छविक वास्तविक रंगाकार। ओकर एकटा आधार कथाकारक दृष्टिकोणक वास्तविकतामे होइत अछि। स्वप्न आ कल्पना सबहक आकारसँ वातावरणकेँ भरबाक चेष्टा रेणु कम्मे करैत छथि। वातावरणक अतरंग तत्त्वक कारणसँ सेहो ओहिमे कल्पनाक प्रयोग बेसी अपेक्षित नहि रहैत अछि। एहेन वातावरणकेँ रूप ओ भावसँ समृद्ध करबाक कला रेणु खूब जनैत छथि।

रेणुक कथा सभमे वातावरण बड़ गतिशील रहैत अछि। गतिशीलता ओकरा असाधारण रूपेँ जीवन्त आ वास्तविक बना दैत अछि। तद्दृश्यतामे एहेन वातावरण अनुपम अछि। गति बाहरी आकार-तथ्यक सेहो होइत अछि आ मानसिकता सेहो। रेणु एकरा एकटा रासायनिक योग सँ संयुक्त करैत छथि आ फेर अन्तर्क्रिया सभसँ ओहिमे गति उत्पन्न कय दैत छथि। इएह कारण थीक जे हुनक कथा सभमे वातावरण प्रायः ठोस आ मूर्त्त अछि।

दैनंदिन जीवनक छोट-छोट आकलनसँ वातावरणकेँ गढ़वाक कला केओ रेणुसँ सिखओ। एहि दिशा मे हुनका महारत हासिल छनि। अपन लेखा-जोखामे ओ जखन नाटकीय विवरण देबअ लगैत छथि तँ सहजता कटगर होमय लगैत अछि। भावात्मक आ नाटकीय दुनू प्रकारक वातावरण रेणुक कथा सभमे समान कलात्मक सफलताक संग संयोजित भेटैत अछि। एकर कारण रेणुक प्रत्यक्षीकरण अछि। रेणु जेना अपन दूनू आँखिक संग-संग मोनक आँखिक सेहो फुजल रखैत छथि। वस्तुगत तथ्यक मानसिक प्रत्यक्षीकरण करितहुँ ओ एकर आभास तक नहि होमय दैत छथि। जीवनक प्रत्यक्ष वातावरण कथा सभमे उतरि गेल अछि।

कतहु-कतहु वातावरण हुनक पात्रक आँखिमे साकार भऽ जाइत अछि, कतहु हुनक मुद्रामे सँ कतहुँ हुनक सार्थक-निरर्थक कार्य-व्यापार सभमे। उदाहरण लेल जेना हाराधन

अपनेमे एकटा संपूर्ण वातावरण समेटने रहैत अछि। ओकर एकटा अपन अलग वातावरण अछि जकरा ओ दोसराक प्रभावसँ सतत बचौने रहैत अछि। अपन सम्मोहनसँ ओ ओकर रक्षा करैत अछि। ई सम्मोहन ओही साधनामे, तन्मयतामे अछि। ओकर संलापमे एकटा वातावरण छैक, आततायी, तैयो सम्मोहक। जेनाओ मादा चीतलक स्वर सुना पाठककेँ सम्मोहित कय लैत अछि। ओहिमे एकटा आर्न्तनाद जेना साकार होमय लगैत अछि। अहि आर्न्तनादमे कलाकारक पीड़ाक ने जानि कतेक तह उघड़य लगैत अछि। ओहि सभ तहक भीतरे तँ हाराधन बंदी अछि! ई वातावरणक एकटा अन्य संगति अछि। एहि प्रकारेँ रेणुक कथा सभ मे वातावरणक बाहरी भीतरी संगति भेटत। वातावरणकेँ एहि पात्र सबहिक संग ठीक-ठाक आयत्त कऽपओनाइ अपेक्षित अछि ने तँ अहाँ ओकरा नाटकीयताक अतिरिक्त आर कोनो अर्थे नहि दए सकब।

रेणु अपन कथासभक वातावरणकेँ बड़ सचेत भऽ क, मुदा अत्यन्त सहज रूप सँ संयोजित करैत छथि। रंग-रेखा सभमे उभारैत छथि। हुनक व्यक्त-अव्यक्त अर्थ प्रत्येक दबावक संग प्रकट होइत अछि। वातावरणक संघटना नव कथासभमे अपन विशिष्ट महत्त्व रखैत अछि। प्रायः रेणु समकालीन लेखनक सभ वातावरणकेँ कलात्मक संश्लिष्टता देने छथि, ओकरा कथाक बाहरी तत्त्व मे भिन्न अंतरंग बनौने छथि। मुदा, रेणुमे ओकर छविमयता आ सघनताक अपन विशेषता अछि। इ एक कारण थीक जे रेणुकेँ बहुधा आंचलिक कहि एहि संपूर्ण आन्दोलनक परिवर्तनसँ अलग सेहो रखबाक प्रयास भेल अछि। बिनु एहि बहसकेँ कि रेणु वातावरणेसँ आंचलिक रोमांसक कथाकार छथि वा नहि, हम एतऽ मात्र एतबे कहय चाहब जे अन्य लेखकक तुलना मे रेणुक "वातावरण" अपेक्षाकृत बेसी संवेद्य सहज आ स्पर्शयुक्त अछि। बिनु प्रतीक, स्थिति आ अन्यापदेशक प्रयोग के हुनक कथाक वातावरण केँ चीन्हल जा सकैत अछि। अपन वातावरणकेँ कथाक "रूपकक" लेल प्रयोगमे अनबाक उदाहरण एहि कथा सभमे कमे भेटत।

बिम्ब आ प्रयोग मानस-प्रदेशक स्थितिकेँ साकार करितहुँ रेणु ओकरा अप्रस्तुत सन कथामे नहि रखलनि। एहेन समस्त उपादान कथा सभमे सोझे आ बिनु कोनो परोक्ष अर्थ-संकेतक मुँह जोहैत अबैत अछि। घटनाक पूर्वाभास देबाक लेल वातावरणक प्रयोग सेहो रेणु कयने छथि, मुदा रहस्यमय रूपमे नहि। रेणुक कथा सभक वातावरण रहस्यहीन आ प्रत्यक्ष होइत अछि। जतय रहस्यक छाहरि रहितो अछि ओतय ओकरा मानव-स्वभावक अनुरूप बना लेनाइ रेणु केँ अबैत छनि। एहि प्रकारेँ रेणुक कथासबहिक परिचित वातावारण हमरा थकबैत नहि अछि, आ बेर-बेर नव कार्य-कलाप, निष्कर्ष आ परिणाम सभसँ जुड़ल हमरा सभमे हरियरी आनि दैत अछि।

रेणुक कथासभक वातावरण ध्वनि-संकुले नहि, व्यापाररत आ कार्य-संकुलो अछि। जीवन-व्यापारक संग जुड़ल ई वातावरण परिचयक अपेक्षा नहि रखैत अछि। एतेक

परिचित रहितो जेना रेणुक कथा सभमे ई पहिलुक बेर अपन संपूर्णतामे फुजैत अछि। केहेन प्रभावशाली होइत अछि ई विवृति ! ओ खुलि कँ हमरा झिकझोरि दैत अछि, स्वयंसँ बाहर निकालि कथाक देशमे पात्रक संसारमे–लय जाइत अछि । रेणुक वातावरणक आकर्षण दुर्निवार होइत अछि-ई मानवामे हमरा कोनो प्रकारक संकोच नहि होइत अछि।

वातावरणक भूमिका एहि ठाम समाप्त नहि होइत अछि– ओ पात्रक भौतिक आ मानसिक परिवेश सँ बहुधा पैघ भय जाइत अछि। जेना "तीसरी कसम" मे वातावरण हिरामनक परिवेश आ मानसिकतासँ पैघ अछि, ओहिमे मानवीय अंतरंग छाया–छवि अछि–प्रेमक, पाश्चातापक,व्यर्थताक आ भरिसक ओकरोसँ पैघ। कथा समाप्त भेलाक उपरान्त एहि वातावरणक संग पाठककेँ आरो सुखद अनुभूति होइत छैक। टीससँ भरल एकटा सम्मोहक स्थिति हमरा अपना भीतर घीचैत अछि। अपनामे सिमटियो हम बाहरी संसारसँ विलग नहि भऽ पबैत छी। एहि प्रकारेँ एकटा सेतु बनैत अछि। वातावरण स्वयं सेतु बनि जाइत अछि। एहि सेतुक बिना रेणुक संसारमे पहुँचि पओनाइ की संभव अछि !

रचनाधर्मी कथा सभक अलगसँ कौनो पहिचान बनाओल जा सकैछ– ई हम नहि मानैत छी। संश्लिष्टते रचनाधर्म थीक। रेणुक कथा सभमे इएह संश्लिष्टता हमरा हुनक रचनाधर्मी स्वरूपक आमने-सामने ठाढ कय दैत अछि । एकरा लेल रेणु कलात्मक निपुणताक कोनो तकनीक तैयार नहि करैत छथि । ई संश्लिष्टता जेना हुनका अपन कथासभक संसारेसँ उपलब्ध भए जाइत छनि। ओहिमे किछु बाहरसँ जोड़नाइ आवश्यक नहि रहि जाइत अछि। ई संश्लिष्टता प्रवाहक निरंतरता जकाँ अछि। ओकरा रचनाक आग्रहसँ कटनाइ-छँटनाइ आवश्यक नहि। एहि प्रवाहक पूर्णता की अलगसँ चीन्हल जा सकैत अछि ?

नव रचनाशीलता आ किस्सागोईकेँ लए नव कथाकार किछु घोषणा कय रहल छलाह। एहिमे सँ एकटा एहने घोषणा राजेन्द्र यादवक छल । ओ लिखने छथि– "परंपरावादी किस्सागोई मात्र कथा कहबाक शैलिए नहि, विषयक क्षेत्रमे किछु रूढ़िसँ जकड़ल छल आ नव यथार्थबोध विषय आ शैली दूनूक रूढ़िसँ हँटि– अपन स्वतंत्र व्यक्तित्व माङि रहल छल।"

रेणु कँ एहेन कोनो बाधा नहि भेटलनि। हुनक कथा सभ मे किस्सागोईक कारणेँ अन्तर्विरोध सभ सँ कम भेटत। रेणु एकटा स्वाभाविक किस्सागो छथि। तखन की हम ई मानि ली जे हुनका यथार्थक बोध नहि छनि ? की समकालीन यथार्थ एतेक जटिल, खंड-खंड आ ओझरायल अछि जे ओकरा लेल अतिरिक्त रचनाधर्मी संश्लिष्टताक माङ कयल जाय। केहन आश्चर्य अछि जे राजेन्द्र यादव आ नामवर सिंह दूनू एहि बिन्दु पर अनचोके एक भए जाइत छथि ।

रेणु किस्सागोइ नहि छोड़लनि, कथाक रसक संग कोनो वंचनापूर्ण खेल नहि खेलयलनि। तैयो हुनक कथासभमे समकालीन भारत आ बृहत्तर भारत सँ साक्षात्कारक

अनेको रूप रूपान्तर अछि। रेणुकेँ अपन रचनाधर्मिताक लेल समशैली रचनात्मक बूझि पड़लनि– कथावाचनक शैली सेहो। कथावाचनमे कोनो नवीन वाचक तत्त्व नहि अछि। ''आख्यायिका'' सभक माध्यमेतँ हम एकरासँ जुड़ल छी। आत्मकथात्मक नाटकीय शैलीकेँ एहि प्रकारेँ स्वतंत्र रूपमे देखबाक कोनो ठोस आधार नहि अछि। दुराग्रह पृथक वस्तु थीक।

रेणुक रचनाधर्मिताक स्रोत जीवन-बोधमे अछि। जीवनक अन्तर्विरोधक मध्य साँस लेने छथि रेणु आ ओकर उतार-चढ़ावक बीच अपन बोधकेँ स्थिर सेहो ओएह कयने छथि। अतः रेणुक यथार्थबोध कोनो दोसर समकालीन कथाकारसँ बेसी गंभीर, विविध आ पूर्ण अछि। अपन अनुभवक संसारमे कतेब बेर भटकलाह ओ। ''क्रांति'' हुनका लेल शब्द मात्र नहि रहल। ओ राजशाहीक विरुद्ध जनताक वास्तविक क्रांतिमे हिस्सा लेने छथि। अतः विचार, भावना आ रचनाशीलतामे रेणुकेँ यथार्थबोधक लेखक मानऽ पड़ैत अछि। निश्चय, हुनक यथार्थबोध कोनो खास वर्ग या विश्व-दृष्टिसँ वा तथाकथित आधुनिकता–बोधसँ सीमित नहि अछि। समकालीन बृहत्तर यथार्थक उपन्यासक संदर्भ मे विस्तार सँ लिखल गेल अछि।

ओकरा एहिठाम दोहरेनाइ आवश्यक नहि।

रेणुक रचनाधर्म सामान्य, साधारण; किन्तु बृहत्तर जीवनक वास्तविकतासँ निर्धारित होइत अछि। कथा सभ सेहो एकर अपवाद नहि अछि। ओहिमे स्थूलकाय कल्पना सभ लेल कोनो विशेष गुंजाइश नहि अछि। रेणुक कथा सभमे कल्पना मात्र इच्छा सभक संसार नहि रचैत अछि, ओ वास्तविकताकेँ आर घनगर बनबैत अछि। अपन बोधसँ रेणु कल्पनाकेँ अनुशासित करैत छथि। ई रेणुक रचनाधर्मी कल्पनाक विशेषता मानल जायत। रेणुमे कल्पना सेहो यथार्थसँ अनुशासित होइत अछि। कल्पनाकेँ इच्छासृष्टि जकाँ रेणु कहियो नहि देखलनि। हुनक कल्पना-बोधकेँ प्रतिकृत करैत अछि ओ छोट सँ छोट प्रसंग जतमय कल्पना सहजहि साकार अछि। स्वप्नजीवी कल्पनासँ रेणुकेँ कोनो संबंध नहि अछि। रेणुक सपनो जीवनक तथ्यबद्धतासँ चरितार्थ होइत अछि।

एहि प्रकारेँ प्रेमचंदक धारा रेणुक कथा-साहित्यमे विकसित होइत अछि, एहि संभावनाकेँ नकारल नहि जा सकैत अछि। मुदा, मृत्यु एकटा रचनाधर्मी लेखकक अमित संभावनाकेँ बीचेसँ छोपि लेलक। ई हिन्दी कथा-साहित्यक लेल दुर्भाग्ये मानल जायत।

# कथाक रचना-संसार

हिन्दीमे कथाकेँ लए आइधरि जतेक सार्थक-निरर्थक बहस भेल अछि, भारतीय भाषा सभमे एतेक भरिसके कतहु आर भेल होयत। एहि तुलनामे लेखन आ समीक्षाक क्षेत्रमे उपन्यास उपेक्षित सन लगैत अछि। एहिसँ उत्पन्न होयवला अन्तर्विरोध दिस हमर दृष्टि सहजे चल जाइत अछि। रेणु सदृश सफल उपन्यासकार आ कथाकारमे सेहो ई अन्तर्विरोध क्रमशः प्रकट होइत देखाइत अछि। समकालीन कथा साहित्यक एहि उग्र अन्तर्विरोधक कतिपय कारण पर एहि बहस सँ, प्रकाश पड़बाक संभावना अछि।

"ठुमरीसँ "अगिनखोर" धरि नम्हर मुदा निरनतर विकास क्रममे कथा सभक टोन बदलि जाइत अछि। एकरा लक्षित करबामे कोनो सचेत पाठकेँ दिक्कत नहि होइत अछि। रेणुक कथाक यथार्थ बोध लयकेँ उपन्यास लिखय वला लेखक नहि छथि। इएह कारण थीक जे हुनक बेसी कथ सभक स्वरूप अन्य लेखकसँ भिन्न अछि। हुनक एहि स्वरूपक नकल तँ भेल, मुदा रेणुक व्यापक-संश्लिष्ट यथार्थबोध एहेन कथा सभमे उभरबासँ वंचित रहि गेल। व्यावहारिक समीक्षा लेल हमरा सभकेँ किछु कथा सभक चयन करय पड़त।

"ठुमरीक" समस्त कथा कोनो क्लासिकल अथवा कालजयी रचनाक बदलामे लोग-जीवनक स्वच्छन्दता आ लोच प्रकट करैत अछि। एहि दू अत्यन्त भिन्न कारक तत्वक अवहेलना करैत हम कथाक आलोचनामे किछु नहि जोड़ि पओलहुँ। मुदा, आस्ते आस्ते "अगिनखोर" धरि आबि ई स्वच्छन्दता आ लय बदलि कऽ तनावमे प्रकट होइत अछि। बदलैत जीवनक संदर्भ मे एहिसँ नीक दोसर उदाहरण कम्मे भेटत। प्रेमचन्दक बाद रेणु असगर लेखक छथि, जनिकामे यदि कथा-रस अछि तँ बदलैत यथार्थसँ उत्पन्न तनावक नाटकीयता सेहो।

"ठुमरी" संग्रहक प्रथमे कथा 'रसप्रिया" मे ई दुनू तत्व अपन सभ पर प्रकट होइत अछि। "रसप्रिया" एकटा व्यक्तिक अन्तर्कथा मात्र नहि अछि। ओ एकटा सम्पूर्ण समुदायक संस्थाक अन्त अछि। "मिरदंगिया" एकटा व्यक्ति आर एकटा संस्था अछि। "तोहर आंगुर तँ रसपिरिया बजबैत टेढ़ भेल छह ने ?" आ एहि प्रश्नक संग ओकर सम्पूर्ण अतीत तनिक ठाड़ भए जाइत अछि। इएह जीवंत तनाव कथामे सौंसे व्याप्त अछि।

मोहना एहि प्रश्नसँ ओकर दुखाइत रग पकड़ि लेने अछि। ओकर जी करैत अछि जे ओ बाजि दैक– "हँ बेटा।" मुदा, संबोधन जीभ धरि नहि अबैत अछि, कंठेमे लसकि जाइत अछि। "बहरदार" भए कए बाभनक बेटा केँ ओ बेटा कहत ! परमानपुरक ओ घटना ! मुदा ओ घटना नहि छल, मात्र संकेत छल, वर्ण-जातिक कठोरतासँ उत्पन्न संकेत। मोहना बाभनक बेटा नहि अछि, मुदा ई अपरूप रूप तँ ओही वर्णक भ्रम उत्पन करैत अछि। मनछाया केँ छुबितो डराइत अछि। ई तनावपूर्ण स्थिति कोनो बीतल समयक नहि थीक। ओ तँ आजुक सेहो अछि। वर्तमान पर खसैत अतीतक प्रेत-छाया !

सामुदायिक संस्कृतिक एहि विध्वंसक पीड़ाकेँ मूर्त्त करैत ई दू टा कथा रेणुक भाव-संसारक जीवित प्रतिकृति अछि। परिवर्तन जबरदस्ती भय रहल अछिजे स्वाभाविक नहि। ई परिवर्तन ग्राम समाज पर लादल गेल छैक। ओकर अपन अपेक्षा सभकेँ अनदेखल केने। एहि परिवर्त्तनक दिशाहीनताकेँ "ठेस" क नायक (1) अपन ढंगसँ परिभाषित करैइत अछि अपन जीवित अनुभवक संदर्भमे आ अपन संसारक अगल-बगलक वास्तविकताक ऐंठनक रूपमे। एहि ऐंठन भरल वास्तविकताकेँ रेणु आर तानैत छथि, ओकरा अपन स्थानपर छोड़ि दैत छथि आ एकटा गंभीर सप्रश्नता संग लगा दैत छथि।

मुदा, एहि परिवर्त्तित दुनिया पर रेणुक दृष्टि गड़ल रहैत अछि। सामाजिक वास्तविकताकेँ नव अन्तर्विरोधक भीतर राखि कऽ देखब रेणुक कथात्मक चेष्टाक प्रकृति अछि। एहि विशेषता पर प्रकाश देबा लेल रेणुक जनवादीकरण आवश्यक नहि मानल जायत।" लालपानकी बेगम" मे बदलैइत ग्राम सँबंधक "बुर्जुआनिंग" क एकटा तीव्र अनुभूति अछि। जमीनक बंदोबस्ती किछु गरीब कृषिदास सभ केँ स्वतंत्र किसानक अस्तित्व देने अछि। एहि अस्तित्वक प्रदर्शन भने विडंबना हो मुदा, कतौ ने कत्तौ ई वर्ग-प्रभावक एकटा अनिवार्य हिस्सा सेहो अछि।

गामक जिनगीमे स्त्रीक लेल सामाजिक प्रदर्शन केर एकेटा मंच होइत अछि– मेला। एहि मंचक संग रेणु एकटा कथा जोड़लनि, सामाजिक उत्सरणक कथा। "कुंभक मेलोमे छोटीक बाइ" (बंग महिला) सँ आइ धरि एहि मेला सभ पर अनेको काल-कथा लिखल गेल अछि। बिरजूक मायकेँ पाँच बीघा जमीनक पर्चा भेटल छैक। चारि मन पाटक पाई ओकर इच्छाक संसार केँ परिवर्तित कए देलक अछि। यदि जंगीक कनियाँ के ई सभ अनसोहाँत लगैत अछि तँ लागओ। बिरजूक बाप आब मजूर नहि अछि जे लोक ओकर छोट सन इच्छाक हँसी उड़ाबय। ओ बैलगाड़ी पर बैसि बलरामपुरक नाँच देखऽ जायत।

जंगीक पुतहु ओकरा नव नाम दऽ गेलैक लालपानक बेगम। ई व्यंग्य बिरजूक माय केँ आहत कऽ गेल। एहि तिक्तताक कारण बिरजू पिटायल अछि, चम्पिया पिटायल अछि। मुदा चलू, चम्पियाक मायकेँ आंगन मे नालबला जूताक छाप घोड़ाक टाप सन बाजत। लोक सुनत आ ईर्ष्या करत। गाड़ी अबितहिँ तिक्तता खतम भऽ जाइत अछि आ मोन नव उमंग सँ भरि जाइत अछि। ओकर ध्यान अचक्के मेलाक तैयारी दिस चलि

जाइत अछि। "बिलेक" मे बिरजू पाँचटा शकरकंद सुतले-सुतले खाए जाइत अछि। मोनक समस्त अवसाद समाप्त भऽ गेल छैक। बिरजूक माय मखनी पीसी कैँ हाक दैत अछि आ जंगीक कनियाँ कैँ बजायबो नहि बिसरैत अछि। "लालपानकी बेगमक" साधारण कथ्य अपन संवेदनशीलता मे असाधारण भऽ उठल अछि।

"नीक लोक (अच्छे लोग)" संपतिक संग अधिकारक सामाजिक संबंध केर संदर्भ अछि। ई कथा "लालपानकी बेगमक" अगुलका कड़ी थीक। उजागिर संपतिक संग अधिकारक घोषणा कय पुरुषार्थक रक्षा करैत अछि। घर बसएवा लेल ओकरा कतेक पापड़ बेलय पड़लैक। अपन सीताकैँ पएवा लेल की नहि कयलक ओ! सीता आ संपत्ति–जोरू आ जरके सनातन संबंध! आ जोरूक ई कथा अपन मनोविज्ञानमे कोनो नवता नहि उत्पन्न करैइत अछि, मुदा तनावतँ प्रकट करितहि अछि।

"उजागिरका घर" गैर-सरकारी बस-पड़ावसँ नीक नहि अछि। सीताकैँ जेना एहि भीड़ भरल दुनियामे पुरुषक लेल सुलभ आ निस्सहाय छोड़ि देल गेल अछि। संपत्तिक ई साधारण सहज व्यवस्था यदि सीताकैँ सहबाक छैक तँ फेर अपन इच्छाक अनुसार पुरुष ओ किएक नहि चुनय? धंधा करयवला पुरुष यदि समझौता कऽ सकैत अछि, तँ स्त्रीक लेल तँ ई एकटा नियति भरि अछि। उजागिर धंधा सँ अलग एकटा घरनीक दरजा ओकरा कहिया देलक! एहि लेल यदि चारिटा वबुआनकैँ हँसि-बाजि ओ खुश रखैत अछि तँ एकर अतिरिक्त उपाये की छैक? जखन पहिलुक बेर उजागिरक मोनमे ई अधिकार जगैत अछि तँ सीतोकैँ प्रतीत होइत अछि जे ओ अपन पुरूषक संग अछि, घरनी अछि।

अर्थ-तंत्रक भावनाहीन संसारसँ सीता-उजागिरक घुरनाइ भले नाटकीय सूक्ति हो मुदा ओ हमरा स्पर्श करैत अछि। कसबाक जिनगी आ परिवेशक नाटकीय सजीवतासँ चित्रित करैत रेणुक भावनाक अन्तरालमे आगू बढ़ि जाइत छथि। संपत्तिक लालसा सँ बढ़िकैँ नैसर्गिक अधिकार अछि। गरीबकैँ अधिकारहीन संपत्ति बिडंबने स्वरूप होइत छैक। उजागिर कैँ एहेन संपत्ति नहि चाही। प्रायः एही क्षणक प्रतीक्षा सीताकैँ सेहो छल। एहि नैसर्गिक अधिकारक उत्तेजक क्षणमे आंतरिक लालसा एक भए गेल अछि। अपन अर्थहीन जिनगीमे पहिल बेर हुनका अंतरंग अर्थ प्राप्त भेल अछि। "अच्छे लोगों (नीक लोक)" सँ बचाव एही अर्थक एकटा गंभीर संकेत अछि।

"तीसरी कसम"–नाटक, कथा, गद्य। जीवनक संगीत जेना एकटा घटनाक्रममे प्रवाहित होइत रहैत अछि। थाकल मोनक गीत। ई संगीत अकारण नहि फुटैत अछि, एकटा वाचक विषयक संयोगक संग जनम लैत अछि। हिरामनक ई कथा आत्मनिषेधक उदास क्षणक भीतर गहींर उल्लासपूर्ण सहवासक एकटा ताना-बाना बुनैत अछि। ई एकटा एहेन रागदीप्तिक कथा अछि, जाहि मे जीवनक ढेर प्रताड़ना घुलि जाइत अछि। "तीसरी कसमक" प्रतिबंध सेहो एहि मनोरागकैँ तोड़ि नहि पौलक।

कथामे यदि मानसिक वातावरणक मात्र नाटकीयता रहितैक, तँ भरिसक ओ आर

भारयुक्त भए जइतैक। मुदा, ई मानसिक वातावरण अपन सहज आसंगक कारणेँ सजीव भए गेल। निर्मलक कथा सभ जकाँ ओहिमे कतो कोनो प्रतीकात्मक ओझराहटि नहि अछि-भीतरिया वातावरणक रहस्यमय ताना-बाना नहि होइत अछि। अपन छवि, नाटकीयता आ उदास प्रभावशीलताक दृष्टिसँ ई रेणुक विशिष्ट आ प्रतिनिधि कथा थीक।

अपन अज्ञानता आ सहयोगीक सरलतासँ प्रताड़ित हिरामन तेसर बेर स्वयं प्रतिबंध स्वींकार कय लैत अछि। तेसर किरिया पहिलुक दूटा किरियासँ सर्वथा भिन्न परिस्थितिमे खायल गेल अछि।

पहिलुक संदर्भक किरिया भयावह अछि। नेपाल लय जाइत अन्न पर पुलिसक छापामारी। हिरामन बरद खोलि कँ भगा लऽ जाइत अछि– "चूल भैयन। जान बाँचत तँ एहेन एहेन सग्गड़ गाड़ी ढ़ेर भेटत– एक दू तीन। नौ दू एगारह। आ दोसर किरियाक प्रसंग सेहो कम रोचक नहि। लड़कीक स्कूल लग अगुआरक गलतीसँ बाँसक लदनीबला बैलगाड़ीक बेकाबू भेनाइ एहि संकल्पक पटभूमि पर अछि। हिरामनकेँ एकर स्मृति मात्रसँ कँपकँपी भय जाइत छैक। एहि बेरि सरकसक बाघ-गाड़ी उघिकेँ गाड़ी बनौने छल हिरामन। कोनो बैलगाड़ीवला तैयार नहि होइत छल से हिरामन अपन बरदकेँ बुझौलक– "देख भैया। एहेन मौका फेर हाथ ने लगतहु। अरे, पिजँराक बाघक कोन डर। भावक भाषा जानवरो बुझैत छैक।"

मेला गामक संसारक एकटा सार्वजनिक मंच। नौटंकी एहि मेलाक अंग छी। एहि मेलामे मोनक मीत पाबि हिरामन सभ किछु हेरा जाइत अछि। एहि भीतक संग तँ ओ आर असगर भऽ गेल अछि। मोनकेँ प्रतिबंधक विश्वासँ बेर-बेर बुझयबाक चेष्टा कयने अछि हिरामन-कंपनीक औरत कंपनीमे गेल। आब ओकरासँ कोन लेन देन। मुदा, आनक ई सुख परकीय सुख नहि थीक।

गामक यात्रा-कथा जकाँ कथा चलैत रहैत अछि, इजोरियामे, रौदमे। खुजल एकपरिया जकाँ लीक पर, बाट पर। एहि यात्रामे रस सेहो अछि। ई परीकथा नहि थीक, सरिपहुँ, हिरामनक गाड़ीमे ओकर मीता अछि। पीठसँ निःसृत गंध एहि घटनाक संग ओकर संपूर्ण अस्तित्वकेँ घेरि लैत अछि। इस्स कटहली चम्पा...।

ई इन्द्रिय-बोध ओकर विश्व-बोधक हिस्सा सेहो अछि। हिरामनक विश्वबोध किताबी नहि अछि, ओ तेसर दुनियाक सम्पूर्ण–सम्पूर्ण निरक्षर मे सँ एक अछि। मुदा, आखर तँ ध्वनियोमे अछि, गंध आ स्पर्शमे सेहो। मोनक भाखा तँ एहि सभहक संग-संग प्रकट होइत अछि। ई सम्पूर्ण यात्रा एकटा गंध-स्वर-स्पर्श-संधने तँ छैक। मीताक संग ई यात्रा अदृश्य-स्पर्शक आत्मीयताकेँ जेना मानस-गोचर कय दैत अछि। "पराया सुख" तँ नहि छी ई। आशंकासँ मोन उद्विग्न भय जाइत अछि। कतेक एकांत अछि एहिमे। हिरामन एकरा अपन भीतर बंदी बनयवाक उत्कटतामे यदि स्वयं व्यर्थो भय जाय, तखनहुँ ई सुख अखंड रहत। हिरामनक एहि भावुक बुद्धिमे आत्मदया नहि अछि।

अपन भावनाक एकांतमे हिरामन अपन मीताकेँ दुनियासँ छीनि लैत अछि। एकटा विधुर मोनक अवसाद एहि आत्मीयताक भय घुलि-बहि गेल अछि। दीप्तिमे अवसाद सेहो सहज आ वरेण्य भय जाइत अछि। आ एहि रागदीप्त गीतक संग दृश्यक एकटा प्रवाह कथाकेँ बाहर लए अबैत अछि–मेलाक संसारमे, नौटंकीक संसारमे। गांमक समाजक बहलमान फेर अपन संसारमे घुरि अबैत अछि। लाल मोहर, पलटदास आ घुन्नीरामक संग पुनः परिदृश्य बदलैत अछि। आब आत्मालापक भाखा कचहरीक बोली मे बदलि जाइत अछि–"बेकार मेला-बाजारमे हुज्जत नहि करू" मेलाक संसारमे हिरामन अपन मीतासँ मेलाक भाखामे बाजत की ?

ओकर मीता बजरुआ नहि भय सकैत अछि। ई कल्पनो हिरामन नहि करैत अछि। मुदा, अपन मीताकेँ तँ ओहि व्यापारीसँ छोडाबय पड़त। महुआ घटबारिनकेँ सेहो व्यापारी कीनि नेने अछि। खिस्सा खतम। बैसकोप हजम। बाजार मानव केँ कीनि नेने अछि, आवश्यकतानुसार। मरद गुलाम, श्रमिक-औरत बाजारक वस्तु। कालक दबाबक ई प्रभावकारी चित्र थिक।

"तीसरी कसम" क रोमांस एकटा गंभीर अर्थक प्रतीति सँ हमरा जोड़ैत अछि। कठोर विचारधाराक बाहुपाशमे आबि जे लोक लोक-जीवनक रोमांसकेँ नकारैत अछि हुनका ई कथा बहुत किछु मुक्त कय सकैत अछि। प्रगीत आ नाटकीयताक ई संयोग कथाकेँ एकटा अलग भूमि दैत अछि। नवीन कथा आन्दोलनकेँ भीतर व्यतीत अतीतक अनेको छाया-छवि सभ बड़ मार्मिकतासँ अभिव्यक्त होइत अछि। रेणुक कथात्मक संदर्भमे ई कलात्मक पहिचान आरो उजागर भय जाइत अछि। रिपोर्ताजसँ उपन्यास धरिमे रेणु अपन पहिचान बनौने छथि। रेणुक कथाशक्तिक स्रोतक रूपमे एकरा सभकेँ चीन्ह पड़त।

"आदिम रात्रिकी महक" क संकलित कथा सभमे एकटा आर परिपार्श्व प्रकट होइत अछि। ई अपेक्षाकृत मानसिक रंग-रेखाक संसार अछि, जकर संचालन भावना करैत अछि। एहि कथा सभक अपन परिवेश आ अपन स्वाद अछि। ई संसार हिरामनक नहि, हाराधनक संसार अछि एकटा कलाकारक संसार जाहिमे अनुभवक एकटा जटिल व्यवस्था भेटि जायत। टेबुल, तीन बिंदिया, आदिम रात्रिक महक, आत्मसाक्षी आदि कथा सभ रेणुक सामान्य कथा सभसँ अलग-थलग देखा पड़ैत अछि।

अनेको जटिल अभिप्रायसँ रचित ई कथा सभ कतहु "फेटिश" क आभास दैत अछि, कतहु कलाकारक जीवनक आन्तरिक लय केँ टुटबाक व्यथा प्रकट करैत अछि आ कतहु जीवनक अन्हारक मध्य पसरल आदिम गंधक विस्तार देखबैत अछि। भीतरी प्रदेशक मानवीय आकारकेँ एतय रेणु एकटा वातावरणमे बदलि दैत छथि। "टेबुल" शीर्षक कथा एकटा एहेन स्त्रीक कथा थीक, जे अपन परिवेशमे आक्रांत, अपने संसारमे सीमित भय गेलि अछि। कार्यकारी जीवनमे यातना अछि, जे निरन्तर ओकरा उघार करैत रहैत अछि, ओकर छिलका निकालैत रहैत अछि। जीहक खुजली अछि जे हुनक प्रत्येक

कार्य-कलापकेँ खिस्सा बना दैत अछि। आकर्षण आ उपेक्षाक दोहरा मारिसँ दाबल अछि मिस दूर्वादास।

लोक ओकरा विषय मे धारणा रखैत, अछि, विचित्र-विचित्र धारणा। ओ ओहि सभसँ अपरिचित नहि अछि। आ एहि समस्त दृष्टिसँ स्वयंकेँ बचाकऽदूर्वा (दुर्वा) दास ओहि "फेटिश" सँ अपन कवच तैयार कयलनि अछि जे निर्जीव रहितो ओकर सम्पूर्ण अस्तित्व आ आत्मसंघर्षक साक्षी अछि। ई टेबुल नहि, दूर्वाक कवच थीक, ओकर घर थीक, ओकर अंतरंग संगी थीक। वैह ओकर एकमात्र संगी अछि। दीर्घ कार्यकारी जीवन मे ओकरा अपवादक अतिरिक्त कतहु कोनो आत्मीयता नहि भेटलैक। एककेँ बाद एक उन्नतिक सीढ़ी चढ़ितो दूर्वाकेँ अपन स्थानसँ प्रेम छैक, अंतरंग सँ लागब छैक। नव परिवेशमे आबि जेना ओ अपनहि अतीतसँ कटल जा रहल छलि। नहि ओ एहि नव चेम्बरमे पुराने टेबुल राखत। अतीतक ई आसंग ओ नहि छोड़ि सकैछ। मैनेजरकेँ आश्चर्य होइछ। ओ दूर्वाक एहि सनककेँ अपन कोनो मनोवैज्ञानिक ज्ञानसँ नहि जोड़ि पबैत अछि। आ दूर्वाकेँ लगैछ जे नव टेबुल लग बैसि जेना ओ कोनो आनक समक्ष बैसल हो। असंभव...।

नबका बड़ा बाबू अनुरंजन ओकर परिचित अछि। दूनू संगे-संग ट्रेनिंग लेने छथि। ओहि क्रममे ओ एक दोसराक लाग सेहो आयलाह-सहज भावसँ, मित्र भावसँ। मुदा नहि, अपन कवच ओ नहि छोड़ि सकैत अछि। अनुरंजनकेँ आश्चर्य होइत अछि, मुदा असगर स्त्रीक मनोविज्ञानसँ ओ कनेक परिचित अछि। दूर्वा अतीतक समस्त स्पर्शकेँ पोछि अलग कय देत, मुदा अपन कवच नहि छोड़त। लोक की जानय गेल जे मनुखक दरद सँ पैघ घरक दरद किएक होइत अछि।

दूर्वाक चरित्र पर केओ आंगुर नहि उठबैत अछि, किन्तु इएह तँ लोकक निरंतर रुचिक कारण सेहो अछि। चरित्रकेँ लए कऽ बेसी दिन धरि लोक आगि नई उठा सकैत अछि। समस्त रहस्य तँ एहि स्त्रीक आत्म-केन्द्रितामे अछि। दूर्वाक निविड़ मुदा विवश आत्केन्द्रिताकेँ उजागर करबाक लेल पूर्ण कथामे एकटा नाटकीय घटना-क्रम पसारल गेल अछि। आ एहि कवचक बिना दूर्वा कतेक निरीह छलीह, कतेक नग्न ! ओकर अस्वस्थ भेनाइ एकटा चर्चाक विषय बनि जाइत अछि। काठक चीज लेल मोह आ मानवसँ एहेन विरक्ति। सरिपहुँ विचित्र अछि दूर्वादास ! आ अकरा लेल यदि अनुरंजन यातना भोगैत अछि तँ ओ की कय सकैत छलीह। "फेटिश" वस्तु-रति नहि, टेबुल-वस्तु नहि, इएह तँ ओकर अंसन्त्र अछि जे ओकरा परिवेशक उन्मादसँ बचवैत अछि, इएह तँ शरणदाता थीक।

असगर स्त्रीक मानसिक झऽखक ई कथा कतहु गहीरमे एकटा उत्तप्त-अंतरंग विवृति सेहो अछि। मनुष्यक भाव-संसार सरिपहुँ बड़ जटिल अछि।

"तीन बिंदिया" विशुद्ध रेणु मार्का कथा अछि। मुदा ओ अपन परिवेशमे "तीसरी कसमक" संसारसँ भिन्न अछि। "रसप्रिया"क सहरी संस्करण। गामक स्वच्छंदताकेँ छोड़ि

कठोर शास्त्रीयता कोना स्रोतकेँ सुखा दैत अछि, एकर मार्मिक अन्यापदेश एहि कथामे कयल गेल अछि। "तीन बिंदिया" वस्तुतः एकटा रूपके अछि। मूल नाद आ सहायक नादसँ बनय वला एहि गायकी कथामे एकटा कलाकारक आत्माक संघर्ष सेहो निहित अछि। एहि संघर्षमे मीताली दासकेँ शिल्पी हाराधन मोन पड़ैत अछि।

हाराधन कलाक संसारसँ कतेक अनचीन्हार भए गेल अछि। स्वाभाविक अछि जे ओकर सधल स्वरमे कतहुँसँ एकटा झुनझुनी, कर्कशता उत्पन्न भय गेल अछि। काल ओकर स्वरमे ई कर्कशता भरि देने अछि। कथा हाराधनक संग हमरा बृहत्तर अतीतमे लय जाइत अछि-कलकत्ता, नेपाल, मधुमाराक जंगल आ फेर ग्लैडक ओहि अंतरंग वातावरणमे जतय कला-संगीतक एकटा भरल पूरल वातावरण अछि आ एहि वातावरणमे मूलरागक संग सहायक रागिनी सभक आरोही-स्वर। आंचलिक रागिनी सभक मीताली दास उपेक्षा कयने छलीह। तखनहि एहि सहायक रागिनी सभसँ ओकर स्वर-स्रोत जड़ भय गेल। मीताली ओकरासँ सीख लय लेने छलीह। गीतसँ गंधक परिवेशन कलाक साधना सेहो अछि आ कलाक उत्कर्ष सेहो।

मीतालीक ई गंध-परिवेश संगीतक आत्मासँ मूर्त्त भेल अछि।मूलनादसँ नौगुना ऊँचाई पर उत्पन्न सहायक नाद। जनगणक पगध्वनि सुनबैत ई गीत-वर्षा जेना मीतालीक मोन-प्राणकेँ भिजा कऽ छोड़ि देत। साधनाक ई कथा एकटा संघर्षक कथा सेहो अछि, जड़ शास्त्रीयताक विरुद्ध मोनक स्वच्छन्द नाद। "तीन बिंदिया" हिन्दीमे अपना ढंगक असगर कथा अछि।

"आत्म साक्षी" रेणुक कथा सभमे एकटा विशेष महत्वक अपेक्षासँ स्वतंत्र अछि। वस्तुतः ओ मात्र पार्टी-विभाजनक व्यथा कथा नहि बनि, एकटा विश्वासी कार्यकर्ताक उपराम होयबाक दुःखक कथा नहि बनि, मजदूर वर्गक हिरावलक आत्मविभाजनक पीड़ाक ऐतिहासिक कथा थीक। एहि कथाक गंभीर व्यथाक संबंध स्वयं ओहि पार्टीक कार्यकर्तासँ अछिए, समस्त मानवीय भविष्यसँ सेहो अछि। एकटा साधारण सन गमार पार्टी कार्यकर्ताक माध्यमसँ ओ भारतीय वामपंथी कम्युनिस्ट राजनीतिक गंभीर अन्तर्विरोधकेँ उजागर करैत अछि। ओकर सरल रेखांकन हमरा सभकेँ कतहुसँ सरलीकृत नहि लगैत अछि। एहि कथाक प्रवाहे अछि, जे एकटा पात्रक भीतरसँ प्रवाहित होइत जाइत छैक। एहेन कथा रेणु फेर नहि लिखि सकलाह। "अगिनखोर" सेहो एहि सरल रेखांकनक कलाक उच्चताकेँ प्राप्त नहि कय सकल।

कथा सभ पर किछु आर लिखबाक चाही, मुदा एकटा छोट विनिबंधक सीमा अछि आ एहि कारण चाहितो किछु अन्य कथासँ विरत होमय पड़ि रहल अछि।

# नाटकीयता आ प्रगीतक योगपद

रेणुक बृहत्तर उपन्यास सभक कथा-शिल्पमे बड़ आकर्षण अछि। ई साँच अछि जे बंगलाक उपन्यास सभमे एहि कथा-शिल्पक प्रयोग एकाधे बेर भेल अछि। हिन्दीमे नाटकीयता आ प्रगीतात्मकताकेँ प्रायः योगपदक रूपमे उपयोगमे नहि आनल गेल अछि आ इएह कारण थीक जे हिन्दी पाठकेँ "मैला आंचल" आ "परती:परिकथा" मे अतीव आकर्षण भेटल। किछु लोक एकरा यथार्थवादक नव-शिल्प सेहो मानैत छथि। यथार्थवादक एहि शिल्पक संबंधमे पहिनहु संकेतमे किछु बात कहल गेल अछि। ओहि संदर्भकेँ दोहरेनाइ आवश्यक नहि। एहि कथा-शिल्पक किछु आर विशेषता सेहो अछि जकरा अलगसँ लक्षित कयनाइ आवश्यक। एहि विशेषता सभमे कथा-वाचनक अनेक विधता सेहो सामिल अछि। सामान्यतः कथा अन्य पुरुष वा बेसी आत्मीय स्थितिमे प्रथम पुरुषमे कहल जाइत अछि। भारतीय कथा साहित्यमे –कथा आ आख्यायिकामे– ई शिल्प बड़ पुरान अछि। मुदा, कथावाचनमे बदलैत स्वरक संयोजन एकटा विशिष्टता अछि। रेणुक कथा-शिल्पमे स्वरक वैविध्यक संगे दृश्यक परिवर्तित परियोजना सेहो अछि।

"मैला आंचल" मे दृश्यक परिवर्तन या दृश्य-प्रवाहमे परिवर्तनक लेल प्रगीत पद्धतिमे कथा सभक संयोजन कय देल गेल अछि। ई कथा सभ मूल कथा या वर्तमान कथाक पृष्ठभूमिमे भावधारा सभक निर्माण करैत अछि– कखनहुँ एकटा वातावरण जकाँ तँ कखनहुँ एकटा निजंधर सन। एहि प्रकारेँ अतीत आ वर्त्तमान, बाहर आ भीतरक योगपदिक संक्रमण कथामे रस आ प्रवाह उत्पन्न करैत अछि। एहिसँ घटना-बाहुल्यकेँ विश्राम भेटैत छैक आ घटना सभमे बहैत पाठक अनचोके रूकि कोनो बिसरल कड़ी सँ जुड़ि जाइत अछि। ई प्रभावशाली आन्तर्य कथामे बाधक नहि बनैत छैक।

"मैला आँचलक" विशेषता ई थीक जे एहिमे प्रयुक्त अन्तर्कथा सभ स्वतंत्र नहि अछि, संपूर्ण वर्तमान सँ ओकर जीवित संबंध अछि। वस्तुतः ओ अतीतक निरंतरता केँ सार्थक करैत अछि। कोनो परिवर्तनशील मुदा, परंपरित समाजक लेल ई दोहरापन एकटा एहेन वास्तविकता अछि जाहिमे विरोधक ठीक-ठीक व्याख्या होइत अछि। "मैला आँचल"

परिवर्तित भारतीय ग्रामांचलक कथा सेहो थीक आ व्यापक अर्थमे सम्पूर्ण भारतीय वास्तविकताक बदलैत परिदृश्यक कथा सेहो । एहेन दोहरा वास्तविकताक लेल यदि कोनो योग-पदक प्रयोग कयल जाइत अछि तँ ई एकटा अत्यन्त प्रभावशाली पद्धति सिद्ध होयत ।

नाटकीयताक प्रयोग बहुधा घटित होइत व्यापारिकता लेल कयल जाइत अछि । वर्त्तमानक क्रिया-कलाप सार्थक दृश्यमे संयोजित भय प्रभावशाली बनि जाइत छैक । मुदा, सभटा परिस्थिति घटनाक रूपमे व्यक्त नहि होइत अछि । बहुधा परिस्थिति बनैत-बिगड़ैत रहैत अछि मुदा, घटित किछु नहि होइत अछि । घटना एहेन नाम ओकरा नहि देल जा सकैछ । अतीतक ढेर घटना स्मृतिमे मात्र आभास जकाँ शेष रहि जाइत अछि । एहि आभासकेँ दृश्यमे संयोजित करबाक अपेक्षा गीतात्मक कथा सभमे प्रकट कयनाइ बेसी प्रभाव उत्पन्न करैत अछि ।

स्पष्ट अछि जे नाटकीय तत्त्व आ गीतात्मक तत्वमे एहि अन्तरकेँ ध्यानमे राखिए कऽ भेद कयल जाइत अछि । मुदा, जखन एकर प्रयोग एक संग, सह-अस्तित्वक स्थितिमे कयल जाय तँ ओकर किछु स्वतंत्र अपेक्षा सेहो होइत अछि । 'मैला आँचल'' मे नाटकीय आ प्रगीतात्मक उपादानक ई योगपदिक उपयोग यथार्थकेँ– बहुसंरचनात्मक यथार्थकेँ ठीक-ठीक व्यक्त करवामे सर्वथा समर्थ अछि । ई कथा-शिल्पक कलात्मक उपयोगे मानल जायत ।

बहुसंरचनात्मक सामाजिक आर्थिक स्वरूप, प्राचीन विचार आ रूढ़ सामाजिक संस्थाक जीवित कार्यकारी अंश, पुरातन-परंपरागत संबंधक विशाल क्षेत्र एवं एहि सभसँ प्रतिमुख आधुनिकताकेँ हम यदि भारतीय वास्तविकताक जटिल समकालीनता कही तँ एकरा व्यक्त करबा लेल बहुसंरचनात्मक शिल्पेक-उपयोग कयल जा सकैछ । रेणुक शिल्प एहि अनिवार्यताक कारण बहुसंरचनात्मक अछि । ओहिमे नाटक आ प्रगीतक संरचनाक संगे निजंधर, लोक कथा आ आधुनिक रिपोर्ताज सभक व्यापक संरचना देखल जा सकैत अछि । एहि सभक प्रयोग संश्लिष्ट रूपमे आर अपेक्षित कौशलसँ कयल गेल अछि । निश्चित रूपमे कथा साहित्यमे रेणुक ई अपन उपलब्धि थीक ।

हिन्दीमे रेणुक कथा-शिल्प बड़ टटका अछि । ओकर ताजगी कखनहु काल हुनक कथात्मक उपलब्धिक दोसर पक्षकेँ दबा दैत अछि । ओकर नाटकीयता कतहु-कतहु अनियंत्रित उठा-पटकक आभास दैत अछि, आ पात्रकेँ अपन सार्थक परिवेशसँ स्वतंत्र करैत बुझि पड़ैत अछि । ओकर नाटकीयताक एहि ''बहाव'' दिस हमरालोकनिक दृष्टि पहिलुक बेर नहि जाइत अछि । एकसँ बेसी बेर, आ समयक अन्तराल दने पढ़बा पर एकर अनुभूति होइत अछि । आ तखन ओ ओतेक प्रभावशाली नहि बुझि पड़ैत अछि । ''परतीःपरिकथा'' मे ''मैला आँचलक'' अपेक्षा ई दोख कम अछि, किएक सँ ओहिमे नाटकीयतासँ बेसी गीत-कथाक उपयोग कयल गेल अछि । मुदा, एहि सीमा सभक उपरान्तो हुनक कथा-शिल्पक पहिचान फराक अछि ।ओ अपन कथात्मक गरिमा सिद्ध करैत अछि ।

रेणुक कथा-शिल्पक मूल विशेषता ओकर आडंबरहीनता आ सहजतेटा नहि ओकर सप्राणता ओ जातीयता अछि। एहि अर्थमे ओ हिन्दी कथा-शिल्पक विशिष्ट शिल्पी छथि। चर्चा आ गप्प सभक सार्थक संगतिमे राखि ओ ओकरा सभकेँ अर्थ देलन्हि। ई लतीफा ओ चुटुक्का सँ उपरक चीज थीक। इएह हुनक कलात्मक सार्थकता अछि। जेँ कि ई चर्चा आ प्रसंग एकटा ग्रामीण समाजक अविकल विशेषता थीक, एहि लेल ओकर उपयोग वास्तविकताकेँ सार्थकता प्रदान करबाक लेल कयल गेल अछि– वास्तविकताक संगति-असंगति केँ चिन्हबामे एहिसँ मदति भेटैत छैक। तथ्यक संग कनके स्वच्छन्दता उपयोग प्रत्येक कथा-लेखक करैत अछि।

जन-कला सभक शिल्पक उपयोग रेणु सभसँ बेसी कयने छथि, मुदा नागरजी जकाँ सर्वत्र अपन शिल्प पर हुनक नियंत्रण एक समान नहि अछि। रेणु अतिरंजनाक शिल्पी सेहो छथि, ई हमरा नहि बिसरबाक चाही, मुदा ई अतिरंजना सभ अपन परिवेशसँ सहज संगत भय जाइत अछि, किएक तँ ओहि मे जातीय जीवनक तत्त्व मिझरोयल अछि आ बिडम्बनापूर्ण तत्त्व सेहो। ओ ऐतिहासिक तत्त्वक संग देवदूत जकाँ सामने नहि अबैत छथि, तँ एहिसँ ई सिद्ध होइत अछि जे ओ साहित्यक मठाधीशसँ स्वयं केँ फराक करय चाहैत छलाह। ओने तँ भविष्यवाणी करैत छथि आ ने भविष्यवाणी सभकेँ कलात्मक गरिमे दैत छथि। ओ अपन कथा-शिल्पक लेल कोनो दाबी नहि ठोकैत छथि।

शिल्पक सफलता ओकर टटकापन थिक। यदि बेर-बेर पढ़लोसँ ओकर पाठ हमरा उबा नहि दैत अछि, खौंझा नहि दैत अछि आ ने आगू बढ़वासँ रोकिते अछि तँ एकरा शिल्पक मौलिक सफलता मानबाक चाही। रेणु ओहि कथा-शिल्पी सभमे नहि छथि जे शिल्पकेँ प्रयोगक विषय मानैत छथि। एहि अर्थमे ओ तथाकथित आधुनिक कथा-शिल्पी सभसँ निश्चित रूपसँ अलग छथि। ई आन बात थीक जे निर्मल वर्मा हुनक कथा शिल्पक प्रशंसा करैत थकैत नहि छथि। ई शिल्प अपन सजातीयतामे अपने सामर्थ्य प्रकट करैत अछि। कथासँ कथाक साहचर्य संबंध– अन्तर्कथा सभक ई आवर्त्त सरिपहुँ नाटक आ प्रगीतक योगपदिक शिल्पकेँ रसपूर्ण बना दैत अछि। अतीत आ वर्त्तमानक ई सह-अस्तित्व मात्र प्रवाह जकाँ निरन्तर आ अखंड नहि अछि, परंच एहि योगपदसँ आरोही-अवरोही संगीत सेहो बनैत अछि– जीवनक लय, एकटा देशक भीतरी कालक लय। परानपुर कतेक रंग रूपमे हमरा सामने अबैत अछि। करीब दू सय बरिसक गाम अपन परिवर्तित छवि मे सहसा साकार बनि जाइत अछि। मेरीगंज बड़ पुरान नहि अछि, मुदा एतेक पुरान तँ अवश्ये अछि जे ओकरो एकटा इतिहास हो। एहि इतिहासक संग वर्तमान जीवनक हलचलक, संयोजन आ फेर ओकर अनुभवक ताना-बाना क वास्तविक काल कथा सेहो अछि। एहि काल-कथाकेँ विवरणेमे लेखक पुष्ट कयने छथि मुदा ई विवरण मात्र घटना, चरित्र आ तथ्य सभक नहि अछि, मानवीय समुदाय विश्वास आ परिघटना सभक सेहो

अछि। कालक बिम्ब कतहु सपाट अछि, कतहु दृश्य अछि तँ कतहु ई बिम्ब टेढ़-मेढ़, जटिल आ आन्तरिक गहराइमे प्रतिबिम्बित होमएवला सेहो अछि।

दृश्य, बिम्ब, चित्र सभक एहेन प्रवाहपूर्ण लय निश्चित रूपसँ हमरा लुब्ध कय लैत अछि, अभिभूत कय लैत अछि। ओकर छविमयता आश्चर्यजनक अछि। मुदा, एहिसँ जीवनक दैनंदिन तानी-भरनी क्षत नहि होइत अछि, अपितु समृद्धे होइछ। एकर कवित्व पूर्णता आवाचकेँ वाचक बनबैछ–भाव रूपसँ समृद्ध करैछ। पुनः नाटकीयता ओहिमे प्राण-प्रतिष्ठा करैत बूझि पड़ैछ।

"मैला आँचल" मे नाटकीयता कोनो आत्मचित्रकेँ पूर्ण करबा लेल नहि अछि–ओ एकटा ग्राम समुदायक जीवनकेँ पूर्ण करैछ। "मैला आँचलक" दृश्यावली परिघटना सभसँ पूर्ण होइछ। उपन्यास एकटा उत्पातक दृश्यसँ आरंभ होइछ– यादव टोलीक लोक बलदेव कें बान्हि कऽ लेने आबि रहल अछि। आ पृष्ठभूमिमे सन् ४२क आतंककारी मानसिकता अछि। ई साँच अछि जे एहि नाटकीयतामे जनता, सन् ४२ क जनता क अवमानना नुकायल अछि, मुदा आतंकक मानसिकताकेँ अनठायल नहि जा सकैछ। गामक लोकक मानसमे मलेटरी आर सुराजक ई सह संचरणक एकटा परिघटनाक अवशेष तँ अछिए ...।

आ, एकर बाद गामक कवित्वपूर्ण विवरण, स्मृति-कथा सभमे लटपटायल आंचलिक विवरण, की कम रसपूर्ण अछि! मेरीक कथा बिना मेरी गंजक कथा कोना पूर्ण होइत! द्विरागमनक कऽ आयलि कनिया कें बर कोठी देखवैत अछि, साभिमान। कोठी नहि अछि तँ की भेल, जनमानसमे कोठी ओ मेरी तँ एखन जीवित अछि– जीवित अंग जकाँ। ओकरा ढेर मानसिक-भावात्मक आसंगक अपेक्षा नहि अछि। गाममे ई अतीत जीवित अछि, प्रत्यक्ष अछि, विश्वास-प्रत्यक्ष। आ मेरीगंजक विवरण सेहो कतेक रमणीक अछि–लोकक अंग अछि मेरीगंज। गाम नहि, एकटा संपूर्ण अंचल हमर आँखिक समक्ष अपन छविक संग साकार भय रहल अछि। कल्पनाशील मोनकेँ तँ एकटा संपूर्ण परिदृश्य गोचर भय जाइत अछि। बन्ध्या धरती, विशाल अंचल आ ई तड़बोन्ना। बालुचर सभक क्षेत्र, मुदा एकटा स्पन्दित जीवनक स्पर्शसँ भरल-पूरल।

ई तँ परिदृश्य अछि, एकर भीतर दृश्य बदलैत रहत। देश आ कालक छवि सभ समस्त क्रिया-कलापक संग साकार सक्रिय होइत रहत। गाम एहि परिदृश्यमे आओरो गोचर होमय लगैछ। आधुनिक भारतक गाम समकालीन गामक ई समकालीनता कनेक पसरल अछि– सहर जकाँ एकदम कालमे निबद्ध नहि, देसक संग घिसियाइत समकालीनता। मुदा, ओ अपन कार्य-कलापोसँ वंचित नहि अछि।

एकटा आर दृश्य समक्ष अबैत अछि, गामक मठ केर। अपन छाया-छवि सभमे एकदम मृत नहि अछि ई दृश्य। महंथ, चेला रामदास आ कोठारिन (लक्ष्मी) क ई संसार गामेक एकटा हिस्सा थीक, मुदा गामसँ अलग। अपना आपमे एकटा मुनल-बान्हल संसार।

मुदा, सभ एहि संसारक दरबज्जाकेँ खटखटा रहल अछि। ओकर स्वर बड़ आतंककारी अछि। मठक संसारसँ मेरीगंजक संसारमे कथा घीसा जाइछ। प्रवाह बनल रहैछ। दृश्य सहचर होइत रहैछ। दृश्यक ई सह-संचरण सरिपहुँ "मैला आंचल' मे अत्यन्त नाटकीय घटना क्रम सभसँ जुड़ैत चलैत अछि। लगैत अछि फिलिम जकाँ बिनु परदा खसौनहि दृश्य बदलि रहल हो।

दृश्य आ दृश्यक बीच गीतक कोनो बिसरल कड़ी जुड़ि जाइछ योगपद–योगपद बनल रहि जाइछ।

की कथावाचकताक प्रवाहमे कोनो व्याघात नहि होइछ ? कतेक आँखिक देखल ई कथा। प्रत्येक पात्रक चेतनामे जेना एक्के कथा बुनल जाइछ, प्रत्येक आँखि एके कथा केँ प्रत्यक्ष करैछ। बालदेव, लक्ष्मी कोठारिन, कमली, डाक्टर, बामनदास। सभसँ एके कथाक अर्थ बदलैछ, विकसित होइछ। मुदा, मर्म जहिनाक तहिना बनल रहैछ। हजार आँखिसँ देखल गेल ग्रामांचल एहि कथामे एतेक समृद्ध अछि जे एकटा कथा वाचकक स्वर ओकरा साकार नहि कय सकैत अछि। कथावाचक अदृश्य बनल रहैछ, परकाया प्रवेश करैत रहैछ। प्रत्येक आँखिसँ वैह देखैछ, मुदा देखल मर्मकेँ, अर्थकेँ स्वतंत्रता सेहो दैत अछि। कथावाचक कार्यकुशल अछि। ओकरामे अपूर्व क्षमता छैक। अपन आँखिकेँ हजार आँखिमे बदलवाक क्षमता अछि ओकरामे। सहस्राक्ष।

"मैला आंचल" मे तेसर दुनिवाक एकटा संपूर्ण कथानक नुकायल अछि। आंचलिकता तँ मात्र परिदृश्य अछि, परिघटना सभ अपन विस्तारमे ऐतिहासिक अर्थ रखैछ। एकटा अभावग्रस्त उपमहाद्वीपक सम्पूर्ण पीड़ा, ओकर संघर्ष ओहिमे साकार भेल अछि– ई तँ नहि कहल जा सकैछ। मुदा, ओहिमे बहुत किछु एहेन अछि जे बीसम सदीक विश्वक क्रांतिककारी प्रक्रियासँ जुड़ल अछि। राष्ट्रीय मुक्तिक पृष्ठभूमिमे ई कथा नव भारतक जनमक पीड़ा भरल कथा नहि थीक की ! क्षेत्रीय असंतुलनक तत्त्व एहिमे अछि, मुदा हुनक अस्तित्वे तँ एहि कथाकेँ वास्तविक बनवैछ। एकटा दीर्घ आ विस्तृत आंचलिकतामे जनम लैत नव जिनगी तँ कोखहिमे असंभव आकार प्राप्त कय लेने अछि। एकर कथा कहबा लेल "वाचकताक" विस्तार चाही। एकर वाचकता एकहरा नहि भय सकैछ। एहि कारणेँ "मैला आँचल"क बाचकतामे नाटकीय वैविध्य अछि।

एकर कथामे अनेको संवादी स्वर अछि। शुक-शुकी संवाद जकाँ एकस्वरता नहि अछि। मध्ययुगीन कथावाचनक नाटकीय पद्धति एहि उपन्यासमे आबि खूब समृद्ध भय गेल अछि। एहिसँ काल-संदर्भ आर समृद्ध भेल अछि। कलाक कोनो तेसर आँखिसँ ई कथा प्रत्यक्ष कयल गेल रहितैक तँ प्रायः हलचलसँ भरल ई विश्व साकार नहि भय पबितैक। तखन "नदी के द्वीप" बनि जाइत। तखन एकटा त्रिकोण बनैत-बालदेव-लक्ष्मी, डाक्टर-कमली, कालीचरण-मास्टरनीजी। आ हुनका घेरवा लेल एकटा वृत्त बनाओल जाय। वृत्त मात्र तीने टा बिन्दु पर कथा केँ स्पर्श करितैक शेष स्पर्शहीन रहि जाइत। मुदा, "मैला

आंचल'' तँ एकटा परिवृत्त थीक-केन्द्रसँ पसरैत, प्रत्येक बिंदुकेँ एकटा वृत्तमे आयत्त करैत आ पुनः अगिला चक्रक क्रममे विकसित होइत। तखन ''मैला आंचल'' कोनो फिल्मक पट-कथा जकाँ सपाट आ अर्थहीन बनि जाइत।

कथावाचक अपन गुरूतर कर्तव्य एहि उपन्यासमे निबमाहने छथि। संवादी स्वरक अनेकतासँ एहि उपन्यासमे हल्ला-गुल्ला नहि मचैत अछि। कोनो स्वर अनसुनल नहि रहि जाइछ, कोनो स्वर पर कोनो आन स्वर चढ़ि नहि जाइछ। विवादी स्वरसँ सेहो कथा जनरवमे नहि हेरा जाइछ। कथावाचनक ई पद्धति महाकाव्यात्मक उपन्यासक लेल अतीव कार्यकारी पद्धति थीक-एकरा सभ क्यों स्वीकारलन्हि। एकर सभ स्वर मौलिक आ समान रूपसँ गोचर अछि। सभक अपन सार्थकता अछि।

बालदेव कोन दृष्टिसँ घटनाक्रमकेँ प्रत्यक्ष कय रहल अछि। एकटा राष्ट्रीय मुक्तिक सामान्य गमार सेनानी, जकरा स्वतंत्रताक बाद राजनीतिक परिस्थिति मूलधारासँ काटि कऽ अलग कय देने अछि। तैयो ओकरामे दृढ़ता अछि। आब ओ आनक बोली नहि बाजि सकत। समयक बोली बजनाइ ओ नहि सीखलक। बेसी सँ बेसी ओ चुप भऽ सकैछ। मुदा, प्रत्येक स्थितिमे ओ चुप रहत, एकर कोनो गारंटी नहि अछि। ओ लाचार अछि, पराजित नहि। अपराजेय विवशता ओकरा संग सत्य भऽ जाइत अछि। बलदेवक बिना ई कथा आधाररहित भय जाइत। ओकर स्वरक अपन सार्थकता अछि। बालदेव आ बामनदास एक्के ऐतिहासिक वास्तविकताकेँ अपन-अपन दृष्टिसँ मूर्त्त करैत छथि।

बालदेव सामान्य मानव अछि। तेसर-चारिम दशकक लघुमानव। साधारणक प्रतिष्ठाक प्रतीक चरित्र। एहि चरित्रक दृष्टिक, कथामे ओकर हिस्सेदारीक अपन महत्त्व आ अर्थ अछि। बालदेव राजनीतिक विभेदीकरणक सिकार ओतेक नहि अछि, जतबा अपनहि राजनीतिक अवसरवादसँ विवश अछि। ओकर पीड़ा, स्वतंत्रताक सपनाक विवश होमक पीड़ा थीक। ओकर दृष्टि कथाकेँ एकटा भौतिक ऐतिहासिक आधार दैत अछि। बालदेवक पीड़ा ई नहि जे इतिहास ओकर इच्छानुसार निर्णीत नहि भेल प्रत्युत ई अछि जे लाखो करोड़ो जनगणक इच्छानुसार निर्णीत नहि भेल। कथामे ई पीड़ा अत्यन्त स्वरित अछि। गामसँ कटल-मठक एकांतमे आत्मसंघर्ष करैत बालदेव अपन दृष्टिसँ इतिहासक एहि सम्पूर्ण प्रक्रमकेँ प्रत्यक्ष करैछ।

आ बामनदास ! असगर, अपराजित स्वर ! बड़ बेसी सवाक् नहि, मुदा, अत्यन्त वेदनासँ भरल। कोनो दुःख भरल गीतक धुन जकाँ मंद, तरल मुदा दृढ़। बामनकेँ स्वयं अपन आँखि अछि। अन्हारमे ओ स्वयं भीतरी आँखि खोलि देखय चाहैछ। महात्माजीक विश्वासकेँ अपनाकय अन्हारमे आँखि साधैत अछि। चुन्नी गोसाईं पार्टीसँ चलि गेल-एकटा दर्दक दाहसँ संतप्त स्वर। 'गंगारे जमुनमाक धार, भारतमाता रोय रहीं।'

भारतमाता एखनहुँ कानि रहल अछि बालदेव ! कतेक व्यथा अछि एहि स्वरमे ! कतेक गंभीर अछि। ओकरा जीवित इतिहास मोन अछि। अपन क्षेत्रक इतिहास। परन्तु

अपनहु तँ सम्पूर्ण देशक इतिहासक एकटा अंग अछि ! बिलैंती कपड़ाक पिकेटिनक दिन ओकरा मोन पड़ैक। भोलंटियर सभकेँ मारयबला आ जेलक खर्च देमएवला सागरमल आइ नरपतनगर थाना काँग्रेसक सभापति अछि। स्मृति आ स्मृति ! स्मृति शेष घटना-सभक प्रवाहमे धँसैत वामनदास उदास रहैत अछि। गांधीजी ओकरा बजंबैत छलथिन– भगवान ! आ वैह उदास अछि– ओकर स्वर उदासीमे डूबल अछि। कथामे ई स्वर सभ सँ बेसी प्रभावकारी अछि। ई स्वर नाटकीय नहि अछि, अपन भावनामे प्रगीतात्मक अछि। परन्तु नाटकीय पर उतरि जाय तँ ओ अपराजेयताक स्वर बनि जाइछ।

वामनदास कथाक एकटा आनुषंगिक पात्र अछि। मुदा इतिहासक केन्द्रसँ ओकरा विचलित कयनाइ की कम महत्वपूर्ण मानल जायत ? ऊपरी दृष्टिकेँ भेदि कथाक आत्मातककेँ चुनौती देमएवला एहि स्वरमे अपूर्व दृढ़ता अछि। सन्' ३२क कार्यकर्त्ता, सन् ४२ क अपराजेय नायक, सन् ४७ मे एतेक असगर कोना भय गेल, एतेक लाचार ! कथाक योगपदमे ओकर एकटा स्वर आर जुड़ि गेल। कहियो ई अन्तरालापमे हेरा जाइछ। अपनहिसँ संघर्स करैत वामनदास संवादियो अछि आ विवादी सेहो। ओकर प्रत्याख्यान सेहो एकटा काल-कथा अछि। भारतीय इतिहासक सभसँ निकटतम काल कथा जकर त्रासदी आबयवला तीन पीढ़ी सहने अछि।

सीताराम ! सीताराम ! स्वर पाठकक क्षणभरि कानमे गुंजैत रहैछ। अनुगूँज सेहो ओतबे प्रत्यक्ष अछि। सरस्वती देवी क्षणभरि लेल ओकरा अनजानेमे मार्गभ्रष्ट कय देने छलीह। गांधीजीक फोटो ओकर रक्षा कयलक ! वामनदास व्रत लैत अछि, आत्मशुद्धि– "भगवानेर व्रत भंग हउवा असंभव !" आभारानी केँ भगवान् मोन पड़ैत छथि, मुदा, राज्य सत्ताकेँ की भय गेल अछि ? ओ एहि भगवान्केँ सिंहासनसँ उठा कतय फेकि देलक। वामनदासकेँ अपन अवहेलाक दुःख नहि अछि ! ओकर स्वरमे तँ देश-प्रेमक पीड़ा भरल आत्मा कुहरि रहल अछि। वामनदासक स्वर अपराजेय, मुदा विवश, वामनदासक दृष्टि–घटनाक्रमक मर्मकेँ उघारयवला दृष्टि !

डॉ. प्रशान्त ! संभ्रांत, शिष्ट, युवा आ बाहरी ! ओ एहि कथा-पटक नायक अछि की ? नहि ओ सेहो आन लोक जकाँ एकटा स्वतंत्र इकाई अछि ! बाहरी रहितो कथामे ओकर अंतरंग भूमिका अछि। ओ सम्पूर्ण कथाक संग जुड़ल पात्र अछि। ओ वाचक नहि लेखक अछि। अपन डायरीमे ओ "मैला आंचल"क कथाक एकटा अंश लिखि रहल अछि। सम्पूर्ण कथा पर ककर अधिकार अछि, के जनैत अछि ! मध्यवर्गक ई प्रशिक्षित सेवाव्रती गाम अबैत अछि। मलेरियापर शोध करबा लेल आ गामक जिनगीक प्रवाहमे उतरि जाइछ। भूख, गरीबी, बीमारी आ सभसँ ऊपर अज्ञानक तहमे दबल जिनगी ओकरा उद्वेलित करैछ। ओ चुपचाप एहि पर प्रतिक्रिया करैछ। इएह ओकर सहभागिता थीक। तहसीलदारक बेटीसँ ओकर प्रेम गाममे भने कथा बनि जाय, मुदा ओकरा लेल कथा नहि

अछि। वास्तविक संलग्नता अछि। ओकर डायरियोमे एकटा स्वर अछि– डूबल-डूबल, प्रशांत ! मुदा, प्रतिक्रिया करबाक बेचैनीसँ भरल।

ओ अपन पत्रमे ममताकेँ लिखैत अछि–"एहि ठामक माटिमे छिड़िआयल लाखो-लाख आदमीक जिनगीक स्वर्णिम सपनाकेँ समेटि, अपूर्ण कामनाकेँ समेटि, एहिठामक प्रांणीके जीवनकोश मे भरि देबाक कल्पना केने छलौं हम। हम कल्पना केने छैलौं, हजारो स्वस्थ मानव हिमालयक तराइक-कंदरामे, त्रिवेणीक संगमपर, तिमूर आ सुणकोशीक संगम पर एकटा विशाल डैम बनयवा लेल पहाड़तोड़ परिश्रम कय रहल अछि। लाखो एकड़ बन्ध्या धरती, कोशी कवलित पड़ल माटि शस्य श्यामला भय उठत। कफन जकाँ श्वेत बालु भरल मैदानमे धानी रंगक जिनगीक लत्तरि सभ लागि जायत ! मकैक खेतमे घास कटैत स्त्रीगण बिनु कारणे ठठा कऽहँसि पड़त। मोती जकाँ श्वेत दाँतक चमक ...।"

डाकदर रोगक जड़ि पकड़ि लेने अछि। गरीबी आ अपमान-एहि रोगक दुइटा कीटाणु अछि। डाकदरक आत्मा बजैत अछि, डाकदरक आत्मा सुनैत अछि। आनो लोक सुनि रहल छथि एहि अन्तर्ध्वनिकेँ। कालीचरणधरि ई अन्तर्ध्वनि पहुँचि गेल अछि। कर्मकार धरि ई स्वर पहुँचि गेल अछि। परन्तु जनता ! डाकदरक स्वरमे अन्तर्द्वन्द्व अछि– "पेट– एहिठाम हिनक सभसँ पैघ कमजोरी अछि। वर्तमान सामाजिक न्याय-विधान हिनका अपन शत बाहु मे फँसा कऽ एहेन लाचार कऽ देलक जे ओ चूँ धरिनहि बाजि सकैत छथि। तैयो ई जीवय चाहैत छथि। ओ ओकरा बचवय चाहैछ। की होयत ?"

ओकर स्वरमे एकटा सार्थक मानवीय संबंधक ध्वनि अछि। ओ स्वयं बाहरी भय सकैत अछि, मुदा एहि अनुभवकेँ ओ बाहरी नहि मानि सकैछ। ओकर अपन छटपटी अछि। ओना कथामे ओ सभसँ कम मुखर अछि। मुदा ओकर बात शब्दक प्रत्ययक बिना सेहो व्यापक अछि। डाकदरक स्वरमे नाटकीयता नहि अछि। एकटा वैज्ञानिक स्थिरता अछि। कत्तौ कत्तौ ओना कविताक स्पर्श अवश्य अछि। मुदा, ई कविता असगर कंठक गोहारि नहि अछि। ओकर दृष्टि व्यापक अछि आ ओ अपन दृष्टिसँ, सम्पूर्ण परिदृश्यक वास्तविकतासँ स्वयं परिचालित भयरहल अछि। कमलीसँ ओकर प्रेम शहरी प्रेम जकाँ इच्छा आ अवसरक प्रेम नहि थीक। ओ कमलीसँ प्रेम करैत अछि तँ ओकर भारपन सेहो उठ बैछ। समस्त विरोधकेँ तोड़ि ओ कमलीसँ विवाह कय लैत अछि।

लक्ष्मी कोठारिन आ वामनदासक दृष्टिमे समानता आ भेदक स्वाभाविक आन्तर्यकेँ स्वीकार कयलाक बाद एकटा आर तथ्य एहि कथा पद्धतिक संग प्राणवंत रूपमे विवृत होइत अछि। लक्ष्मी बालदेवक माध्यमसँ अपन अगल-बगलक राजनीतिक वास्तविकताकेँ आत्मसात करैछ आ वामनदासक व्यथाकेँ सेहो कतौ कतौ अपना भीतर साकार करैत चलैछ।

भारतीय सामंतवादक एकटा अत्यन्त जघन्य ह्रासशील संस्थानसँ जुड़ल ई अभागिन सत्तो कोठारिन अछि। किन्तु, ओकर वास्तविक स्थिति किछु भिन्ने अछि। ओ प्रत्येक

महंथक नजायज रखैल अछि। संप्रदाय सेहो एकर अनुमति नहि दैत अछि कारण जे अन्ततः ओ दासिन अछि। ओकर दृष्टिसँ देखल गेल वास्तविकता यद्यपि बड़ पैघ नहि अछि आ हमर सभक सामाजिक जीवनक व्यापक संसारक मात्र एकटा हिस्सा अछि, मुदा ओकर स्थिति बड़ भयानक, अमानवीय आ नृशंसतापूर्ण अछि।

कथा लक्ष्मीक संदर्भमे एना शुरू होइत अछि– "लक्ष्मीकेँ तँ सेहो संसारमे केओ नहि अछि।" लक्ष्मीक सोचक सिलसिला एहीठामसँ आरंभ होइत अछि। संबंधहीन आ रक्त संबंधसँ नगण्य लक्ष्मी सोचैत अछि आ ओकर सोचक मर्म फुजि जाइत अछि। अपन कोमल हृदयक दुर्भाग्यपूर्ण स्थितिपर स्वयं ओकरा चिन्ता होइत छैक। सरिपहुँ, ओकर हृदय नरम किएक अछि? डाकदर केँ देखि ओकर हृदय पिघलि गेल अछि। हे सद्‌गुरु। लक्ष्मी क्षमाक प्रार्थनामे लीन भय जाइत अछि। मुदा, ओकर नारी मोनक एकटा कोन गलि जाइछ। ओकरो तँ इच्छा छैक– सहज नारी सुलभ इच्छा। आइ धरि पुरुष ओकरा प्राप्त करैत आयल अछि। की अपन इच्छासँ ओकरा पुरुष प्राप्त करवाक कोनो नैतिक अधिकार नहि छैक! की ओकरा वरण करबाक कोनो स्वतंत्रता नहि छैक!

लक्ष्मीक कथा भारतीय नारीक परतंत्रताक एकटा नग्न उदाहरण अछि। ओ कोनो अर्थतंत्रक दासी हो, की अन्तर पड़ैछ! पारिवारिक अर्थतंत्रक दासी बनि कम-सँ-कम एकटा सामाजिक स्वीकृति तँ ओकरा प्राप्त भय जाइछ। मुदा, एहि संस्थानक अर्थतंत्रमे तँ ओकर सामाजिक अस्तित्व अछिए नहि। अपन एहि दुर्भाग्यक आमने-सामने ठाढ़ ई स्त्री हमरा अभिभूत करैछ-अपन भोगक विवशता भरल जिनगीसँ। तैयो अपन प्रतिरोधी शौर्यसँ चमकिते अछि। बिजली बनि जाइत अछि। ओकर कथा भने कथानकक चमकी भरल हिस्सा नहि होइ मुदा ओकर मर्म वामनदास आ बलदेव सँ छोट नहि अछि।

महंथ साहबक चित्त थिर नहि रहैछ आ सद्‌गुरूक स्थान पर ओ 'लक्ष्मी-लक्ष्मी' गोहारि करै छथि। ओहि दिन बीजक किरिया खयने छलाह, आइ फेर बजा रहल छथि। लक्ष्मी सद्‌गुरुसँ मृत्युक कामना करैछ। एहि पराश्रित दयनीय जीवनसँ तँ मृत्यु नीक। आत्मग्लानिसँ ओ संत्रस्त भय उठैछ। "महंथ साहब सद्‌गुरूकेँ मोन पाड़ू" ओ कहैत अछि। मुदा, सोच ओकरा दोसर दिशामे लय जाइछ– "आन्हर व्यक्ति जखन पकड़ैत छैकतँ जेना ओकर हाथमे मगरमच्छक शक्ति आबि जाइछ।"

महंथ साहेब सद्‌गुरुक धाम गेलाह तँ रामदास महंथ बनि गेल। ओ तँ प्रत्येक महंथक दासी अछि। रामदास अपन अधिकार पाबय चाहैछ। मुदा, एकटा अंतर्क्षेप! लरसिंघदासक आँखिक भाषा बूझि ओ रामदासक पक्षसँ लड़ाई मोल लैत अछि। ओ साहससँ कहैत अछि–रामदास मठक धर्मगुरु अछि, अधिकारी अछि। मुदा, ओ की जानइ गेलीह जे सभक आँखिमे ओकरा लेल एकेटा पहिचान अछि। कतय कतय बाँचि सकत ओ। लरसिंघदाससँ बचियो कऽतँ ओ अपन रक्षा नहि कय पबैत अछि। अपन निस्सहायता आ सामाजिक

अस्तित्वक नाशक पीड़ाकेँ ओ सरिपहुँ असगर भोगि रहल अछि संसारमे ओकर केओ नहि अछि ।

लक्ष्मी "मैला आंचल" मे सभसँ एसकरुआ अछि । आ वामनदास ? नहि, ओकरा संग तँ समस्त देश अछि । बापू छथि, पटनिया देवीजी छथि । ओ असगर कोना भय सकैछ ! हँऽ ओकरो नियति असगर भए सकैछ, ई लक्ष्मी नहि जनैत छलीह, नहि जानि सकैत छलीह । मुदा, ओ वास्तवमे असगर अछि । अपन जीवनक भोगमे असगर । बालदेव लग आबि ओकरा अपन सार्थकताक बोध होमऽय लगैछ । जीवन जीवा योग्य अछि, ओकरा लेल संघर्ष कयल जा सकैछ । अपन आ आनक लेल संघर्ष । ई असगर स्त्री कतेक विवश अछि तैयो अपराजेय अछि । "मैला आंचल" मे एहेन चीज सभक कमी नहि अछि । मुदा एहि कथा चरित्र सभकेँ जखन हम घटना-प्रवाहमे छूटल देखैत छी तँ क्षोभ होइछ ।

आचारज गुरु काशी सँ अबैत छथि । हुनक संग कतेको लोक अछि । नागा बाबा सेहो छथि । रात्रिमे खाली पएर लक्ष्मीक कोठरी दिस अबैत छथि आ गारि दऽ कऽ घुरि जाइत छथि 'हरामजादी केवाड़ बन्द कय सुतैत अछि ।" एहेन छोट-छोट मुदा मारुक घटना सभक मध्य पलल छलीह लक्ष्मी । मठक महंथीक मामिला अबैछ । ओकर स्थिति अत्यंत दयनीय अछि । बालदेवसँ ओकरा सहायताक भरोसा अछि । मुदा, धर्मक मामिलामे ओ गाँधीवादी नाक नहि घुसायत । कालीचरण संकटक काल काज अबैत अछि । कोनो स्वार्थसँ नहि, उत्साह आ सहायक सिद्ध होयबाक प्रेरणासँ । लक्ष्मीक अनुभवमे एकटा सम्पूर्ण संसार अछि । ओहि संसारमे झाँपल-उघरल लोक अछि । ओकर अनुभव तिक्त अछि ।

महंथ रामदासक आंगनमे नदी बहि रहल अछि आ ओ पियासल अछि । एहेन होइछ ई पिआस । लक्ष्मी ओकरा सद्गुरुकचरनामरित पिअबैत अछि, मुदा नदीक कात ठाढ़ पिआसल केँ आकास दिस तकनाए नीक नहि लगैत छैक । लक्ष्मी सभ किछु बुझैत अछि, जनैत अछि । तैयो ... तैयो । दोसराक तनक तापकेँ ओ आए धरि सहैत आयल अपन तनक तापकेँ ओ कहियो देखलक ? बालदेवकेँ लक्ष्मी तैयो बिसरि नहि सकैछ । साधु स्वभावक पुरुष छथि, आनक चित्रकेँ दुखबइ नहि चाहैत छथि । केहेन विडंबना अछि एहि नारी मोनकेँ, केहन मूढ़ता अछि ई नारी मोनक ?

आओर ओकर देहमे सुगंध अछि एहिसँ ओकर परिचय अछि कतय । बालदेव जी ओहि सुगंधसँ ओकरा सचेत करैत छथि । बालदेव जी साधु छथि, बालदेवकेँ ओकर गंध लागैत छनि । केहेन विचित्र आ क्षमाशील होइछ ई नारी मोन ! आ कतेक आधारहीन । लक्ष्मी अपन मोनसँ पहिलुक बेर पराजित भेल अछि-बालदेवक प्रति अपन मोनक सहज रागसँ, ओकर संपर्कसँ, ओकरा सरिपहुँ अनसोहाँत लगैत छैक । साँचे, लक्ष्मीक मोन ओकरा प्रति चंचल अछि, मुदा ओहिमे चोर नहि अछि । बालदेव सेहो चोरा कऽ ओकर मोनमे नहि आयल छल । एहेन निर्भीक नारीकेँ अपन उपन्यासमे आनि रेणु कथाक एकटा अन्हार दुनियामे इजोत पसारलनि अछि । लक्ष्मी विशिष्ट अछि—अपन साधारणतामे असाधारण ।

उपन्यासक कथा-दृष्टिमे बड़ जीवंत संतुलन बनवैत छथि रेणु। कोनो कथा-सूत्र अपूर्ण नहि रहि जाय। कथाक मांग पूर्ण करबामे प्रेमचंदक उपरान्त यशपाल आ नागरक संग रेणुक नाम अनचोके दिमागमे उभरि जाइछ। कथा कहनाइ आ ओकर पूरापूरी निर्वाहक दृष्टिसँ सेहो "मैला आंचल' एकटा अत्यन्त प्रभावशाली उपन्यास अछि। ओकर शिल्प जेहन हो; किन्तु ओकर संरचना "मोनताज" शैलीक नहि अछि। प्रथम दृष्टिमे एहेन भ्रम भय सकैछ। किछु लोक गंभीरतासँ ई बुझयबाक प्रयास कयने छथि जे रेणु "मोनताज" शैलीक उपन्यासकार छथि। किन्तु, हमरा "मैला आंचल" आ "परती : परिकथाक" प्रसंग कहियो ओतेक आत्मस्वतंत्र नहि लगैत अछि। ई एकटा महाकाव्यक संरचनाक नजदीक बुझि पड़ैछ। निश्चित रूपसँ ओहिमे वृत्तांत क पुट किछु बेसी अछि।

आ ई परिदृश्यात्मक-महाकाव्यात्मक कथा-शैली हमर जातीय शैली थीक जकर संरचना हमरा सभकेँ अनेको कथामे भेटत। अपन अगिला उपन्यासक नाम "परती : परिकथा" दय रेणु ठीक-ठीक एकर आभासो देने छथि। "कादम्बरीक वृत्तांत-शैलीक अतिरिक्त 'मैला आंचल" मे अन्तर्कथासभक विधान सेहो अछि। ई ओकरा वास्तविक पदयोग दैत अछि। कथा आ कविताक ई योग वास्तवमे "मैला आंचल"क शिल्पकेँ हिन्दीमे अद्वितीयता प्रदान करैछ। एहि कथा-शिल्पकेँ रेणु "परती : परिकथा' मे किछु आर गूंथने छथि। ओकरा पढ़ैत "कोलाजक" भ्रम नहि होइछ। ओहिमे अवस्से कथाक चारि-पाँच परस्पर सह संचरण करयवला कथानक अछि जे एक दोसरासँ समान संदर्भसँ जुड़ल अछि। "परतीः परिकथा"क रचनाशिल्प परिदृश्यात्मक-कथात्मक शिल्प अछि। अन्तर्कथा सभसँ बुनल ई कथा-शिल्प "मैला आंचलक" नाटकीय मोन्ताजक भ्रम कम उत्पन्न करैछ। यद्यपि एहूमे कथाक परिवृत्तक भीतर कतेको नाटकीय दृश्य सदृश खंड सभ अछि, तैयो ओकर व्यवस्था बेसी व्यापक आ अन्तर्प्रवाहपूर्ण अछि।

धूसर, वंध्या, अंतहीन आंतरक "दृश्य" नाटकीय नहि अछि, छविमय अछि। ई छविमयता धरतीक अछि-एकटा विशिष्ट रंग रेखावली धरतीक। एहि धरतीक संग "परतीःपरिकथा" जुड़ल अछि। शीर्षकहि एकरा सार्थक कय दैत अछि। मध्ययुगीन तंत्र-साधकक कच्छप पृष्ठभूमि आ पंचचक्रक ई धरती अपन व्यथा-कथा नुकौने नहि जानि कतेक बरखसँ सुनसान पड़ल अछि आ लेखकक डूबल-डूबल स्वर एहि परिदृश्यकेँ फुजितहि सुनाइ पड़ि रहल अछि– पार्श्व संगीत जकाँ मद्धिम; किन्तु प्रभावशाली। एहि परतीक सेहो कथा होयत व्यथा भरल कथा एहि बन्ध्या धरतीक। ई स्वर नाटकीय कम अछि, परिवृत्तात्मक बेसी। एकटा प्रभावक संग व्यथाक कड़ी सभक संकेत स्पष्ट होइत जाइछ।

एहि प्रभावपूर्ण "कमेंटरीक संग दृश्य" जीवित होमय लगैछ। परती सजीव होमय लगैछ, गंध-स्वप्नयुक्त। पक्षी सभक स्वर-केंक ...... केंक ..... केंए। बालुचरसँ बालुचर धरि दौड़ैत स्वर सभ एकटा परिदृश्य खोलैत अछि। केहेन अछि ई परिदृश्य। हहास भरल

धरतीक परिवृत्त। आ ओहिमे जीवनक आभास देमयवला ई स्वर। पक्षिगणक नाना जाति-वर्ण रूप। बालुचर जीवित भय उठैछ, जेना बन्ध्या धरती सपना देखाय लगैछ। आ एहि धरतीक सपनासँ एकटा सपना जितेन्द्रनाथ मित्रक सेहो जुटैत अछि।

एहि परिदृश्यक संग छोट-छोट लोक-प्रचलित कथासभ अछि। एकर रंग कम लहटगर नहि अछि। एकर प्रभाव दृश्यकेँ स्वर-संगीतक संग अर्थसँ भरैत अछि। एही लेल हम कहने छी जे 'परती परिकथा'क शिल्प परिदृश्यात्मक ओ महाकाव्यात्मक अछि। ओकर कथामे कतहु तीव्र वेग अछि आ कतहु मंथर। आन्तर्यक संग प्रकट होमयवला एहि योगपदमे–– आरोह-अवरोहक एहि स्वर-विधानमे कथाक "मूड" संतरणशील अछि। कोनो पश्चिमी व्याख्याकार कथात्मक "मूड्स" केँ लेखकक कथादृष्टि कहने अछि। ठीक इएह अछि जे ई विच्छिन्न लागयवला, संचरण करऽवला–मूडस एतेक क्षणस्थायी नहि अछि। ई एकटा मानसिकता तैयार करैछ आ अहि मानसिकताक भीतरमे रहैछ एकटा व्यथा-कथा, व्यक्तिगत त्रासदी नहि सामाजिक–त्रासदी। एहि बंजर भूमिक त्रासदी जकाँ!

ई परतीओतँ धरित्रीए अछि, धारण करयवाली माय। आ एहि मायक संग कथा सभ जुड़ैत अछि। धान कूटयवाली पंडुकीक। एकर संगे कथाक भीतर एकटा मूर्त्ति-कथा अनायासे जन्म लैत अछि। रानी माँ आ जितू। वंध्या धरतीक पीड़ा कोनो देव-दानव नहि हरैत अछि, माय कहैत छथि। आ तखनहि जित्तूक मोनमे एकटा सपना साकार होइछ-अग्निगर्भ आ ओहिठामसँ जलपरीकेँ घीचि आनत-बंध्या धरतीक मुक्तिक स्वप्न।

शुद्ध लोक-कथाक अन्तरात्मासँ जन्म लेमयवाला स्वप्न! स्वतंत्र भारतक स्वप्न !! अंचल-अंचलमे रक्त-संचार भय रहल अछि, परती-परती धड़कि रहल अछि !!! तरुणावस्थाक स्वप्ने-टा साकार नहि भेल, हजार बरखक वृद्धक सपना सेहो साकार होयबाक बेर अछि। ने जानि कतेक पीढ़ी एहि सपनाकेँ निरंतर देखने अछि, एक-के-बाद एक अखंड शृंखला, अनाहत क्रममे। एहि सम्पूर्ण परिदृश्यक कथा-गीत जकाँ स्वर संपाती ई विस्तार सरिपहुँ आश्चर्यजनक अछि, सम्मोहक अछि। कथाक एहि सम्मोहनमे प्रगीतक मर्म जेना आस्ते आस्ते महाकाव्यक विस्तार पाबैत चलैइत अछि। स्वर सभक आवर्त– स्वर पर उभरैत स्वर !!!

'गीत कथाकार' स्वरमे स्वर जोड़ैत अछि। छिन्नमस्ता कोसीक-कथामे लोक-कल्पना केहेन विलक्षण मानवीकरण करैछ। मानवीय स्थितिक भीतर कथा सहज भय जाइछ . सासु-पुतहुक कथा। कुलवधूक कथा। गुनमैती–जोगमंतीक कथा। लोक-कल्पनासभ सजीव बनि हजार कथामे साकार भय जाइछ। अतिरंजित आ प्रगीतक, कल्पना आ सामाजिक भोगक वितान कथामे रूपांतरित होइत जाइत अछि। ई कथा–शिल्पक चमत्कार ओतेक नहि थीक, जतबा लोक-सहज अछि। परंपरित दीर्घजीवी समाज एहेन कथात्मक परिकल्पना मौलिक ढंग सँ कयने अछि–अपन अपन परिवेश आर चरित्रक अनुसार। अपन लोकक प्रकृतिमे डूबल ई कथासभ जातीय मर्मकेँ खूब उभारैत अछि। एकर शिल्प

लोकमानससँ जन्म लैत छल, कथावाचक नाना रूपकेँ उजागर करैछ कखनहुँ किस्सागोक रूपमे कखनहु वार्ताकारक रूपमे एहि प्रकारक नाटकीयता "मैला आंचल" मे बेसी अछि। गीत-कथा–वार्ता, नाटकीय संवाद। 'परती : परिकथा" मे कनेक आन्तर्य आनैत छथि रेणु।

वार्ताक शैलीक स्थानपर संलाप "परती : परिकथा" मे बेसी अछि। आत्मालाप आ संलाप सेहो। एहि पैघ संलाप-कथाक बाद दृश्य बदलि जायछ। परानपुरक सुनसान धरतीकेँ देखैत कैमराक आँखि! कैमराक आँखि सभ किछु देखैत अछि, बंदी बनबैत अछि। ऊपर-नीचा, आगू-पाछुक दृश्य सहजतासँ बंदी होइत चलि जाइत अछि। आ एहि कैमराक संग भवेश अछि। परतीक विभिन्न रूपक अध्ययन करबाक लेल आयल युवक। कथामे ओ प्रायः अदृश्य अछि। कैमरा ओकर चुप्पीकेँ सेहो सार्थक करैछ। टेप आ कैमरा कलाक आँखि, कलाक स्वर। अथवा कथाकारक आँखि, कथाकारक मोन!

एकटा साक्षी सुरपति राय। दरभंगासँ आयल छथि आ लोक-कथाक, लोग गीतक संग्रह करैत छथि। रानी डुबीघाट, दुलारी राय, परगना हवेली! सभ गीत कथा– लोकक रचनात्मक मानसमे–बंदी छथि। हुनका सामने आनय पड़त, मुक्त करय पड़त। लोक-प्रेम आ लोक-छलक व्यथा-कथा सभ। लोक वार्ता जकाँ। परानपुर एहि कथा सभक केन्द्र अछि। परानपुर पुराकथा सभक केन्द्र सेहो अछि ओ आधुनिक हलचलक सेहो। परानपुर कतेको बरखक विस्मृति कैँ तोड़िकेँ जागल अछि। "ग्रामांचल" जीवित भय उठैछ, अपन धड़धड़ीक संग। स्वतंत्र भारतक ग्रामांचल। "मैला आंचल"क अवसाद-कथासँ–"परती परिकथाक" स्वर भिन्न अछि उत्साह आ आवेशमे डूबल, नव जिनगीकेँ प्रतिकृत करैत, प्रतिकृत होइत।

रेणुक "कथावाचक" आश्चर्यजनक रूपसँ समृद्ध अछि। कतेको स्रोतसँ ओ अपन कथाक रंग-स्वर प्राप्त कयने छथि, ताना-बाना बुनने छथि आ "टेक्सचर" कोमल चिक्कन सतह। "मैला आंचल" क "टेक्सचर" एतेक सम नहि अछि। ओकर माटि किछु बेसी खरखर अछि। "परती: परिकथा" मे एहि कठोर माटिकेँ तोड़ल गेल अछि। जितन ट्रैक्टरसँ परती तोड़ैत अछि, आ रेणु कलमसँ धरतीक कठोरता तोड़ैत छथि। तऽकी जितेन्द्रक रूपमे रेणुक छवि सीमित होइछ, छविए टा नहि, संपूर्ण व्यक्तित्व सीमित भय जाइछ? की जितेन्द्रक भावधारा आ विचारधाराक संग रेणुकेँ एक कयल जा सकैछ? हँ, सपना एक भय सकैछ। अजादीक आसपास तीन पीढ़ी तँ एक्के सपना देखैत अछि। एकटा समृद्ध उपमहाद्वीपक सपना। एहि सपनामे समस्त भारत सामिल अछि–शहरो, गामो।

एहि आततायी सपनामे रंगारंगमे स्वरक आवर्तक तँ सहजहि अनुमेय अछि। दृश्य अत्यन्त समृद्ध अछि-मात्र नाटकीय प्रभावक लेल नहि, एकटा सम्पूर्ण पदयोग बनयवाक लेल। रेणुक कथा चक्रमे ई पदयोग फेर नहि भेंटैछ, ई आवर्त नहि भेटैछ। प्रायः "मैला आँचलक" पात्र कैँ लय ओ पुनः एहि कथाचक्रक संग अपन भावी उपन्यासमे प्रकट

होइतथि। मुदा ई संभावना सर्वदाक लेल समाप्त भय गेल। ओना अपन कथासभक द्वारा ओ एहि चक्रक भरिसक रक्षा कयने छलाह। मुदा, उपन्यास आ कथामे अन्तर होइत अछि। ई अंतर तँ तैयो रहिए जाइछ।

कथाक प्रवाह चलैत रहैछ। कथावाचकक स्वरमे संघटनक क्षेपक सामिल अछि। कथाक भीतर कथा। सुरपति रायक दृष्टिसँ देखल कथा। परानपुरक वर्तमान आ अतीत। ई अतीत "हैंग ओवर" वा उन्मादक नहि अछि। साफ आ परिदृश्यात्मक अछि। घाट-बाटक कथा, किन्तु सभक केन्द्र एक्के अभिमुखता सूचित करैछ। सभक मुँह परानपुरे दिस अछि "मैला आंचल" मे कथा बाहरसँ केन्द्र दिस गतिशील अछि आर "परती:परिकथा" मे केन्द्रसँ चारू दिस गतिक आवर्त्त अछि–एकटा केन्द्रापसारी दोसरकेन्द्राभिमुख।

बाहरसँ भीतर वा भीतरसँ बाहरक गतिवला कथा-शिल्प पच्छिममे बेसी प्रचलित अछि। अपना ओतय जातीय कथा-सभ एहि गतिशीलतासँ भिन्न चरित्र प्रकट करैछ। ओ केन्द्र दिस अबैत अछि अथवा केन्द्रसँ बाहर जाकय वृत्त बनबैत अछि। की "परती:परिकथा"मे एकटा सत्यान्वेषी सामाजिक-साहित्यिक उद्देश्य आ व्यक्तिगत जीवनक असत्यक मध्य खाधि मुँह बौने ठाढ़ अछि, जे किछु आलोचकक अभिमत अछि ? की रेणु कथा-शिल्पसँ एहि खाधिकेँ पाटवाक भ्रम उत्पन्न करैत छथि ?

अगर जिनगी कृतिक सभसँ नीक टिप्पणी होइत अछि मानय पड़त जे "परती:परिकथा" मे जिनगी धड़कैत अछि। मात्र जितेन्द्रक भीतरे नहि, ओहिसँ बाहर आ स्वतंत्र सेहो। ओ "परती:परिकथाक" कतोक सय चरित्रमे धड़कैत अछि, हजारो स्थितिमे धड़कैत अछि। भवेश, सुरपति, मेरी, मिम्मल मामा, जितेन्द्र सबहक अपन अपन दृष्टि अछि आ एहि विशाल अन्तर्वेदमे-कथादेशमे–क्रिया-कलापक स्वतंत्र वार्ता सभ सेहो अछि। अनेक अन्तर्क्षेप अछि। एतेक धरि जे "व्यासगादी" सेहो। व्यास-पीठ–कथा कहयवलाक एकटा अन्तहीन परंपरा।

"कथावाचकक" संग लेखनक जानल शैली। आत्मीय आ केन्द्रित। बीच बीचमे स्वरक संग, मद्धिम होइत ई "टीप"– दस्तावेज सभक "टीप"सँ भिन्न, प्रायः ओही मूल प्रवाहमे। शैली सभक ई सह संचरण "गड्डलिका प्रवाह" नहि अछि। ओहि मे एकटा विचित्र "सम" अछि। लगैछ, ओ नीचाक धरतीसँ, कथाक भीतरी टेक्सचरसँ उत्पन्न होइत अछि। सुरपति अपन "टीपमे" ओकरा मधुर मायामय स्वर कहैत अछि। मधुर तँ ओ अछि मुदा की सरिपहुँ "मायामय" सेहो अछि ? स्वरक भ्रम !

कथाक भीतर कथा-सुन्नरि नैका ! आ पंचराक अहोरात्र गीत-कथा; कथा सभक ई संसार बड़ समृद्ध अछि-अपनो विषयमे आ अपन अन्तर्वस्तुमे सेहो। स्वरक एकताक कारण आ योगपद-संक्रमक कारण ओकर प्रभाव आर गहींर भेल जाइत अछि। दंताराकस आ दुलारी राय। आइयो तँ एहि कथाक एकटा सहपदिक अर्थ अछि ! एहि अर्थकेँ रेणु

साकार करय चाहैत छथि अपन स्वरमे। कतेको रंगमे, कतेको रूपमे। सप्तपर्णी कथा। लोककथा सभक रूपक बड़ मर्मस्पर्शी अछि। एहि रूपकक सामाजिक आ समकालीन अर्थ खोजनाइ बेसी दुष्कर नहि। हमर साहित्यमे रूपकक कथा-शैलीक प्रयोग यद्यपि पश्चिमी "एलेगरी" जकाँ संगत रूपमे नहि भेल अछि मुदा ई हमर रूपक-शैलीक अपन आकर्षण अछि। रोमांसोमे रूपकक बुनाइ ओकरा विशिष्ट अर्थवत्ता प्रदान करैछ, ई एकटा ज्ञात तथ्य अछि "मैला आंचल" आ "परती:परिकथा" मे वृत्तक संग रूपकक प्रयोग भेल अछि। ई रूपक क कोनो धार्मिक अर्थ कें व्यक्त नहि करैछ, प्रत्युत व्यापक लौकिक अर्थ सँ ओ स्थनीय संदर्भमे बेसी व्यापकता मँ व्यक्त करैत देखाइ पड़ैत अछि।

"परती:परिकथा" मे दुइगोट परिवर्तन अछि। एहि दुनू परिवर्तनमे एकहि कथा विकसित होइत अछि, मुदा ओकर गतिमे अंतर अछि। स्थानमे नहि, प्रचलनमे अन्तर अछि। की एकरा हम दिशान्तर परिवर्त्तन कहि सकैत छी ! ई दिशा दिस अछि आ कि मात्र दशान्तर अछि ? ककर दशाक अंतर ? अवश्ये परतीक दशाक अन्तर। आ दशा सेहो एकटा दिशा होइछ-एकटा आयाम। दशाक आन्तर्यसँ दिशा परिभाषित होइछ। आजाद भारतमे दशा (लोकांचल)क ई परिवर्तन निश्चित रूपे ऐतिहासिक भविष्य रखैत अछि। हमर सभक आँखि एहि दिस तँ गड़ल अछि; मुदा, सरिपहुँ ऐहन परिवर्तन दशामे, देश-दशामे, घटित होइछ की ? अथवा एकरा मात्र सांत्वनासँ संतुष्ट कयल गेल अछि ? एहि प्रश्नक उत्तर अन्यत्र देल जा चुकल अछि। एहिठाम हमर उद्देश्य कथामे एहि परिवर्तनक शिल्पनकेँ स्पष्ट कयनाइ अछि।

मनसा मंगतक संग-मांगलिक प्रार्थना आ आशीषक संग-एहि परिवर्तक आरंभ अर्थपूर्ण मानल जायत। अभिप्राय स्पष्ट अछि। मुदा ई मंगल केकर आ ककरा लेल अछि ? एहि मंगलक नाटकक सार यदि एतबे अछि जे गाम मे सवर्ण सभ पिछड़ा'क नाटक कँ "सबोटाज" केलक आ ओहि राति एकटा असवर्ण वाला एकटा सवर्ण युवकक प्यार कँ चान-तारासँ जगमगा देलक, तँ एहि सारमे सत् नहि अछि–रेणुएक मुहावरामे। देशकालकेँ एतेक सीमित करयवला परिवर्त ओतेक अर्थ नहि रखैछ, जतेक मलारी-सुवंशक गाम छोड़ि भगनाइ आ ब्याह कयनाइ। ई एकटा आ असगर घटनाक महत्त्व अवश्ये व्यक्तिगत नहि अछि, सामाजिक अछि।

मुदा, परिवर्त्तक आरो व्यापक अर्थ की भय सकैछ ? रेणु एहि दोसर परिवर्तनमे समस्त कथाकेँ एकटा नव परिप्रेक्ष्य दैत छथि। दोसर परिवर्त्तनक कथा-शिल्पक आधार अछि बदलल वा बदलैत परिप्रेक्ष्य। अलग-अलग बिंदु सभसँ कथाक गतिक साक्षात्कार करैत रेणु अगिला कथाक संयोजन कंने छथि। एहि अगिला कथाक सार एहि उपन्यासक एकटा पात्रक दृष्टिसँ जानब उचित होयत–शैलेन्द्र कहि रहल अछि–

"ई बात नहि जे पहिने कहियो कोनो परिवर्तन नहि भेल समाजमे। परिवर्तन होइत रहल अछि– बात अछि परिवर्तनक गतिक।"

अभाव-अभियोग आ व्यर्थताक विलापसँ की एहि परिवर्तनकेँ बुझल जा सकैछ। नहि, मात्र एकरासँ परिवर्तनकेँ आत्मसात् नहि कयल जा सकैछ। परिवर्तनक वेग तँ बदलल अछि, ओकर गति सेहो बदलल अछि। ओहिमे एकटा असंभव बुझाय वला तीव्रता आयल अछि। एहि वेगक संग तालमेल राखि चलब असंभव भ गेल अछि। एक प्रकारक खाधि दू भिन्न दुनियाक "गैप" वा अंतराल–ई शैलेन्द्रक व्याख्या थीक। मुदा उचित व्याख्या थीक। गाम आ शहरक भीतर एक प्रकारक असंभव खाधि बनि गेल अछि। जेना गाम बैलगाड़ी पर सवार अछि आ शहर जेड जहाज पर (विमल मामाक शब्दावलीमे)।

आ मकबूलक दृष्टिमे एहि परिवर्तनक अर्थ–"एहि सांस्कृतिक उत्थानक लेल आर्थिक सहायता कतयसँ भेटत ? भूखल किसान-मजदूरकेँ एहिसँ की लाभ होयत ?

"समाजकेँ मानवीय आ मनुष्यकेँ सामाजिक बनेनाइए मुक्तिक एकमात्र पंथ अछि।"

कथामे मोनक परती, तनक परती तँ टूटल, मुदा समाजोक परती टूटल की ? कथा-शिल्पक सभटा आग्रह-सफलताक बादो "परती:परिकथा" अपूर्ण अछि। तह पर एहि परती कँ तोड़बा लेल एकटा कथा-परंपराक आवश्यकता आइयो बनल अछि।

कतेको चक्रमे, कतेक दृष्टिसँ कहल गेल ई कथा रोचको अछि आ सार्थक सेहो। आजादीक बाद प्रासंगिक भेल ई कथा आइयो अपन पूर्णताक लेल ललक भरल गोहारि बनल अछि।

दूटा बृहत् उपन्यासमे ई शिल्पगत प्रयोग अपन स्रोतसँ जुड़ल अछि। ई अनचीन्हार स्रोत नहि अछि, मात्र वर्तमान रूपमे ओकर संयोजन नव आ प्रभावकर अछि। एहि प्रकारक जातीय प्रयोग दिसि ध्यान तखन गेल जखन आंचलिक कथा सभ अपन संभावनाक संग आजादीक आसपासक बरखमे लिखल जाय लागल। ओना, बंगला उपन्यास सभमे एहि प्रकारक प्रयोग सतीनाथ भादुड़ी आ दोसर लेखक सभ पहिनहु कयने छलाह। मुदा, ई अनुगूँज बंगलासँ बाहर नहि सुनि पड़ल छल। हिन्दीमे "मैला आंचल" आ "परती:परिकथा" क प्रकाशनक बाद जे ढेर आंचलिक उपन्यास लिखल गेल, ओहिमे ई प्रयोग दोहरायल गेल। एकर एकटा ई प्रभाव अवश्य पड़ल जे कथा कहबाक रूढ़ आ प्रायः एक सन शैलीक जड़ता टूटल आ आंचलिक स्वरक ताजगीसँ पाठककेँ स्फूर्ति भेटल। कथा चाहे जेहन हो, शैलीक ताजगी अवश्ये एहि धाराक उपन्यासमे उत्साहवर्धक रहल। एहि क्रममे उड़िया उपन्यासकार शिवशंकरक "मछुआरे" हिन्दी पाठककेँ बड़ दूर धरि प्रभावित करबामे समर्थ भेल। "वरुण के बेटे"क प्रेरणा स्रोत संभवतः "मछुआरे" सदृश उपन्यासे अछि।

हिन्दी कथा-शिल्पक ई खोज अवश्ये उपन्यासक रूपमे परिवर्तनक लेल लेखककेँ प्रेरित कयलक। कतेक पुरान कथा-शिल्पक, विशेषतः कथा-वाचनक शैलीक–सार्थक आवृत्ति भेल आ रचनात्मक-व्यंग्यात्मक रूपमे ओकर उपयोग कयल गेल। वस्तुतः पश्चिमी कथा-शिल्पमे आभ्यान्तर कथ्य आ विषयक लेल जे प्रायोगिक शैली सभ प्रचलित छल

सामाजिक विषय वस्तु लेल तकर प्रयोग नहि कयल जा सकैत छल। ओहिमे चेतना-प्रवाहक अभिव्यक्ति तँ संभव छल, मुदा घटना-बहुल, सक्रिय, क्रिया-कलापसँ भरल सामाजिक वस्तविकताकेँ संश्लिष्ट रूपसँ व्यक्त करयवला संभावना नहि छल। एहेन स्थितिमे जातीय स्रोतसँ प्राप्त कथा-शैलीक आधुनिक संदर्भमे उपयोगमे आनि भारतीय कथा-लेखक सभ, सामानयतः बंगला आ हिन्दीक लेखक विशेष रूपसँ, सार्थक प्रयोग कयलनि।

रेणु अपन दू उपन्यासमे एहि कथा-शिल्पक प्रयोग केँ रचनात्मक सार्थकता देने छथि। एहि शिल्पमे जतय ओ ठेठ गप्पवार्ता सभक प्रयोग कयने छथि आ ओकर नाटकीयताक सम्पूर्ण उपयोग कयने छथि, ओतऽ ओ विवरणक "क्लासिकल" शैलीकेँ चित्रात्मक रूपमे उपयोगमे आनि ओकरा खाली शब्द नहि राखि, सम्पूर्णतः गोचर बना देने छथि-विशेषतः दृश्यात्मक। एकरा संग जर्नलक आत्मीय आंतरिक शैलीक टीप सेहो अछि। एहि प्रकारेँ रेणुक कथा-शिल्प अपन प्रयोगमे एतेक संश्लिष्ट आ रासायनिक अछि जे ओकर प्रभाव पाठकपर सोझे पड़ैत अछि।

प्रेमचंदक युगमे शहर बाहरी तत्त्व छल। ओकर शक्ति बाहरी छल। फलतः गाम आ शहर एक नहि बनि सकैत छल। प्रेमचंदक कथामे गाम शहरक अलगावक स्पष्ट संकेत अछि। मुदा, रेणुक गाममे शहरी तत्त्व ओतेक बाहरी नहि छल। शहर गाम आबि अपन पएर रोपि देने छल। एहि तरहेँ केन्द्रमे विच्युति नहि अछि। ई एकटा विशेष लक्ष्य करबा योग्य तथ्य अछि जकरा आत्मसात् कयने बिनु हम रेणुक उपन्यासक कथात्मक-संरचनाकेँ ठीक-ठीक बुझि नहि सकैत छी। रेणुक उपन्यास सभमे दू कथा समानान्तर आ परस्पर प्रतिमुख नहि देखि पड़ैत अछि, एकर रहस्य इएह थीक।

गामक सामाजिक वर्ग-संरचनाक गति आ शक्ति सभ बदलल अछि। एहि आवयविक संघटनक प्रभाव गामक जीवनपर दूर धरि पड़ैछ। प्रेमचंदक गामसँ रेंणुक गाम अपन आवयविक संरचनामे सर्वथा भिन्न अछि। ऊपरोसँ आ भीतरसँ सेहो। यदि किछु नहि बदलल अछि तँ वर्ग-संबंध। ओ अपन वर्ग-विषमतामे बेसी गंहीर आ विरूप अछि। सामाजिक प्रगतिमे शहरी किरणक प्रक्रियाक विशेष महत्त्व होइछ। आधुनकि प्रक्रियासँ गाममे परिवर्तन भेल आ ग्राम-समुदायक परिवर्तनपर ओकर प्रभाव सेहो पड़ल, मुदा, एहि, इतिहासकेँ हम यदि एतय छोड़ियो दी, तँ ई मानय पड़त जे अजादीक बाद गाममे परिवर्तनक प्रक्रिया तेज भेल। ई परिवर्तन भीतरी नहि छल। ओकर चालक शक्ति एकदम गामक भीतरक नहि छल। जमींदारी उन्मूलनक उपरान्त एकटा विचित्र स्थिति गाममे उत्पन्न भय गेल। कतेको बरखसँ अनुपस्थित जमींदार आ भू-स्वामी गाम दिस घुरि अयलाह। अपन जमीनकेँ बेसीसँ बेसी वकाश्त बनाय ओ आधुनिक खेतीक श्रीगणेश कयलनि। एहिमे शहरी आ सरकारी मदतिक पूर्ण उपयोग करैतओ लाभ सेहो उठौलनि। एहि स्थितिमे गामक वर्ग-संबंधक विषमताक तेज भेनाइ स्वाभाविक अछि। कथा-शिल्पक प्रकरणमे ई बात सभ अनचीन्हार लागि सकैछ, किएक तँ हम बहुधा वास्तविकता आ विषय सँ एही तरहेँ स्वतंत्र रहि सोचैत छी।

# समकालीन यथार्थवाद आ रेणुक कथा-साहित्य

ईहो की आश्चर्य अछि जे भारतीय यथार्थक लेल जमीन एकटा आंचलिक उपन्याससँ टुटैत अछि। प्रेमचंदक बाद कथा-साहित्यक केन्द्रमे मध्यवर्ग घुरि आयल छल। मध्यवर्गक ई वापसी शहरी जीवनक विविधतासँ उपन्यास साहित्यकेँ अवश्य समृद्ध कयने छल, मुदा, ओ भारतीय यथार्थक सीमा नहि छल। आजादी ओहि सीमा सभकेँ आरो पसारि देने छल। यद्यपि आजाद भारतक चित्र तीन पीढ़ीक दिमागमे एकहि तरहक नहि छल, मुदा सामाजिक परिवर्तनक एकटा सामान्य परिकल्पना कतहु ने कतहु समस्त भविष्य-दर्शनमे प्रायः समरूप छल। आजादी विभाजनक संग आयल छल। एतबे नहि, ओ एकटा दुर्भाग्यपूर्ण द्वेष आ कौमियतक' सांप्रदायिक भावनासँ जुड़ि गेल छल। देशक दूइटा अलग-अलग छोर पर ई भीषण नर-संहारक रूपमे प्रकट भेल छल। मुदा बीचक क्षेत्रमे आ विशेषतः गाममे एहि विभाजनक कोनो गंभीर परिणाम मात्र अल्पसंख्यकहिक हिस्सेमे देखाइक पड़ैत छल आ सेहो एकटा अंतरंग भयक रूपमे।

भारतक उत्तरी-पूर्वी क्षेत्रमे किसान-आंदोलन, असहयोग आ १९४२ क क्रांतिकारी उजाहि आदिक आधार पर ई कहब गलत नहि होयत जे एहि क्षेत्रमे गामक धड़धड़ी तीव्र छल। आजादीक बाद स्वाभाविक रूपसँ ई धड़धड़ी एकटा जागरण जकाँ प्रकट होमय लागल छल। जमींदारी उन्मूलन आ सर्वेक्षणक संग पहिल पंचवर्षीय योजनाक आरंभधरि एहि जागरणक लक्षण प्रकट होइत रहल छल। मुदा ई जागरण अन्तर्विरोधसँ मुक्त नहि छल। एकर बादो गाममे चारूभर तीव्र हलचल मचल छल, रेणुक प्रारंभिक दुई गोट उपन्यासक कथा-विषयक इएह परिवर्तन अछि। आजादीक रंगमे ओना ई परिवर्तन गुणात्मक नहि छल, मुदा परिमाणात्मक आ भावात्मक तँ छलैक। एहि अर्थमे प्रेमचंदक गामक संबंध आजादीक बादक उपन्यासमे नव आयाम ग्रहण करैत देखाइ पड़ल। जे व्यक्ति एहि परिवर्तनकेँ अनठा रहल छलाह ओ स्यात् ओकर चरित्रकेँ सेहो काल-क्रमसँ विच्छिन्न कऽ क देखि रहल छलाह। जे हो, एहि परिवर्तनक संबंध परिवर्तित होइत भारतीय यथार्थक भौतिक आधारसँ सेहो छल आ ओकर मानसिक उपरिसंरचनासँ सेहो।

रेणुक उपन्यासक संग बृहत्तर भारतीय यथार्थक एकटा नव संभावना उत्पन्न भेल छल। ई यथार्थ भारतक समकालीन यथार्थ छल जे गाम-शहरक विभाजनकेँ तोड़ि कय उभरल छल। एहि यथार्थक चरित्र संश्लिष्ट छल। ई संश्लिष्टता अंतर्लयनक एकटा माँग छल—कमसँ कम ग्रामीण जनताक मोनमे ई संश्लिष्टता किछु एही प्रकारक छल। ओ आशा करय लागल छल जे एहि—देशमे जे कृत्रिम आ सायास असंतुलन निरन्तर उत्पन्न कयल गेल अछि, ओ आजादीक बाद दूर होयत। समकालीन यथार्थक ई एकटा दोसर पक्ष छल जे ओकर चरित्र निर्धारणमे महत्त्वपूर्ण भूमिका जकाँ लक्षित भय रहल छल।

लोक-जीवन आ यथार्थक एहि संश्लिष्टताकेँ निकटतम इतिहासमे स्यात् पहिलुक बेर नव आधार प्राप्त भेल छल। ई आधार अन्तर्विरोधक उपरान्तो, प्रेमचंद आ हुनक युगीन आधारसँ भिन्न छल। ई भिन्नता विचारधारा सभमे प्रकट भय रहल छल। विचारधारा सभ तीव्र गतिसँ भौतिक आधार पर प्रतिक्रिया करय लागल छल। रेणुक उपन्यासमे यथार्थक समकालीन जटिलता आ अपेक्षित ताजगीक कारण एही प्रतिक्रिया करबाक क्षमतामे निहित अछि। क्रिया-प्रतिक्रिया करयवला ई विशाल जनजीवनक गति सभ एहेन नहि छल जकरा महत्वहीन कहि टारल जा सकैत हो। एहि गति सभक इतिहास पर निश्चित प्रभाव पड़ि रहल छल। एहि इतिहास-गरिमा आ संगे समकालीन यथार्थकेँ मूर्त्त करयवला कलाक जन्म चाहे जाहि छोरसँ भेल हो, मुदा छल ओ दूरगामी। मानवीय चेतनाक भीतर इतिहासक एहि करोटकेँ मात्र भावात्मक कहि हम यथार्थवादकेँ कमजोरे करब।

एहि प्रकारेँ समकालीन यथार्थवादक संभावना नव छोरसँ आजादीक बाद प्रकट भय रहल छल। एहि प्रक्रियाकेँ आलोचनात्मक भाषामे जटिल सेहो बनाओल जा सकैछ। मुदा, एहि प्रकारक कोनो जटिलताक प्रदर्शन कयलो बिनु कहल जा सकैछ जे एहि समस्त क्रिया-अंतर्क्रिया आ गतिविधि सभक परस्पर स्पर्शी आधारकेँ इतिहासक एकटा घटनाक रूपमे देखवाक आवश्यकता छल-यथार्थवादक समीकरणकेँ लक्षित करबाक। ई मात्र इतिहासकारक लेल आवश्यक नहि छल, उपन्यासकारक लेल सेहो आवश्यक छल। रेणु एहि आवश्यकताक चुनौतीकेँ स्वीकार कयलनि।

हमर दृष्टिमे समकालीन यथार्थवादक अर्थ दू रूपमे अपना केँ प्रकट करैछ, एकटा जनता आ व्यवस्थाक नव अन्तर्विरोधक रूपमे आ दोसर, जनताक मध्य अन्तर्विरोधक रूपमे। ई दुनू प्रकारक नव अन्तर्विरोध अपन समाजमे आजादीक बाद प्रकट होइत एकटा नव सामाजिक अस्तित्व धारण कय लैत अछि। अतः एहि अन्तर्विरोधक संदर्भ मे हम आजादीक बादक सामाजिक धारणाकेँ स्पष्ट कय सकैत छी। किछु मित्र भारतीय यथार्थवादक नामसँ एहि सामाजिक अस्तित्वक ऐतिहासिक अवधारणाक व्याख्या करब पसिन्न करैत छथि, मुदा हमर धारणा अछि जे यथार्थवाद कोनो देशीय क्षेत्रीय तत्त्व नहि अछि, ओ एकटा ऐतिहासिक तत्त्व अछि आ विश्व इतिहासक अंग अछि। अतः ओकरा एकदेशीय तत्त्व जकाँ देखनाइ ओकर चरित्र विस्तार केँ सीमित करब होइत। असलमे,

भारतीय वास्तविकताकेँ भारतीय यथार्थवादक नामसँ संवोधित कयनाइ उचित नहि। एहि आकर्षक नामक आत्यंतिक सीमा हमरा लोकनिक समक्ष स्पष्ट रहबाक चाही।

एहि दू विशिष्ट प्रकारक अन्तर्विरोधक भीतरसँ विकसित अवस्थाकेँ हम समकालीन यथार्थकेँ सीमामे आनि ई देखाबय चाहैत छी जे एहिसँ जे नव सामाजिक संभावना सभ उत्पन्न होइछ, ओकरा ध्यानमे राखि हमरा यथार्थवादकके अर्थकेँ परिभाषित करय पड़त। एहिठामसँ पश्चिमी बुर्जुवा यथार्थवाद आ विकसित होइत जनगणक यथार्थक आन्तर्य प्रकट होमय लगैछ। पश्चिमी आलोचनात्मक यथार्थवादक एकटा सीमित पक्ष ई रहल जे अंततः ओकर परिणति "एकायामी मनुष्य" क वास्तविकतामे होइछ जखन हमरा ओतय मनुष्यक सामाजिक भविष्य आ यथार्थवादक संभावना सभ एखन जीवित अछि। ई भेद एकटा अर्थपूर्ण भेद अछि आ एहिसँ यथार्थक स्वरूपमे किछु बेसी अन्तर आबि जाइत अछि। एहि ठाम पहिने एहि आधारकेँ स्पष्ट करबाक चेष्टा कयल जायत।

विकसित होइत ग्रामीण वास्तविकताक संभावना सभ एखन तेसर दुनियाक वास्तविकताकेँ निर्धारित करयवला तत्त्वमे गनल जायत। रेणुक साहित्ये एहि संदर्भमे महत्वपूर्ण नहि अछि, एकटा सम्पूर्ण धाराक उत्सर्जन एहि दृष्टिसँ महत्व रखैछ। एहि कालखंडमे कतिपय एहेन उपन्यास हिन्दीमे लिखल गेल अछि, जकरा आधारपर हम समकालीन यथार्थक किछु नव गतिशील संयोजक तत्त्व सभक चर्च कय सकैत छी।

आजादीक बाद व्यवस्था बदलल, किन्तु ओकर परिवर्तनक कोनो मूलगामी तात्कालिक प्रभाव हमर समाज पर नहि पड़ल। एकटा विचित्र प्रकारक शक्ति-संतुलन देशमे बनल जाहिमे लक्ष्य तँ कोनो आर प्रकारक निर्धारित कयल गेल छल, मुदा शक्तिक पार्थक्य नहि भए कऽ पुरान शक्ति सबहिक नव राजनीतिक संयोग भेल। एहि तरहेँ नव समाज पुरान शक्तिक हाथे संचालित होयबाक लेल विवश होइत रहल। नेतृत्वक घोषणा सभ कहियो जनाधारधरि ठीक-ठीक पहुँचि नहि सकल।

जनताक बीचक अन्तर्विरोधक कोनो निदान नहि भेल। एहि प्रकारेँ एकटा दोहरा आ दूरगामी अन्तर्विरोधक प्रक्रियामे समकालीन यथार्थवादक विकास अपना ओतय दृष्टिगोचर होइछ। रेणुक मैला आंचल" आ "परती:परिकथाक" कथात्मक पृष्ठभूमि एहि समकालीन यथार्थवादक पृष्ठभूमि थीक। ई यथार्थवाद समकालीन यूरोपीय यथार्थवादसँ भिन्न अछि जकर स्वरूप सामान्यतः आलोचनात्मक यथार्थवादी अछि अथवा सामाजिक यथार्थवादी। यूरोपीय पृष्ठभूमिमे समाजवादी यथार्थवादक एकटा धार तीव्रगतिसँ जाहि तरहेँ विश्वक साहित्यमे प्रकट होइछ, ओकरोसँ हमर पृष्ठभूमि भिन्न अछि, यद्यपि ई धारा हमर समकालीन यथार्थवादकेँ अर्थ आ प्रेरणा देलक अछि।

लगैत अछि, हिन्दीक किछु आलोचक आकारिक आन्तर्यसँ बाहर जाकय एहि समकालीन यथार्थवादक अर्थ चीन्हनाइ पसिन्न नहि करैत छथि। उदाहरणस्वरूप निर्मल वर्मा एहि यथार्थवाद (समकालीन) केँ एहि रूपमे स्पष्ट करैत प्रत्यक्ष होइत छथि–

"एकटा अदभुत ड्रामा भेल। भरिसके कोनो हिन्दी उपन्यासकार उपन्यासक "नैरेटिव" परंपराकेँ झिकझोरि ओकरा प्रेमचंदीय प्रारूपसँ बाहर निकालि एतेक नाटकीय, एतेक लोचगर, एतेक काव्यात्मक बनौने होयत जतेक रेणु। आ ई नाटकीयता, ई कविता अलंकारमय आ कृत्रिम नहि छल, किएक तँ परंपराग्रस्त कृषक आ आधुनिक ऐतिहासिक आन्दोलन मध्य जाहि भिड़न्तकेँ रेणु अपन विषय बनौने छलाह ओकर पहिनहिसँ बारूदी नाटकीय (?) ढेर वर्तमान छल। ओहिमे मात्र सलाइ लेशब शेष छल।"(ऋण जल-धन जल" भूमिका)

अपन नाटकीयताक एहि नाटकीय व्याख्यासँ आगू बढ़ि निर्मल वर्मा कहैत छथि—

"रेणु जाहि काठीसँ उदास, धूल-धूसरित क्षितिजमे नुकायल नाटकीयताकेँ आलोकित कयने छलाह, ओहि काठीसँ परंपरागत यथार्थवादी उपन्यासक प्रारूपकेँ सेहो अचक्के ढाहि देने छलाह। ई रेणुक एकटा अविस्मरणीय देन आ उपलब्धि अछि। "मैला आँचल" आ "परती: परिकथा" मात्र उत्कृष्ट आंचलिक उपन्यास नहि अछि, ई भारतीय साहित्यक प्रथम उपन्यास अछि जाहिमे अपन अमित ढँग सँ हिचकैत भारतीय उपन्यासकेँ एकटा नव दिशा देखौने छलाह जे यथार्थवादी प्रारूपसँ एकदम फराक छल। ओ उपन्यासक नेरेटिव परंपराकेँ तोड़लनि—ओकरा अलग-अलग "एपिसोड" मे बाँटलनि, जकरा जोड़एवला ताग कथा-सूत्र नहि, परिवेशक एहेन लैण्डस्केप अछि जे अपन आत्यंतिक लयमे उपन्यासकेँ रूप आ फार्म दैत अछि।" (उपरिवत्)

रेणु जातीय संभावना सभक उपन्यास मे नव खोज कयलनि। ओकरा प्रेम-कथा, लोक-कथा, किंवदंती, विश्वास आ जनश्रुति सभसँ जोड़िकेँ एकटा आकर्षक-अंतरंग आ परिचित "हयूमेन स्केप" मे बदलवाक कलात्मक प्रयास कयने छलाह। मुदा, एहिसँ आकारिक प्रयोगक बाहर गेनाइ संभव नहि बूझि पड़ल। रेणु समकालीन यथार्थक एहि प्रक्रियामे एकटा नव अर्थ सेहो देने छथि। हमरा लेल आकारसँ बेसी महत्त्व ओहि अर्थक अछि जे समकालीनताकेँ एहि अतीतक निरन्तरतासँ जोड़ने छल । निर्मल वर्माक दृष्टि एहि "नाटकीय-साहचर्य" केँ पकड़ि नहि सकल।

रेणुक समकालीन यथार्थवाद असगर नहि छल, ओ एकटा रचनाधाराक नव कड़ी अवश्य छल। रेणुसँ पूर्वो अनेक लेखक अपन-अपन स्थानसँ एहि समकालीन अर्थकेँ उपन्यासमे प्रकट कयने छलाह। नागार्जुनक "बलचनमा" मे नाटकीयता तँ नहि छल, किन्तु, समकालीन जीवनक एकटा अत्यन्त तात्कालिक रंग अवश्य छल। एहिना ओकर एकटा लय, राजेन्द्र यादव अपन उपन्यास "उखड़े हुए लोग" मे प्रस्तुत कयने छलाह। एहिसँ मिलि समकालीन यथार्थक एकटा रूप बनैछ। भैरव प्रसाद गुप्तक किछु उपन्यासमे एकर ठोस अभिव्यक्ति भेल छल। एहेन स्थितिमे रेणुक उपन्यासक आकारिक संरचनासँ हमरा भ्रम नहि होयबाक चाही। एहिसँ रेणुक शैलीक महत्त्व सेहो कम नहि होइछ। ओ अपन सजातीयता आ सजीवतामे अपन स्थान बनौने हमरा लेल महत्त्वपूर्ण होइछ।

व्यवस्थाक अंतर्विरोध जेना तीव्र गतिसँ बढ़ैत अछि, ओहिसँ बेसी तीव्र गतिसँ जनताक बीचक अन्तर्विरोध बढ़ैत अछि। "नाटकीयताक" एकटा स्रोत हमर एहि सामाजिक आधारमे अछि। एहि सामाजिक आधारक खोज कयने बिना हम "नाटकीयताक"–सजातीयताक गोहारि लगबैत रहि जायब। ओकर सजीवता मात्र एहि लेल नहि अछि जे ओ नाटकीय अछि। ओ एइ लेल सजीव अछि जे ई नाटकीयता इतिहासक शक्तिक टक्करसँ उत्पन्न भेल अछि। ओ अतीतक निरंतरता आ वर्तमानक अन्तर्विरोधक संदर्भ नाटकीय बनैछ। ई इतिहासक भीतर एकटा तेसर दुनियाक जनमक नाटकीयता अछि। ई तेसर दुनिया एकटा विश्व-क्रांतिकारी प्रक्रियासँ जुड़ि आरो बेसी नाटकीय भय जाइछ – ओ व्यापक मानवताक मुक्तिक नाटक प्रस्तुत करैछ। मार्क्स उपनिवेशवादक संदर्भमे लिखने छथि –ई असंतोष औपनिवेशिक शासक विरुद्ध सभटा महान् एशियाई जनगणक आत्मप्रदर्शन अछि।"

बीसम शताब्दीक एहि राष्ट्रीय मुक्तिक क्रांतिकारी प्रक्रियाक "नाटक" इतिहासक आत्यंतिक नाटक सेहो अछि। कोनो आकारिक आकस्मिकता एहि इतिहासक नाटकसँ स्वतंत्र अस्तित्व रखैत हो ई माननाइ कदाचित संभव नहि अछि। भारतीय जनगणक मुक्ति-संघर्षकेँ आ ओहिसँ उत्पन्न परिणामकेँ मात्र आकारिक खोजसँ बूझि पओनाइ असंभव अछि। रेणुक समकालीन यथार्थवादमे कथा आ नाटकक संयोग मात्र आकारिक संयोग नहि छल। एकरा स्पष्ट कय लेलाक बादे आब एहि संयोजक आधार तत्त्व व्याख्या कयल जायत।

"मैला आंचल" मे आजादीक अगल-बगल बदलैत ग्रामीण परिवेशक एकटा अत्यंत जटिल आ सजीव स्वरूप ठाढ़ कयल गेल अछि। एहि कृतिसँ एकटा भ्रमक निराकरण तँ भय जयबाक चाही जे एहि जटिलताक कतेको आन कारणमे एकटा कारण शहर-गामक अंतर्लयनक एकटा नव ऐतिहासिक संभावना सेहो मिज्झर अछि। शहरकेँ जाहि एकहरा ढंगसँ हम पूंजीवादी शक्ति सभक प्रतीक मानि एहि प्रभावकेँ गामपर बढ़ैत पूँजीवादी प्रभाव मानि लैत छी, ओहिमे हमरा एतबा जोड़ि लेबाक चाहीकि शहरसँ पूँजीवाद विरोधी शक्ति सभ गाममे प्रवेश प्राप्त करैछ, आ अपन जड़ि जनताक साधारण वर्गमे उत्पन्न करैछ। जनताक मध्य नव अंतर्विरोध एहि प्रक्रियेमे जनम लैत अछि।

"मैला आँचल" एहि दृष्टिसँ नव देशमे खेलय जायवला एकटा एहेन नाटक अछि, जाहिमे मानव-मुक्तिक व्यापक संभावना अछि। आजादीक लक्ष्यपर ओ भारतीय जनगणक जीवनक नाटक थीक, जाहिमे समस्त विद्रूप आ असंगतिक उपारान्तो धड़कैत जीवनक संवेग अछि। ओ मात्र "छविमय" नहि व्यापाररत समाजक चित्र सेहो अछि। ओ मात्र नाटकीय नहि ओकर नाटकीयतामे जीवनक नव स्पन्दन आ वास्तविकता अछि। एवम् प्रकारे आजादीक परिदृश्यमे लिखल ई लोकवृत्त अपन नाटकीयताकेँ वास्तविक

जनाधारसँ जोड़ैत अछि। अतीतक निरंतरताक पृष्ठ-भूमि सर्वथा व्यतीतक अंग नहि थीक। ओहिमे पर्याप्त जीवित जातीय तत्त्व वर्तमान अछि।

"मैला आँचल" जन जीवनक मध्य उभरल नव अंतर्विरोधक संग-संग अनेक शक्तिसभक पुनर्गठन आ विघटनक मार्मिक कथा सेहो अछि। एहि तथ्यकेँ नकारि घटित नाटकीय मर्मकेँ सेहो ठीक-ठीक लक्षित कय पेनाइ असंभव भय जाइछ। उदाहरण लेल, जखन एकहि झटकामे निर्मल वर्मा ई कहैत छथि जे प्रेमचंदीय कथात्मक प्रारूपकेँ तोड़ि रेणु यथार्थवादक एकटा नव पहिचान देलनि तँ एकर ध्वनि किछु आर भय जाइछ। वस्तुतः कथात्मक प्रारूप आ नाटकीय प्रारूपक बात प्रासंगिक आ उपरी स्तरपर चामत्कारिक ढंगसँ प्रभावशाली सेहो बूझि पड़ैत अछि। मुदा प्रश्न ई नहि थीक—नागरजीक उपन्यास सभमे दुनू तरहक प्रारूप अछि। अपन-अपन परिवेशक अधिकतम नाटकीयताक उपयोग दूनू लेखक कयने छथि, मुदा रेणुमे एहेन कोन बात अछि जे समकालीन यथार्थक व्यापक प्रतिरोपणक लेल एतेक उपयोगी भय जाइछ ? एहि तथ्येकेँ उजागर करबाक लेल प्रतिवेशी तथ्य सभ दिस ध्यान जाइत अछि।

"मैला आँचल" मात्र नाटकीयताक कारणेँ प्रभावशाली नहि अछि। ओहिमे इतिहास आ जनताक नव जीवन-संबंधक बनबाक-टुटबाक एकटा नम्हर प्रक्रिया अछि, जकर यथार्थ अपन नाटकीयतामे एतेक महत्त्वपूर्ण भयगेल अछि। ओहिमे जनताक आ व्यवस्थाक लेल अन्तर्विरोधक एकटा नव 'देश' अछि आ एहि देश पर प्रतिक्रिया करैत 'काल' सेहो नव अछि। देश-कालक एहि नवीनताकेँ भीतर-बाहरसँ चीन्हबामे, ओकर छटपटी पकड़बामे आ ओकर संघर्षकेँ मूर्त्त करबामे "मैला आँचलक" शक्ति नुकायल अछि। एक तरहक समग्रता ओकर प्रतिवेशी शक्ति सभ निर्मित करैछ, एक प्रकारक नव संतुलन एहि यथार्थकेँ परिणति थीक।

"मैला आँचलक" प्रथम दृश्यक उद्घातकेँ अपन नाटकीयतामे एहि नव शक्ति-संतुलनक पहिचानकेँ स्थापित करबा लेल प्रयुक्त अछि, मुदा कोन कीमतिपर ? सन् बियालिसक क्रांतिकारी 'जनता' बालदेवकेँ पकड़ि कऽ आनि रहल अछि। किएक तँ एक बेर बागी रहि चुकल अछि। एहिसँ बेसी एहि जनताक दिमागमे आर कोनो चित्र नहि अछि की ? आ इएह जनता बालदेवकेँ नेता बना दैत अछि, किएक तँ सरकारी अमला ओकरा जनैत-चीन्हैत अछि। ई नाटकीयता सुखद नहि अछि। एकर तुलनामे, शतरंज के मोहरे क गोहरि— फौजें आवति हैं— देरधरि कान मे वर्तमान रहैछ। अवस्ये बालदेव प्रसंगक ई दृश्य अतिरंजित, प्रगतिहीन आ नाटकीयताक नामपर एक तरहक मजाक अछि। मुदा, एकर बादक कथा बेसी गहीर आ कवित्वमय अछि। "एहने एकटा गाम अछि मेरीगंज' सँ कथाक ई कवित्व-प्रवाह प्रारंभ भऽ कऽ निरंतर बहैत जाइछ अपन धार मे गहिराइत अपन वेगमे अधिकतर प्रखर होइत। वस्तुतः नाटकीयताक अपेक्षा कथा आ प्रगीतक ई मिलल-जुलल स्वर बेसी प्रत्यक्ष सेहो अछि आ बेसी मर्मस्पर्शी सेहो।

"मैला आँचल" डबरापर सूरजक बिम्बे जकाँ काव्यात्मक अछि।" "मैला आँचल" पढ़ैत काल बेर-बेर मुक्तिबोधक ओहि निबंधक मोन पड़नाइ स्वाभाविक़ अछि जाहिसँ ओकर लाक्षणिकताक तह सभ दिमागमे जमल आ ओहि मूडकेँ पकड़बामे सुविधा जानि पड़ल, जे कोनो रचनामे लय जकाँ प्रकट होइछ। अलग-अलग छाया-छविवला एहि बिम्बकेँ लाक्षणिकताक संग पारदर्शी बनाओल जा सकैछ। मुदा, एहि काव्य-बिम्बमे एकटा घटनाक संकेत सेहो अछि। कुरूप वास्तविकता पर आजादीक प्रकाश। एहि प्रकाशमे ई कुरूपता सेहो पारदर्शी भय जाइछ। स्थिर जलकेँ प्रखर रश्मि तोड़ैछ। मेरीगंजक ई डबरो चालीस बरिस बाद अनचोके पारदर्शी बनि गेल अछि। ओहि पर सुरूजक प्रकाश लम्ब जकाँ पड़ि रहल अछि– काई केँ तोड़ैत। स्पष्ट अछि जे "मैला आँचल"क नाटकीयतामे अनेक तत्त्व एक दोसरामे घुलिमिलि जाइछ, मुदा नाटकीयता एहि अन्तर्लयनसँ अलग कोनो पहिचान नहि बना पाबैछ, ईहो सत्य अछि। जनताक बीचक अन्तर्विरोधकेँ प्रकट करबा लेल एहि नाटकीयताक अतिरंजित आ प्रकृत दूनू रूपक लेखक सभ उपयोग कयने छथि। अतिरंजना सभ अतिकाय नहि अछि। छोट-छोट अतिरंजना सभक ई क्षेत्र सरिपहुँ आकर्षक बनल जाइत छैक। यथार्थ आ अतिरंजनाक कलात्मक उपयोग पर जार्ज लुकाच द्वारा उठाओल रुचिगर बहसक संदर्भमे किछु बात अवस्य कहल जा सकैछ। रूपक आ अतिरंजना सभक समकालीन स्वरूप पर विचार करैत लुकाच ई देखाबय चाहैत छथि जे मध्य-युगीन धर्म-रूपक आ कथात्मक अतिरंजना सभमे समकालीन रूपक आ अतिरंजना सभ एहि अर्थमे भिन्न छैक जे ओहिमे लक्षित विषय भिन्न छैक। मुदा, भिन्न लक्षित विषय सभक उपरान्तो रूपक आ अतिरंजना सभ अपन अभिहितार्थमे देश कालसँ स्वतंत्र सत्यकेँ प्रकट करैत बूझि पड़ैछ।

रेणु समकालीन यथार्थवादक लेल ने तँ कोनो एहेन रूपक गढ़लनि आ ने हुनक अतिरंजने एहेन अछि, जकरा द्वारा कोनो स्थिर सर्वव्यापी मानवीय नियतिकेँ लक्षित कयल गेल हो। इतिहासक सत्यकेँ रूपकक आवश्यकता प्रायः नहि होइछ। इतिहासक समीकरण लेल रूपकक जाल पसारनाइ रेणुकेँ "मैला आँचलमे अवश्य इष्ट नहि छनि। अतः "मैला आँचलक" छोट-छोट अतिरंजना सभकेँ हमरा ग्रामीण जीवनक यथार्थ–नाटकीय यथार्थक रूपहिमे ग्रहण करक होयत। ई अतिरंजना सभ दृश्यक प्रकाशनमे, प्रतिक्रियाक नियोजनमे, वक्ता वा कर्त्ताक व्यक्तित्वमे संयोजित नाटकीय तत्त्व छैक। एहिसँ बेसी लेखक एकटा महत्त्व नहि दैत छथि।

कला-मूल दिस घुरैत समकालीन यथार्थक एकटा विस्तारित पक्ष पर विचार करब अपेक्षित भय जाइछ। जनताक मध्य बढ़ैत एहि अंतर्विरोध सभक चेन्ह की थीक ? जनताक सामान्य विचारधाराक भीतर आ ओहि अनुरूप हुनक भावधाराक गहींर परिवर्तनकेँ स्पष्ट करएमे हुनक चेन्ह अंतर्निहित छैक। ई विचारधारा आ भावधारा सभ कोनो नव प्रतिवेशी

यथार्थकेँ जनम दैत छैक, ई प्रश्न कतेको संदर्भमे राखि कय देखले पर संगत रूपमे हमरा बुझा सकैत अछि।

भारतीय उपमहाद्वीप नहि, सम्पूर्ण एशियाई–अफ्रीकी जनगण एहि कालखंडमे मुक्ति–आंदोलन सभक एकटा नव संदर्भमे परिचालित जनगण अछि। एहेन स्थितिमे हुनक क्रांतिकारी तत्त्व सभकेँ चिन्हाइ हमर कर्तव्य थीक। एहि महान् आकांक्षाक लक्ष्य मात्र राष्ट्रीय मुक्तिसँ सीमित नहि होइत छल। ओहू दिश सुदीर्घ कल्पना सभ छल जाहिमे राष्ट्रीय जनतंत्रक पुनर्गठनक प्रश्न सेहो सामित छल। एहि लक्ष्यक प्राप्तिक संग-संग जे समस्या सभ उत्पन्न भेल छल, ओहिसँ जनताक भविष्य-कल्पनाक अनेको सीमा प्रकट होमय लागल छल। अपने भविष्य-कल्पना सभकेँ साकार करबाक सफल लड़ाइ लड़यवला एहि जनगणक राजनीतिक वास्तविकता नहि, सामाजिक अस्तित्वक चेतना सेहो बदलि रहल छल। सामाजिक अस्तित्वक एहि बदलैत चेतनाक संदर्भ ''मैला आँचल'' क विचारधारा तथा भावधारा सभक आन्तर्यमे जाहि व्यापकताक संग– नाटकीय व्यापकताक संग प्रकट होइ'छ, ओहि दिस ध्यान गेनाइ स्वाभाविके छल।

''मैला आँचल'' सामाजिक चेतनाक आन्तर्यक एकटा तिक्ख आ प्रौढ़ उपन्यासतँ अछिए, भने ओकर आरो जे सीमा सभ हो। ई सम्पूर्ण व्यवस्था ( विश्व-व्यवस्था ) क अंतर्विरोधक परिणाम छल वा जनताक अपना मध्यक अंतर्विरोधक सेहो ओहिमे कोनो सहयोग छल, ई प्रश्न हमरा समक्ष अछि।

सामाजिक-आर्थिक एकीकरणक इच्छा आ भावनाक विस्तारमे की ई लक्षित नहि होइछ ? एहि एकीकरणक भावनाक पाछाँ एकटा अत्यन्त महत्त्वपूर्ण चालक शक्ति छैक जनाकाँक्षा। दोसर, लाक्षणिक विशेषताक रूपमे हम गतिशीलताकेँ लय सकैत छी। वस्तुतः ई एकटा गतिशील भावना छैक, जकर लक्ष्य भविष्यक सामाजिक स्वरूप अछि। ''मैला आँचलमे एहि गतिशीलताकेँ ओकर विरोधक भीतर सक्रिय रूपमे प्रस्तुत कय लेखक समकालीन यथार्थक सामान्य रूपकेँ प्रतिष्ठिति कयलनि। गामक जनतामे राष्ट्रीय जीवनसँ एकीकरण सामान्य आकाँक्षा विकसित होइत देखायल गेल अछि। मुदा ई लक्ष्य सेहो सर्वथा एकात्मक रूपमे संघटित नहि छैक। अनेको राजनीतिक दृष्टिमे ई आकांक्षा बँटल अछि। गांधीजी लेल कठनौर बहा हम हुनका अमना मोनोसँ बाहर कय देल। ''बाबा वामनदास आ बालदेव'' एहि निष्करुण व्यवस्थाक परिणाम थीक।

''मैला आँचलक'' समाज व्यापाररत समाज छैक। सामाजिक आ अन्य प्रकारक व्यापार आ क्रिया-कलाप सभमे लागल जनताक जिनगीकेँ गामक केन्द्रमे राखि देखबाक दोसर महत्त्व सेहो छैक। गाम, जे कहियो नदीक द्वीप जकाँ अलग-अलग, निरीह लगैत छल, ओहि सँ एकटा विशाल धार आ शक्तिक उत्सर्जन भय रहल छल। समकालीन यथार्थक एहि अर्थकेँ ''मैला आँचल'' सभसँ बेसी सार्थक रूपमे आ कलात्मक

प्रभावशीलताक संग व्यक्त करैछ। ई गाम सभ पहिलुक बेर एहेन ऐतिहासिक शक्ति वा धारक उत्सर्जन नहि कयने छल। पूर्वी सामंती साम्राज्य सभक रूपमे अतीतमे सेहो एहेन धाराक उत्सर्जन भय चुकल छल। एहि बेर जनताक सक्रियता आ ओकर हस्तक्षेपसँ एकटा नव जनतांत्रिक धाराक उत्सर्जन भेल।

आजादीक संग इतिहासक एकटा आर धार फूटि गेल छल। छोट-छोट प्रश्नवला दुनिया फेरसँ महत्त्वपूर्ण भूमिकामे सोझा आबिगेल छल। प्राण-शक्ति परिवर्तनक छटपटीमे छल। ओ प्रायः हमर राष्ट्रक जनमक छटपटी छल जकरा संग देश-काल जनक भविष्य जोड़ल छल। जनता संघटित नहि छलैक। जन-संघटन पर कांग्रेसक अधिकार तँ छल, मुदा आस्ते आस्ते ओकर टूटनाय प्रारंभ भय गेल छल। एहि विशाल देशवला राष्ट्रक राजनीतिक स्वरूप एकरँग नहि छल। किछु क्षेत्रमे, विशेष कय ग्रामीण क्षेत्रमे बदलैत राजनीतिक स्थिति सोझे प्रतिकूल नहि भय रहल छल। मुदा, ओहिमे राष्ट्रीय प्रक्रियाक गतिविधिक प्रवेश भय रहल छल।

गियानी बालदेव आ वामन दुनूकेँ काल पाछू छोड़ैत जा रहल छल। कालीचरण वासुदेवकेँ बाट-घाटमे बुझबैत अछि– सुसलिंग पार्टी ! इएह पार्टी असल पार्टी छैक। गरम पार्टी ! किराती दलक नाम सुनने छलँहु ? ... वएह पार्टी ! एहिमे केओ लीडर नहि अछि। सभ, सभ लीडर अछि। सुनलौं नहि। हिंसाक गप्प तँ बुरजुआ लोक बजैत अछि। बालदेवजी तँ बुरजुआ छथि, पूंजीवादी छथि।... एहि पोथीमे सभकिछु लिखल अछि। बुरजुआ, पेटी बुरजुआ, पूंजीवाद, पूंजीपति, जालिम जमींदार, कमायवलाखायत चाहे जे हो।" जनताक बोधक ई राजनीतकि अंतर्विरोध एकटा राष्ट्रीय लक्ष्यकेँ प्राप्त करैछ वा नहि, ई एकटा दोसर प्रश्न छैक; मुदा राष्ट्रीय इतिहासक एकटा नव आरंभ लेल तँ एकरा समकालीन मानहिपड़त। गाममे वामपंथी शक्ति सभक प्रवेशक प्रारंभ' ३०केँ लगभग होइछ आ अगिला बीस बरसमे किसान आंदोलनक गरम लहरि समस्त देशमे पसरि गेल। '३९मे अखिल भारतीय किसान सभक राष्ट्रीय अधिवेशन अपन अलग पहिचान बनबैछ।" ४६ मे सोशलिस्ट पार्टी बनैछ आ भावात्मक शक्ति संग एकर प्रवेश गामक राजनीतिमे होइछ। कम्युनिस्ट पार्टीक प्रभाव सेहो गाममे उभरैछ। पार्टी सभ चाहे जाहि रूपमे सक्रिय होय, राजनीतिमे विविधता आरंभ भऽ जाइछ। कांग्रेसक अतिरिक्त स्थानीय विकल्प जन्म लैत अछि। एहि स्थानीय विकल्प सभक उत्पत्ति, एकर एकाइक संयोजन भारतीय राजनीतिक इतिहासमे एकटा समकालीन घटना अछि।

जनताक सामान्य विचारधाराक नव संयोजन एहि क्रममे आस्ते-आस्ते मुदा दृढ़ताक संग होइछ। सोशलिस्ट पार्टीक सभा होइछ।

ई समाचार संथाल टोलीकेँ विशेष रूपसँ आन्दोलित कयलक। समाजक सभसँ पिछड़ल आ प्रायः बाहीर हिस्साकेँ ई समाचार एतेक आन्दोलित किएक कयलक ?

अस्पताल खुलबासँ सँ हिनकामे कोनो नव लहरि नहि आयल छल। भरिसक आधुनिक जीवन-पद्धतिक प्रति परंपरित उदासीनता एकर कारण छल। मुदा, एहि सभामे एहेन की छैक जे हुनक जीवन्-पद्धतिसँ जोड़ल अछि, हुनक सामाजिक अस्तित्वक लेल प्रासंगिक अछि। 'जमीन जोतयवलाक' ! ई नारा एहि श्रमिक आदि-जन धरिकेँ अपन अर्थ देने अछि। वस्तुतः ई नारा नहि, हुनक सामाजिक अस्तित्वक घोषणा अछि। कर्तव्यनिष्ठ आ मेहनती संथालक दिमागक कतेक दिनसँ ओझरायल गिरहक सही सोझरायब।

"चारु दिसि स्वस्थ, सुडौल, स्वच्छ आ सरल मानवक भीड़। बिरसा माँझी एहि नाराकेँ गीतमे गाबि रहल अछि। जनभावनासँ ओकरा एक करबाक प्रयासमे अछि। "जाहिरे जोतिबे, सोइरे बोइब...." । सनियाँ मुरमू कालीचरणक प्रत्येक बात पर खिखिआकेँ हँसि दैत अछि। एहि हँसीमे ने तँ व्यंग्य अछि, ने विद्रूप। एहिमे मोनक एकटा सरल उल्लास अछि जे जिनगीक करोट लैत करतबक हुलास थीक। जन-आंदोलनक पहिल लहरिक स्पर्श। मंदिर पर संथाली गीत। जेना कोनो मांगलिक उत्सव हो ! धरतीपुत्रक एहि भावनात्मक करोटमे समयक सभटा अदृश्य लेख पढ़ल जाइछ। कोनो समय जमींदार सभ हिनक मङनीक (बेदाम) श्रमशक्ति आ सरल सहकारिताक खूब उपयोग कयलक। आब ई श्रम-शक्ति अपन हितमे सक्रिय भय रहल अछि।

जंगलमे बसल ई जन सभ परती तोड़ने छल। देसक परती तोड़ि ई धरती-पुत्र सभ अन्न उपजयलक। मुदा, हिनक सामाजिक अस्तित्व सामान्य किसानो सन नहि बनि सकल। ई कठोर अनुभव हुनक अस्तित्वक चेतनामे पैसि गेल छल। जमींदार निलहे साहब सभ मिलि हिनक शोषण कय रहल छल। शोषणक एहि प्रक्रियासँ अपरिचित मानव सेहो शोषणक सिद्धांतसँ परिचित नहि छल। हुनकामे एहि नाराक वास्तविक प्रतिक्रिया भेल छल आ ओ मरब - मारब लेल ठाढ भय गेल रहथि। कृषक श्रमिक-दास सभक– विद्रोहक कथा इतिहासमे अपरिचित नहि छल। पूर्णियाक संथाल जागि रहल छल, छोटानागपुरक आदिवासी समाजमे हलचल मचि गेल छलैक, बंगालमे भू-श्रमिक संथाल किसानक संग होमय लागल। तेलंगनाक किसानक संघर्षक हवा एम्हरे आबि रहल छल।

एहि घटना-क्रम सभक एकटा राष्ट्रीय परिदृश्य उभरि रहल छल आ हमर समकालीन यथार्थक एकटा बदलयवला दृष्टिकोण बनि रहल छल। एहि घटनाक्रमकेँ अनठा कय भारतीय यथार्थक समकालीनताकेँ बुझल नहि जा सकैछ। जमींदार लोकनि वास्तविक कास्तकारकेँ भूमि-व्यवस्थासँ उच्छेदित कय देने छलाह। ओ वस्तुतः भूस्वामिए जकाँ स्वतंत्र छल। किसान संघर्षक पृष्ठभूमिमे अहि आर्थिक नियोजनकेँ सेहो सामिल करबाक चाही। ई व्यवस्था गामकेँ दरिद्र बना देलगक–आर्थिक रूपसँ सेहो आ सामाजिक रूपसँ सेहो। गामक सामाजिक जीवन एहि नव सामंती अर्थतंत्रक पीड़ा सहि रहल छल। आजादीक बादो सामाजिक वर्गक एहि हिस्साक आशा पूर्ण नहि भेल छल। अतः जमीन जोतयऽवलाक

नाराक संग श्रमिक जनताक भावना अविच्छिन्न रूपसँ जोड़ल छल। ई लहरि सामान्य कृषक जनताकेँ अपना दिस तीव्र गतिसँ घीचलक।

गाम-गाममे लाल झंडाक लहरि व्यापि गेल। किसान राज कायम हो। मजदूर राज कायम हो। "रामराजक विकल्पक रूपमे ई नारा बेसी वास्तविक छल। मुदा, एहि वास्तविकताकेँ पहिचान एखन बाकिए छल। एहि चीन्हारक अपन स्थिति सभ छल। एतबे अपना-आपमे एकटा क्रांतिकारी प्रक्रिया आरंभ लेल पर्याप्त छल। एहि वर्गक अपनहि संस्कार एहि वास्तविकतासँ टकरा जाइत छल। आदमीक शोणितसँ रंगल लाल झंडाकेँ लय आत्मकेँ एखनो क्लेश भय रहल छल। नाटकीय ई अछि, मुदा, ई नाटक जीवनक एकटा विचित्र हिस्सा बनल अछि।

एहि महान् आ विचित्र देशक उद्धार ब्रिटिश जुआकेँ उतारि फेकबाक बादो नहि भेल छल। ओकरा भारतक वर्तमान व्यवस्थो नहि तोड़ने छल। जमींदारीक समाप्तिक नारा वास्तविक स्तरपर कार्यकारी सिद्ध नहि भय सकल छल। अनुभव छल। अनुभवसँ पता लागल जे नव जमींदार जनम लय रहल छथि आ हुनक स्वार्थ पुरान जमींदारसँ कोनो प्रकारेँ भिन्न नहि अछि। तैयो स्थितिमे फाट भय गेल छल। लोक अपन अधिकारक प्रति सचेत भय रहल छलैक। भूमि संबंधी हितक लड़ाइकेँ आब बचाओल नहि जा सकैत छल। "मैला आँचल" क समकालीन यथार्थ हमरा एतयधरि लय अनबामे समर्थ होइछ। क्रांतिक आह्वान बाहर-भीतरसँ कयल गेल भावधाराक भीतरक एकटा गंभीर परिवर्तन लक्षित करा रहल छल। परंपरित मानसिक निस्साहयता टूटि रहल छल। गामक एहि क्रांतिकारी पक्षमे कतेको नव राजनीतिक शक्ति उत्पनन भय गेल छल–सोशलिस्ट, कम्युनिस्ट आदि। एहि क्रांतिकारी प्रक्रिया अन्तर्विरोधमे सभसँ पैघ छल जनताक आपसी विभाजन। अपन मानसिकता आ भावनामे ई जनता एक नहि छल। मूल समस्या एहि जनकेँ विचार आ भावनासँ एकता बद्ध करबाक छल। एहि समस्या दिस इतिहासक तर्क हमरा ठेलि रहल छल।

शहर आ गामक नव समीकरणक एकटा चित्र "मैला आंचल" मे सेहो अछि, मुदा ओ असहयोग युगक चित्रसँ भिन्न अछि। असहयोग युगमे कायकर्ता सभसँ ई सेतु बनैत छलैक। आजादीक संग नव सेतुवारी तत्त्व उत्पन्न भेल। अस्पताल, संचारक मार्ग, अंचल विकास परियोजना आ पंचवर्षीय योजना सभ नव तत्त्वक संग गाममे प्रवेश कय रहल छल। जंगल सभ पर सरकारी नियंत्रण होमय जा रहल छल। एहि प्रकारेँ, एहि बेर गाम पर शहरक चौतरफा चोट शुरू भऽ गेल छल। ई गामक जड़ताकेँ तोड़ने छल। बिरसाक नव आधार अवश्ये गामक चेहराकेँ बदलवामे भीतरसँ प्रभावकारी भय रहल छल। एक प्रकारक जनतंत्र एकरहु संग जोड़ल छल। मुदा एहि जनतंत्रक छाहरिमे अन्य सांप्रदायिक शक्ति सभ सेहो पनपि रहल छल। ओकरा लेल देशक भविष्य बाहर नहि छल। एहि प्रकारेँ लोकस्तर पर कतेको विचारधारा सभ एक संग सक्रिय भय रहल छल।

सुमिरित दासक सिवाय एकटा बेतारक तार गाममे आबि गेल छल जे स्थानीयसँ पैघ समाचार दैत छल। पहिलुक बेर राष्ट्रक संग गाम भौतिक रूपमे, दैनंदिन जीवनमे जोड़ा रहल छल। मेरीगंजक कायामे देश प्रवेश कय गेल छलैक। एहि समकालीन यथार्थके "मैला आँचल" अपन पूर्व छविमयतासँ तँ प्रतिबिंबित करतहि अछि, संगे ओकर व्यवहारगत परिवर्तनकेँ सेहो रेखांकित करैत अछि। हम जनैत छी जे कोनो प्रकारक परिचलन क्षेत्रमे संरचनाक सीमा सभ बदलैत अछि। गामक सीमा सभ सेहो एहि नियमसँ बदलि रहल अछि। मुदा, एहि बदलनाइकेँ सेहो सामान्य लोक संदेह आ भयक दृष्टिसँ देखि रहल छलाह। एहेन लोकक प्रतिनिधित्व करयवला गामेक पुरानपंथी तत्त्व छलाह। जोतखी काका केँ एहि संपूर्ण परिवर्तनमे संभावित नाशक छाहरि देखाइ पड़ि रहल छलनि। हुनक एहि विश्वासक हिस्सेदार खाली स्त्रिए सभ नहि, गामक पुरुष-वर्ग सेहो छलाह।

एवम् प्रकारे "मेरीगंज" हमर समकालीन यथार्थक केन्द्र बनि जाइछ। अवश्ये प्रत्येक गाम केन्द्रीय महत्त्वकेँ प्राप्तक करबाक स्थितिमे नहि छल। आइयो क्षेत्रीय असंतुलन बनल अछि आ कतेको अर्थमे आओरो बढ़ल बुझाइत अछि। विशाल हिन्दी क्षेत्रमे तँ एकर संभावना सभ सेहो बेसी अछि। जे हो "मेरीगंज" आ ओकर अंचलक एहि परिवर्तनकेँ इतिहासक एकटा कड़ी जकाँ ग्रहण कएल जा सकैछ। मेरीगंजक वास्तविकता ई सिद्ध करैछ जे गाममे मालिक तथा अन्य शोषक लोकनिक अत्याचारक बढ़ैत प्रतिरोधक समय आबि गेल अछि।

किसान वर्ग-स्थिति आ वर्ग चरित्र केँ लय हुनक क्रांतिकारी भूमिकाक प्रति आब संदेहात्मक दृष्टिकोण व्यक्त नहि कयल जायत। खासकय तेसर दुनियाक संदर्भमे तँ कृषक समाजक परिवर्तनकारी भूमिकाकेँ प्रायः सभ स्वीकार कयलनि। मुदा, किसानक बीच जे सामाजिक अन्तर्विरोध अछि, से हुनक वर्ग-चरित्रक एहि रूपान्तरंक पृष्ठभूमिमे "बलचनमाक" संग पहिल बेर आयल अछि। आवश्यकता एहि बातक अछि जे एहि रूपांतरणक कठिनाइ सभक दिस दृष्टि देल जाय। किसान क्रांतिकारी नहि होइछ, किसान मजदूर वर्गक नेतृत्वमे क्रांतिकारी भूमिका सम्पन्न कय सकैछ, आ किसान असगरे कृषि क्रांतिमे समर्थ अछि–एहि तीन अलग-अलग धारणा सभमे कोनो कालमे वैकल्पिक चुनाव संभव छल, मुदा, आइ ई सर्वमान्य अछि जे भारतीय (एशियाइ) संदर्भमे कृषि क्रांतिक संभावना सभ सेहो अन्य जनगणक क्रांतिकारी तत्त्व सभ एकहि भऽ कऽ सार्थक बनि सकैछ। "मैला आंचल" मे किसानक संग मजदूरक नारा सभ सेहो एहि सार्थकता दिस संकेत करैछ।

फ्रांत्स फेनोक पुस्तक "अभिशप्त भूमि, (लेदामने दला तेरे)' केर कृषि-क्रांतिसँ "मैला आंचल" क वास्तविकता भिन्न अछि, एकरा अनेक अनेक शब्दमे कहबाक प्रयोजन नहि। कृषि क्रांति सेहो अपूर्ण रहि जायत। किसान जनताक भीतर अन्तर्विरोधक चित्रण

कय रेणु प्रायः एकरा स्वीकार कयने छथि। किसानक सामुदायिक परंपरा सभ असगर ओकरा एकताबद्ध करबामे राजनीतिक रूपमे असमर्थ अछि।

रेणु "मैला आंचल" मे संथाल-संघर्षक संदर्भमे एहि लक्ष्यकेँ लक्षिते टा नहि कयने छथि:; अपितु ओकर राजनीतिक कारण दिस संकेत सेहो कयने छथि। मेरीगंजक संथाल सशस्त्र संघर्ष लेल उताहुल भय जाइत छथि, मुदा हुनका सांगठनिक आधार नहि छनि। फलतः ओ मारि खाइत छथि, आ हुनक आन्दोलन दमनक भक्ष्य भय जाइछ। मुदा, एहिसँ एतबा तँ सिद्ध भय रहल अछि जे गामक छोट गरीब आ अर्द्ध सर्वहारा किसान स्वतः स्फूर्त ढंगसँ सामंत विरोधी पूंजीपति विरोधी भेल जा रहल अछि। एहेन स्वतः स्फूर्त आन्दोलन अपन लाक्षणिकताक लेल निश्चित रूपसँ ध्यानाकर्षक अछि।

एहि आधारक संग उपरि-संरचनाक क्षेत्रमे बेसी व्यापक परिवर्तन सभकेँ "मैला आँचल" मे चित्रित कयल गेल अछि। गामक भावधाराक संरक्षणशीलताकेँ नकारल नहि जा सकैछ। मुदा ई संरक्षणशीलता परम तत्त्व नहि थीक। इतिहासक क्रिया-कलापक भीतर ई भावना सेहो टूटल अछि। आइ गामक ओहि भावधारामे सोहो दरार पड़ि गेल अछि। ई दरार सभ राजनीतिक प्रभावक कारण आरो चाकर होइत जायत। मुदा, हिनक क्रांतिकारी रूपांतरक संभावना की छैक ? रेणु एहि संभावना सभकेँ सम्पूर्ण कथा-क्रममे रेखांकित करैत बुझाइत छथि। ई घटना सभ जे गामक जीवनक भावधारामे परिवर्तन आनि रहल छैक, कोनो पैघ घटना नहि थीक। कोनो सामाजिक आंदोलन एहि घटना सभक पृष्ठभूमिमे नहि अछि। तैयो सभ किछु बदलैत लगैत अछि। नव पीढ़ीक क्रिया-प्रतिक्रिया एहि संदर्भमे विशेष रूपसँ ध्यानमे अबैछ, जाहिमे परिवर्तन एकटा विचार शक्तिक रूपमे भौतिक क्रिया-कलाप बनि जाइछ। ई परंपरागत भावना एकटा बृहत्तर सामाजिक संस्था जकाँ गाममे काज करैत रहैछ। एकर टूटब एकटा लक्षण थीक, सांकेतिक, तैयो महत्त्वपूर्ण।

भीतरी स्रोतक सभटा यथार्थकेँ जोड़बाक जे चेष्टा यथार्थवादक नाम पर बादक उपन्यासमे बढ़ैत नजर अबैत अछि ओकरा लगभग अलग राखि "मैला आँचल" लिखल गेल अछि। ई भीतरी स्रोत अवचेतनमे समस्त मानवीय यथार्थकेँ बंदी बनवैत अछि। गामक जीवनमे एहेन भीतरी स्रोत "अवचेतनक" ओतेक नहि जतबा सामाजिक विश्वास आ संस्कार सभमे अछि। एहि प्रकारसँ अवचेतनसँ वर्गीकृत चरित्रक अपेक्षा "मैला आँचल" क पात्र "आर्कटाइप' अछि। ई आर्कटाइप" भारतीय ग्राम-समाजक छैक आ एकर प्रतिरूप शहरी समाजमे भरिसके भेटत। एखन एकर चर्च एही ठाम छोड़ि हम भावधाराक रूपहिमे एकर अंतःसत्ता केँ चिन्हबाक प्रयास करी। ई अंतःसत्ता एकटा सामाजिक निरंतरताक जड़तासँ पीड़ित अछि अवश्य मुदा बाहरी शक्ति ओहि पर तीव्र गतिसँ क्रिया कय रहल अछि आ ओकर टूट ब प्रायः निश्चित अछि। ई भावधारा एकटा सामाजिक विकासक स्तर पर ठमकल बुझाइत अछि। मुदा, घटना सभ एहि तरहेँ घटित

होइत रहैछ जे ओहि परंपरित विश्वास आ पद्धति सभ पर सेहो चोट पड़ैछ। प्राचीन विचार आ रूढ़िक सामाजिक संस्था सभक संग-संग क्षरण भय रहल अछि।

गाम मे अस्पताल फुजल अछि। ई क्षेत्र अपन कालाजार आ मलेरिया लेल प्रसिद्ध अछि। एहि संस्थानकेँ संदेहक दृष्टिसँ देखल जाइत रहल अछि। मुदा, जखन शासके वर्ग उपयोग कय रहल हो तँ सामान्य जनक शंका आस्ते आस्ते समाप्त भय जाइछ। यदि तहसीलदारक बेटीक दवाइ अस्पतालक डाक्टर कय सकैछ तँ आनो तँ ओकर सेवा प्राप्त कय सकैछ। ई अनुभवक बड्ड सोझ सन निष्कर्ष अछि। एहि उपयोगी संस्थाक उपयोग यद्यपि संथाल नहि करैछ तैयो एहिसँ एकर व्यर्थता नहि सिद्ध होइछ। जंगली सभकेँ मलेरिया कालाजाार नहि होइछ। एहि अस्पतालसँ कथाक मूल साहचर्य अछि। गाम बदलि रहल अछि एकर लक्षण थीक धरती पर एहि संस्थान सभक उदय।

डाक्टर छुआछूत नहि मानैत अछि। दुसाध प्यारूक बनाओल खाइत अछि। डाक्टरक बाजा भोरे भोर पुछैत अछि– की आइ अहाँ मुँह नहि धोने छी ? जुलुम गप। एहेन सर्वशक्तिशाली व्यक्तिक समक्ष सभ कल जोड़ि ठाढ़ भय जाय तँ की आश्चर्य ? मुदा ई प्रतिक्रिया तात्कालिक थीक। स्थायी प्रतिक्रिया तँ बादमे होइछ। डाक्टर अपन जाति बतबैत अछि–डाक्टर ! गामक लोक बूझि नहि पबैत छथि चाहे संतुष्ट नहि होइत छथि। फेरो (आगिला) प्रश्न– बंगाली थीकहुँ कि बिहारी ! प्रासंगिक गप। जाति नहि सही, प्रांतक आश्रम तँ रहबाक चाही ओकरा !!

समकालीन यथार्थक अर्थ, वर्तमान भारतीय संदर्भमे बदलि रहल अछि। ई परिवर्तन समस्त पूर्वकल्पनाक उपरान्तो भारतीय सामाजिक प्रारूपक पूँजीवादकेँ विकसित प्रारूपमे रूपांतरणे अछि। इएह रूपांतरण एकटा एहेन व्यापक कार्य-क्षेत्र सँ संबंद्ध छैक, जकर सामाजिक आ भौतिक वास्तविकताक प्रारूप अनेको पुरावशेष सभसँ निर्मित अछि।

बहुसंरचनावला एहि प्रारूपमे अनेकता आ जटिलताक भेनाइ स्वाभाविके अछि। फलतः ओकर यथार्थमे एक प्रकारक जीवित अन्तर्विरोधकेँ हम कार्य-व्यापार, संस्कार विश्वास सभ मे अर्थात् सम्पूर्ण जीवन पद्धतिमे व्याप्त देखि सकैत छी। भारतीय संदर्भमे, खासकय ग्रामीण समुदायवला विशाल भारतक संदर्भमे एहि समस्त जटिलताक अपन महत्त्व अछि, जकरा रेणुक रचनात्मक चेतना नीक जकाँ आत्मसात करैत अछि। संरचात्मक प्रारूप भीतरक कार्य-कलापकेँ देखैत जँचैत छथि आ इएह चीन्हार हमरा अतिथ्य दिस लऽ जाइत अछि जे मध्ययुगीन वास्तविकता सभ आइयो हमर गतिशीलतामे बाधक तत्त्व जकाँ प्रकट भय प्रत्येक जनवादी लहरिकेँ पाछाँ ठेलि दैत अछि। पश्चिमी सुधारवादी आंदोलन सभमे एहि बाधक तत्त्वक सामना करबा लेल अपन क्षेत्रमे एक प्रकारक द्वैत वादकेँ स्वीकार जकाँ कय लेने छलाह। भारतीय संदर्भमे धर्म-सुधार वा सामाजिक सुधारक आंदोलन अपन प्राथमिक स्थितिसँ कहियो आगू नहि बढ़ि सकल आ ओकर परिपक्वता

संदिग्ध बनल रहल। अपन वर्तमान संक्रमणक कालमे सेहो ओहिमे अनेक अंतर्विरोध जहिना-तहिना बनल रहल।

आर्य समाजक आंदोलन जतवा पश्चिमी भारतमे सफल भेल, ओतवा किसान क्षेत्रवला पूर्वी हिन्दी प्रदेशमे नहि। तेँ ओ ने व्यापक बनल आ ने परिपक्वे। रेणुक परिवार स्वयं आर्यसमाजी छल, मुदा एहि आर्यसमाजी परिवेशकेँ सेहो रेणु आश्वासन जकाँ ग्रहण नहि कयलनि। हुनका ई लहरि प्रत्यावर्तित होइत सन लगलनि। वस्तुतः आर्यसमाजक आन्दोलन किसान जनताक बीच पसरि नहि सकल। बेसी सँ बेसी ओ सामाजिक द्वैतहिकेँ बढ़ौलक आ सांप्रदायिक आवेशसँ उपर कहियो नहि उठल। एकर तुलनामे राष्ट्रीय मुक्तिक राजनीतिक लहरि बेसी व्यापक साबित भेल। ओ ग्राम-समाजक सीमा सभकेँ मात्र स्पर्शे नहि कयलक, ओकर विचारधारामे सेहो प्रवेश पओलक। अनेको आन अन्तर्वर्ती धारा सभ सेहो एहि मूल धाराक संग एक बनि गेल। एहि प्रकारेँ विचारधारा सेहो एक प्रकारक एकता संभव भेल। रेणुक समकालीन कथा-साहित्यक एक पक्ष एहि प्रक्रियासँ सेहो निर्धारित होइछ। ई प्रक्रिया जनताक भावधारा आ विचार-धाराक संक्रमणक परिस्थितिकेँ समस्त जटिलताक मध्य प्रकट करैछ, ओकर अन्तर्विरोधकेँ बेर-बेर प्रकट करैछ।

बहुसंरचनावला सामाजिक प्रारूपमे जनताक बीचक अन्तर्विरोध आरो विविध होइछ। ग्रामीण समाजक संरचनामे ई विविधता-प्रायः एकटा लक्षण जकाँ तँ नहि छैक, ओकर अनेको स्तर छैक। रेणुक यथार्थवाद एहि समकालीन स्तर सँ अपन स्वरूप निर्धारित करैछ। जाहि व्यक्ति सभकेँ रेणुक नाटकीयता एतेक नीक- लगैत ओ सेहो ओकर अन्तर्विरोधक एहि सामाजिक स्रोत सभ दिस संकेत कय संतोष कय लैत छथि। हमरा लेल एहि नाटकीयताक सामाजिक स्रोत सभक पहिचान एहि लेल महत्त्वपूर्ण अछि जे हमरा ओहिमे समकालीन यथार्थक गति सभ अंतर्हित देखाइ पड़ैत अछि।

एहि अर्थमे रेणुक यथार्थवाद प्रेमचंदक यथार्थवादक नजदीक अछि। रेणु ओहि समकालीन परिचयमे किछु जोड़बाक यथासंभव चेष्टा कयने छथि आ हुनका कनैक सफलतो प्राप्त भेल छनि। कनेक एहि लेल जे ई समकालीन यथार्थ जाहि तीव्रतासँ रूपांतरित भय रहल अछि, ओहि सँ रेणु ठीक-ठाक ताल-मेल बैसाबयमे आ संग-संग चलबामे जेना पिछड़ि गेलाह। अपन दूटा प्रारंभिक उपन्यासक बाद बृहत्तर यथार्थक एहि परिवेशकेँ ओ छोड़ि देलनि आ ओकर जगहपर एहेन क्षेत्रक चुनाव कयलनि जे एहि परिदृश्यक अंग तँ छल, मुदा ओ ओहि संपूर्ण वास्तविकताक संश्लिष्टता केँ ठीक-ठाक आत्मसात् करबामे समर्थ नहि छल।

संक्रमण-कालमे किसान-समुदायक विभेदीकरणकेँ प्रेमचंद आ रेणु समान रूपसँ एकटा आतंकवादी यथार्थक रूपमे देखलनि। एहि विभेदीकरणसँ पहिनहसिँ अबैत भेद आरो गंभीर भय गेल आ किछु नव आन्तर्य सेहो प्रकट भेल। किसान व्यापक रूपमे उत्पादन-

चक्रमे घिसिआयल जा कय कोना अपन जड़तासँ टूटि रहल छल, एकर त्रासद प्रक्रियाकेँ प्रेमचंद आ रेणु घटना-क्रमक दू अलग-अलग बिन्दुपर चीन्हने छलाह। प्रेमचंद इतिहासक जाहि बिंदुपर एहि आततायी प्रक्रियाकेँ देखने छलाह ओ बड़ निराशाजनक छल। "गोदानक" किसान वर्ग एहि आततायी यथार्थक बीच घिरल अछि आ ओकर सम्पूर्ण जीवन एहि टूटबाक त्रासदी प्रकट करैत अछि। संक्रमणक प्रक्रियामे जाहिठाम कृषि-उद्योगमे संक्रमण भय रहल अछि, ओहिठाम छोट किसान अपन-अपन जमीनसँ टूटि मजदूर बनि रहल अछि। डॉ. रामविलास शर्मा ठीके लक्ष्य करैत छथि जे होरी जकाँ प्रेमचंदक किसान कहियो असगर नहि रहल।

आजादीक संग-संग साम्राज्यवाद आ भारतीय जनताक मूल अन्तर्विरोध समाप्त नहि भेल छल, मुदा सामान्यजनक मोनमे व्यवस्थाक एकटा नव चित्र उत्पन्न भय गेल छलैक। अपन देशपर अपन लोकक शासन छल। ई अपन लोक खाली जानल-मानल नहि छलाह, एकटा दीर्घ लड़ाईमे जनताक नेतृत्व सेहो कय चुकल छलाह। हुनका सभसँ जनताकेँ आशा छलैक। मुदा, शीघ्रहि जनताकेँ ई अनुभव भय गेलैक जे ई लड़ाई खतम नहि भेल छलैक। व्यवस्था बदलि गेल मुदा, यथार्थ नहि बदलल अछि। प्रेमचंदक देवीदीनक डर सत्य साबित भय गेल छल। "जनताक व्यवस्था" जनता सँ निरंतर अलग भेल जा रहल छल आ एहि प्रकारेँ अपनहि "व्यवस्था" सँ हमर अन्तर्विरोध नव रूपमे ठाढ़ भय गेल छल।

एहि नव व्यवस्थामे पुरान तत्त्व अपनाकेँ पुनर्गठित कय रहल छल। जनता एहिसँ आँखि मुनि नहि सकैत छल। ओकरा समक्ष जे किछु घटित भय रहल छलैक, ओ आश्चर्यजनक छल। अपन सीमित पृष्ठभूमिमे रेणु "मैला आंचल" मे एहि समस्याकेँ बड़ स्वच्छता आ यथार्थक संग प्रस्तुत कयने छथि। व्यवस्था आ जनताक अंतर्विरोधक बढ़ैत रूप केँ रेणु "मैला आंचल" क कथामे एकटा महत्त्वपूर्ण घटना-क्रम बना देलनि। ई घटनाक्रम निश्चित रूपसँ कोनो एकटा समस्याक केन्द्रमे विकसित नहि होइछ, एकटा सम्पूर्ण परिघटना जकाँ विस्तृत होइछ।

गामक किसान अनपढ़ नहि रहल, हुनका अनुभवसँ शिक्षा भेटल अछि। पछिलुक तीस चालीस बरखक परिघटना सभ हुनका प्रशिक्षित कयने अछि। ओ लोकनि सरकार, आजादी, जनता, नेता, अहिंसा, हिंसावाद आ कोनो हद तक क्रांतिक अर्थ सेहो बुझय लागल छथि। ओ अर्थक सूक्ष्मता नहि गुनैत छथि, परिणामसँ ओकर चरित्रक पहिचान बना लैत छथि। बालदेवजी पुरान नेता छथि, मुदा आस्ते-आस्ते ओ अपनहि जनतासँ अलग पड़ल कालीचरण आ बासुदेव एहेन युवकक दृष्टिमे "बुरजुआ" भय जाइत छथि। निरंतर अपन पक्षक समर्थन करितहुँ ओ पुनः अपनाकेँ प्रतिष्ठित करबामे असमर्थ छथि। कपड़ाक कोटाक आवंटन करबाक क्रममे हुनका दिनमे पन्द्रह-बीस बेर फुसि बाजय पड़ैत छनि।

जनताक दृष्टिमे हुनक सुराजी छवि धूमिल भय रहल छलनि संगहि ओ अपन पार्टीक तेज नवीकरणक चपेटमे आबि गेल छथि। परमीट बाँटबाक कोटा ओहि जन-नेतासँ छीनि एकटा आन व्यक्तिकेँ दय देल जाइत छैक। गामक तहसीलदार-महाजन-भूस्वामी कांग्रेस कमिटीक मेम्बर चुनि लेल जाइत छथि। बालदेवकेँ राजनीतिक संन्यास लेबय पड़ैत छैक आ वामनदास बजैत अछि – "भरतमाता जार बेजार भय रहल छथि।' बालदेव एकटा सुराजी कार्यकर्ता अछि ओ अंतमि दम धरि लड़त। मुदा, ककर बल पर। घटनाक्रम तीव्र गतिसँ बदलि रहल छैक। देशपर पूँजीपति महाजन भूस्वामी सबहक सम्मिलित कब्जा मजबूत भय रहल छैक। कालीचरण वासुदेव तँ अपने लोक छथि, मुदा राजनीतिक विभेद हुनका बालदेवसँ काटि देलक।

बालदेव–वामनदास बीतल कालक लोक भय गेलाह। ई काँग्रेसक सभसँ पैघ दुर्भाग्य थीक। राष्ट्रीय जनतंत्र पर एकटा आर शक्तिक कब्जा बढ़ि रहल छैक। स्वयं बालदेव-वामनदास अपन आँखिसँ सभकिछु देखि रहल छथि, मुदा ओ तँ एहि विराट मोर्चाक मामूली सिपाही छथि। अपन जनतासँ टूटि ओ आओरो पराभूत भय गेल छथि। हुनक एहि "अलगाव" आ दर्दकेँ के चीन्हत ? अपन जनतो तँ एहि पीड़ाकेँ नहि चीन्हैत अछि। ओ हुनके एहि लेल दोषी साबित करैत अछि। कपड़ा, चीनी आ किरासन तेलक पुरजी आब तहसीलदार विश्वानाथ प्रसाद देताह बालदेवजी किएक नहि देताह ? जनसामान्यक मोनमे ई प्रश्न उठैत तँ अछि, मुदा एकर राजनीतिक अर्थ केँ बुझियो कऽ जेना नहि बुझऽ चाहैछ। ई व्यवस्था केर अपन मामिला थीक। जनताक मोनमे एकटा आर भ्रम प्रायः उत्पन्न भय गेल अछि–"हुनकर बिलेक पकड़ा गेल।" ई भ्रम सर्वथा निराधार सेहो नहि अछि। बालदेवजी "बिलेक" चाहे नहि करैत होथि, मुदा हुनकासँ जाहि तत्त्व सभकेँ लाभ भेल अछि ओकरो तँ जनता देखैत अछि। खेलावन जे जमीन लेलक से कोन रुपैयासँ ! खेलावनक घरमे मोटाक मोटा कपड़ा जाकल अछि। जनतासँ बालदेवकेँ अलग होयबक ई किछु ठोस कारण छैक। आश्चर्य ई अछि जे ई समस्त भ्रम एहेन अछि जकर निराकरण बालदेव लेल राजनीतिक रूपेँ संभव नहि अछि। हुनका लग राजनीतिक साधनक अभाव अछि। ओ एकटा मामूली किसान अछि ओकरा कोनो समाचार नहि देल जाइत छैक।

राजनीतिक विभेदीकरणक एहि चित्रकेँ रेणु खूब विस्तारसँ आ गौरव दय कय प्रस्तुत कयने छथि। एहि विभेदीकरणक राष्ट्रव्यापी प्रक्रियाकेँ जनताक मध्य उभारबामे हुनका अभूतपूर्व सफलता भेटल अछि। ई समकालीन यथार्थक एकटा देखार विस्तार थीक, तात्कालिक आ सार्थक। प्रेमचंद युगमे राजनीतकि विभेदीकरणक ई प्रक्रिया खाली आरंभ भेल छल, ओ गामधरि पहुँचि नहि सकल। किसान आंदोलनक मध्य एकर विकास भेल आ आजादीक बाद एकर प्रक्रिया तेज होइत गेल। ई नव यथार्थ तँ नहि छल, मुदा समकालीन यथार्थ तँ अवश्ये छल। ई विभेदीकरण जनताक मोनमे कांग्रेसक छवि धूमिल

कय देने छल । कांग्रेस धनिकाहाक पार्टी थीक । ई अनुभव बालदेवक मोनमे सेहो एकटा कीलजकाँ गड़ि गेल छल । मुदा ओ कालीचरणक पार्टीमे तँ जा नहि सकैत छलाह ।

हुनका गांधीजीक खिस्सा मोन पड़ैछ । कालीचरणकेँ जेलमे सुनओल गेल खिस्सा । विश्वास एकटा संस्कारो होइछ जे कालक्रमे जड़ बनि जाइछ । समय एहिना बालदेवक भीतरक विश्वासकेँ सेहो जड़ कय देने अछि । जनतासँ फराक होयबाक जाहि पीड़ाक संग बालदेव आ वामनदास जुड़ैत छथि ओ एकटा अत्यन्त सजीव अनुभूति अछि, मुदा ओ निष्क्रिय भय गेल ? एकर मौलिक कारण प्रायः वर्गस्थिति छैक । कृषिमे पूँजीवादी क्रांति भय रहल अछि, सामान्य किसान एहि क्रांतिक "बेचारा" तत्त्व बनि गेल अछि । एहि बेचारा तत्त्वमे विभेदीकरण भयरहल अछि । राजनीतिक विश्वास बदलि रहल छैक । व्यवस्था आ जनताक अन्तर्विरोध नव रूपमे ठाड़ भय रहल अछि । एहि यथार्थकेँ रेणु मात्र लक्षिते टा नहि कयने छलाह, एकटा राष्ट्रव्यापी तत्त्वक रूपमे स्थापितो कयने छथि । समकालीन यथार्थवादक एहि रूपकेँ कलात्मक शक्तिसँ, जीवनक कथामे व्यापाररत जीवनकथामे रेणु अंकित सेहो कयने छथि । "मैला आंचल" क शक्ति एहि ऐतिहासिक अर्थबोधमे अछि ।

विभेदीकरण बढ़ि रहल छैक । चलित्तर कर्मकारक पार्टी सामने आबि रहल छैक– कम्युनिस्ट पार्टी । सोशलस्टि पार्टीकेँ छोड़ि ओ कम्युनिस्ट पार्टीमे आबि गेल छथि । गाममे नहि सही, अंचलमे ओकर जोर बढ़ि रहल छैक । प्रायः देशमे ओकर बढ़ैत जोरक एकटा कड़ी इहो हो । जनताक बीचक राजनीतिक अंतर्विरोधकेँ बढ़बाक ई जीवंतता एकटा सजीव प्रक्रियाक उपजा थीक । आजादीक उपरान्ते ई संभव भेल । साम्राज्यवादक जुआ उतरि गेलाक बाद ई लड़ाई सोझ होमक चाही एहेन घटित भैयो रहल अछि । बालदेव एकर साक्षी अछि ।

परिघटना सभक "कनकसन" कें सामान्य जनता सेहो बुझय लागल अछि । आजादी झूठ अछि की साँच, एकर प्रतिध्वनि सभ गाममे सेहो सुनाय लागल अछि । एतेक अर्थव्यापी तत्त्वकेँ समकालीन यथार्थके संदर्भमे बुझल जा सकैछ । किसानक वर्ग चेतनामे मजदूरकें संग देबाक प्रवेश साधारण नहि थीक । मुदा विरोध एकदम्मे खतम भय गेल हो, एहनो तँ नहि अछि । औराही हिंगनाक एकटा घटनासँ एकरा रेणु बड़ नाटकीय ढंगसँ स्पष्ट कयने छथि । स्पष्ट अछि जे एहि परिघटना सभक संयोजनमे रेणुक नाटकीय क्षमता खूब देखार होइछ । औराही हिंगनाक सोशलिस्ट मेरीगंजमे अपन नारा लगौलनि, ई स्थानीय जनताकेँ रुचिकर नहि लागल । एकरा कीं कहबैक ? जनताक बीचक अन्तर्विरोध आ एहि अन्तर्विरोधक स्रोत कतय अछि ? बालदेव स्वतः एकर स्रोत छथि ।

आजादीक प्रति हर ध्यानक अन्तर्विरोध सेहो समकालीने यथार्थक एकटा पक्ष अछि । आइ हम ओकरा चाहे जाहि रूपमे संशोधित कय ली, मुदा कहियो वामपंथी

राजनीतिकेँ ई ज्ञान छल कि आजादी फूसि अछि। आजादी फुसि नहि छल, ओ अपूर्ण छल। जनताक अजादीक कोमल आ कठोर दुनू तत्त्वक नाटकीयताकेँ रेणु प्रतिमुख कयलनि। मुदा, ई प्रतिमुखता मात्र विरोधक चमत्कार देखयबालेल प्रयुक्त नहि भेल अछि। ई प्रतिमुखता कोनो जीवन-चक्रसँ जोड़ल अछि। बालदेवजी संभ्रममे छथि, मुदा वामनदासकेँ सेहो आब अपना पर "परतीत" नहि रहल। हुनक विश्वास मूलः आहत भेल अछि। बालदेवक कथन अछि जे हुनका "भरम" भेल अछि। राजनीतिक शब्दावलीमे एकरा भटकावक ("डेविएशन"क) संज्ञा देल जाइत अछि। मुदा, वामनदासकेँ विश्वास छनि जे गांधीजी पार लगौताह। वामनदासकेँ गांधीजीक पत्र भेटैछ। ओ कुंठित हँसी हँसैत बजेत छथि–

"बापू केँ देखू। आब हम की करी। मोनमे संदेह होइछ–– मोन उदास भय जाइत छैक। फेर आदमीकेँ अपनो काम पर विश्वास कोना हो ––––।"

परिवर्तनक एहि अन्तर्विरोधक नाटकीयतासँ देशक तीन पीढ़ी समान रूपसँ प्रभावित नहि छल, ओहि मे यथेष्ट अन्तर छल।'ई दूरी क्रमशः वास्तविक भेल जाए रहल छल। वामनदास, बालदेव सन लोक एहि परिवर्तनसँ पीड़ित अछि, किएक तँ हुनक मोहभंग भय रहल अछि। ई आन बात थीक जे एहि मोहभंगक उपरान्तो हुनका लेल परिवर्तनकेँ स्वीकार कय पयबाक आधार नहि रहि गेल अछि। बालदेव अनेको प्रसंगमे एकरा स्वयं स्वीकार करैत बुझाइत अछि। वामनदासक बलिदान एहि मोहभंगक एकटा सभसँ दुःखद प्रसंग अछि। एहि प्रसंगक मार्मिकतापर टिप्पणी करबाक आवश्यकता नहि अछि।

राजनीतिक विभेदीकरण परिवर्तनक एकटा लक्षण थीक। अन्तर्विरोध कृषि-संबंधक पुनर्गठनक अछि। आजादी कृषि संबंधमे परिवर्तनकेँ अनिवार्यजकाँ बना देने छल। आन समस्त समस्या एकरे चारुभर जमा भय रहल छल। "मैला आंचल"क यथार्थवाद मात्र राजनीतिक विभेदीकरणसँ परिभाषित नहि होइछ। ओकर समकालीनताक मूल कतहु आर अछि। कालीचरण ग्रामीण जनताक विश्वासकेँ नव ढंगसँ जीवित कय देने अछि। किसान-मजदूर अपन समस्या सभक प्रति सचेत भय रहल छथि। मुदा हुनक राजनीतिक मंच ओतबे आत्म विभाजित अछि। किसान-सभा ओहि स्तरपर अपन भूमिकाक निर्वाह नहि कय पबैत अछि। संयुक्त मोर्चाक राजनीति गामधरि नहि पहुँचल अछि। तैयो एकटा जीवित वामपक्ष सक्रिय बनबाक स्थिति मे अछि। ई एहन ठोस स्थिति अछि जकरा चीन्हने बिना समकालीन यथार्थक अर्थ अगोचर रहि जाइछ।

समकालीन यथार्थक ई अर्थ एकटा प्रखर मुदा प्रवासी लेखकसँ, ६० मे सेहो अगोचर रहि गेल छल, जखनकि ओ अन्हारक एहि संसारकेँ अन्हारेमे देखबाक एकटा साहस भरल; किन्तु व्यर्थ चेष्टा कयने छल। ओकरा पसरल निरंतरता आ अन्हारक अतिरिक्त किछु सूझल नहि छल। अवश्ये ओ एकटा बाहरी आदमी छल आ कालक भीतर होमयवला

परिवर्तनकेँ बाहरी तथ्यमे चीन्हबा लेल प्रयत्नशील छल, आ सेहो एकटा बड़ संक्षिप्त प्रवास कालमे। एहि ठाम हमर तात्पर्य व्ही, एस. नेपालक पुस्तक "एरिया ऑफ डार्कनेस" सँ अछि।

"मैला आँचलक लेखकक लेल ई उपमहाद्वीप एतेक अन्हार नहि अछि। अपन दृष्टिकोणसँ सेहो ओ ओकर बदलैत वास्तविकताकेँ ठीक-ठीक देखने छथि। ओ अन्हारमे आँखि साधने छथि, हुनक कला-दृष्टिमे सेहो इएह पारदर्शिता छैक।

"मैला आँचलक" गाममे सेहो किसान आ मजदूर एक संग मिलि संघर्ष नहि करैछ, मुदा हुनका ई पता छनि जे मुक्तिक लेल संग भेनाइ आवश्यक अछि। ग्रामीण जीवनमे राजनीतिक धाराक एहि उत्सर्जनसँ निरंतर गुंजैत नारा सभसँ–एक प्रकारक नव-गतिशीलता जन्म लैत अछि। पुरान संबंधक जड़ि एकाई सभ सेहो घर्षणक मध्य आबि जाइछ। "मैला आंचल" मे ई गतिशीलता अलगाव समाप्त करैत बुझाइछ। एहि एकाई सभसँ एकटा पैघ चेतना सबतरि जन्म लैत अछि।

मुदा, एहि चेतनाक जन्म केर अपन व्यथा अछि, ओतबे पैघ पीड़ा अछि। गोदानमे ई चेतना जन्म लेबाक दर्द सहैत शहीद भए जाइछ, "मैला आंचल" मे ओ सजीवे जन्म लैत अछि। एहि दृष्टिसँ "मैला आचंल" हिन्दी कथा साहित्यमे एकटा ऐतिहासिक भविष्यक जन्म केर कथा सेहो थीक। निरंतर आ परिवर्तनक एहि विराट् संसारमे सभ किछु नाटकीय नहि अछि बहुत किछु एहनो अछि जे स्वाभविक। एहेन स्वाभाविकता ऐतिहासिक प्रक्रिया संग जुड़ि जाइछ। ई ऐतिहासिक वास्तविकता अपन समकालीन अर्थमे प्रकट करैछ जे कृषि क्रांतिक प्रश्न बुरजुआ रूपांतरण सभसँ भिन्न महत्त्व रखैछ। सामंती शक्ति सभ पुनर्गठित भयकै बुरजुआ-क्रांतिक तत्त्व सभक अन्दर, मात्र जनवादी विकास आर रूपांतरणकेँ कुंठित करैत अछि। "मैला आँचल"मे छोट पैघ किसानकेर अंतर-संघर्षक रूपमे एकर चित्रण कयल गेल अछि। "मैला आँचल मे छोट मेहनती आदिवासी किसान सभक भूमि-संघर्षमे समस्त सामंती शक्ति सह-संगठित बनि जाइछ आ छोट किसान पराजित भय जाइत छथि। हुनकर संग्रहकेँ डकैतक उपक्रम कहि बदनाम कय देल जाइत अछि। पार्टी सभ सेहो एहेन तत्त्वकेँ निष्कासित करबा पर उतारू लगैत छथि। किन्तु एहिसँ भूमि-संबंधक संकट टरि नहि जाइछ। सामंतवादी शक्ति सबहिक सह-संगठन सेहो एहि तथ्यकेँ झाँपि नहि पबैत अछि जे छोट किसान एहि पराजयक उपरान्तो लाभ मात्र ऊपरी सामंती तत्वहिकेँ भेल अछि। खेलावन सिंह यादवक संकट आर बढ़ि जाइछ। "कमला कातक बंदोबस्तीवला जमीनमे सँ दस बिघा सूदि-रेहन राखि आओरो एक हजार रुपैया तहसीलदार साहबसँ नेने अछि ई खेलावन।" एहि आंतरिक संकटक राजनीतिसँ किसान परिचित भय रहल छथि। आन छोट किसान सेहो एहि सँ किछु सीखि रहल छथि। हुनका निरंतर एकर आभास होइछ जें ई उपरी एकता ककर हितमे अछि। नेतृत्वक प्रश्न

पर किसान सचेत भय रहल छैक। सामंती पहिचान खतम भय रहल छैक। अन्तर्विरोधक संग बढ़ैत चेतनाक जन्मक ई कथा "मैला आँचलक" सम्पूर्ण संदर्भकेँ एकटा नव अर्थ दैत अछि।

भूमि समस्या "मैला आँचलक" केन्द्रीय समस्या थीक। कृषि संबंधक पुनर्गठनक प्रश्न एकटा जीवित प्रश्नजकाँ एहि उपन्यासक कथामे अबैछ। लेखक प्रेमचंदजकाँ एहि प्रश्नकेँ जीवन संबंधक व्यापकतामे आर दैनंदिन जीवनक क्रिया-कलाप सभमे उतारिके देखने छथि। आजादीक एहि प्रश्नकेँ आओरो अनिवार्य एवं तात्कालिक बना देने छथि।

"मैला आँचल"मे रेणु ग्रामांचलमे आर्थिक सामाजिक विकासक अन्तर-संबंधकेँ नव परिस्थितिकेँ चिन्हबाक गंभीर प्रयत्न कयने छथि। ओ लक्षित कयने छथि जे आजाद भारतमे सेहो आर्थिक परिवर्तनक सामाजिक विकासपर ओहेन सम प्रभाव नहि पड़ि रहल छैक, जेहेन पड़बाक चाहैत छल। हुनक आंतरिक सम्बन्धमे समीपता नहि आयल अछि। राष्ट्रीय अर्थतंत्रक विकास ग्रामांचलक सामाजिक विकासमे बहुत बेसी सहायक नहि भय रहल अछि, एक हद धरि ओकरा बाधिते कय रहल अछि। एहि समस्या केँ एकटा दोसर रूपमे किन्तु करीब-करीब एहि संदर्भमे "राग दरबारी" मे सेहो देखल गेल अछि। आर्थिक आ सामाजिक कारकक मध्य पुरान संस्थान आइयो दराड़ि उत्पन्न करबामे पर्याप्त समर्थ अछि।

एहि यथार्थ प्रक्रियाकेँ रेणु बड़ बेसी महत्त्व देने छथि। "मैला आँचल"क आ 'परतीः– परिकथाक' लेखक एकर पृष्ठभूमि पर विस्तारसँ आ कलात्मक यथार्थसँ प्रेरित भयकेँ लिखने छथि।

मलारीकेँ गाम छोड़य पड़ैत छैक आ जित्तन गामे आबि बसि जाइछ। ई केहेन बिडंबना थीक ? एहि यथार्थक अर्थ मात्र मनोवैज्ञानिक अपेक्षा सभमे नहि अछि। एकर पैघ आ जटिल कारण अछि। सामान्यतः मलारीकेँ गाम छोड़बाक कारण सामाजिक लगैत छैक आ जित्तनक गाम आपसीक आर्थिक। मुदा, साँच ई अछि जे दूनू गोटेक कारण आर्थिक अछि। ताजमनीकेँ सामाजिक कारणसँ स्वतंत्र राखयवाली शक्तितँ अंततः जित्तने अछि। गामक नव सामंत।

"परतीः परिकथा"क पृष्ठभूमि आजादीक बादक भारत थीक। ग्रामांचलक एकटा आर परिवर्तनकारी कालखंड ओकर कथामे प्रकट होइछ। "मैला आँचलक" तुलनामे ई उपन्यास शुद्ध रूपसँ ग्रामांचलक भूमि समस्यासँ जोड़ल अछि। "परतीः परिकथा' मे ग्रामांचलक सामाजिक-आर्थिक गठनमे परिवर्तनक स्पष्ट लक्षण नंजरि अबैत अछि। ई परिवर्तन अनियोजित आर्थिक-राजनीतिक प्रक्रियाक एकटा अराजक रूप प्रस्तुत करैछ। आर्थिक योजना सभक राष्ट्रीय दौरमे सेहो, जखन कानूनी रूपसँ जमींदारीक उन्मूलन भय चुकल छल, वास्तविक भूमि-संबंधमे परिवर्तन नहि भेल छल। सामंतवादी प्रारूपक भीतर

कृषि-संबंधक एहि रूप-रेखा पर ''परतीः परिकथामे विस्तारसँ एकटा कथा-भूमिक रचना कयल गेल अछि। वस्तुतः प्रेमचंदक बाद गामक सम्पूर्ण चित्रण-समकालीन विकासक संदर्भमे ''परतीः परिकथे'' मे अछि।

''मैला आँचल'' जाहिठाम ग्राम-कथा थीक ओहिठाम ''परतीः परिकथा'' भूमि-संबंधक अंतर्विरोधसँ आगू बढ़ि भूमि-संघर्षक कथा थीक। ''मैला आँचल''मे भूमि-संघर्षक एकटा झलकी मात्र भेटैत अछि, मुदा ''परतीः परिकथा'' संपूर्णत संघर्षक पृष्ठभूमिमे लिखल महत्त्वपूर्ण रचना थीक। प्रायः आलोचकगण एहि महत्त्वपूर्ण तथ्यकेँ अनठा देने छथि। जिनका लेल यथार्थवाद रूप आ गठन क विषय थीक, ओ एहि सँ बेसी किछु सोचबाक शक्तिए नहि रखैत छथि। कथा विषयक महत्त्वक दृष्टिसँ आ समकालीन यथार्थक विशिष्टताक दृष्टिसँ ''परतीः परिकथा'' बेसी लाक्षणिक रचना मानल जा सकैछ।

''परतीः परिकथाक'' मूल अंतर्विरोध सामंतवादी भूमि-व्यवस्था सँ नव किसान वर्गक संघर्ष छैक। युद्धोत्तर कालमे (द्वितीय विश्व युद्ध) शहर गामक आर्थिक असंतुलन बढ़ि गेल छल। वर्ग-चेतना मजदूरसँ किसान धरि पहुँचि रहल छल। ''मैला आँचल''मे एकर अनुगूँज बेर-बेर सूनि पड़ैत अछि। मुदा, ''परतीः परिकथा''मे ई खाली अनुगूंजटा नहि छैक– संपूर्ण कथा-विषये भूमि-समस्या आ किसानक संघर्ष थीक।

बहुसंरचनात्मक समाजमे भूमि-समस्या संपूर्ण जटिलताक अंग होइत छैक। ओहिमे सामंती, अर्द्धसामंती आ बुरजुआ तत्त्वक एक संग उपस्थितिए सँ ई जटिलता उत्पन्न होइछ। एहि पृष्ठभूमिमे जनताक मध्य आर्थिक-सामाजिक अंतर्विरोधक कल्पना सहजहि कयल जा सकैछ। भारतीय सामंतवादक रूपांतरणसँ ई ओझराहटि आओरो बढ़ल अछि। एहि सामाजिक स्थितिक चित्रण 'परतीः परिकथा' मे सभसँ बेसी भेल अछि। वस्तुतः ''मैला आँचल'' जतय राजनीतिक विभेदीकरणक संकेत करयवला उपन्यास अछि, ओतय ''परतीः परिकथा' मे राजनीतिक संघर्ष अपन व्यापकतम कारणसँ जूमि गेल अछि– गाममे राजनीति भूमि-समस्याक केन्द्रहिमे जनमि सकैछ। आजादीक बाद कोनो राष्ट्रीय संघर्ष यदि किसानक लेल चरितार्थ भय सकैछ, तँ ओ भूमि-संघर्ष थीक . पछिला दशकक किसान आंदोलन खाहि आर किछु नहि कयने हो, किन्तु किसानकेँ अपन समस्या सभसँ तँ जोड़नहि छल। भारतीय ग्रामीण जनताकेँ शोषणक कारण सामंती–महाजनी शोषण रहल अछि– ई तँ प्रेमचंदक कथा भूमिए सँ निर्णीत भय चुकल छल। सामंती शक्ति सभक संग जे नव पूँजीवादी शक्ति सभ ग्राम-व्यवस्थामे प्रवेश कय गेल छल, ओकर शोषणतंत्र आरो बेसी संगठित छल। ''परतीः परिकथा''मे एहि नव तंत्रक व्यवस्था केर पृष्ठभूमिमे किसानक संघर्षक चित्रण कय रेणु भारतीय साहित्यक एकटा बड़ पैघ कमीकेँ पूरा करबाक यथासंभव प्रयास कयने छथि।

''परतीः परिकथा'' केँ परिवर्तन सभमे संयोजित कयल गेल अछि। एहि परिवर्तन परिकल्पनाक पाछू गतिक आन्तर्य प्रकट करबाक उद्देश्य भय सकैत अछि। एकटा व्यथा भरल कथावाली परतीक परिवर्त ! काल-कथाक संगीत भरल पीड़ा !!

किछु आलोचकगण लेल ई आकर्षक संरचना मुग्धकारी रहल अछि। ओ अछियो। मुदा, ओ एतबे नहि अछि। ओ पीड़ा भरल गीतक टेक जकाँ मात्र आवर्तनकारी नहि अछि ओहिमे यथेष्ट गति अछि। वास्तविक आरोहअवरोह अछि। ई परती तँ मात्र एकटा प्रतीक थीक। आजादीक बाद एहि परतीक टुटबाक कथा मात्र प्रतीक नहि थीक। ओ एकटा राष्ट्रीय वास्तविकताक अंग अछि। एकटा दीर्घकालीन, प्रायः निजंधरी स्थितिक भीतरसँ जनम लैत वास्तविकता एहि परतीक परिवृत्त थीक। एकटा अपूर्ण कथाक सपनासँ ई कथा जुटि गेल अछि। ओफ ! एहि कथाक सपनासँ किसानो सोझे जुटि सकितथि, तँ ई कथा किछु आर भय जाइत। मुदा परती पर सेहो व्यक्तिगत स्वामित्वक कारी छाहरि अछि। एहि परिवर्तनक केन्द्रमे असगर जितू अछि। किसान एहि स्थितिकेँ स्वीकार नहि करैत छथि। एहिठामसँ अन्तर्विरोधक जन्म होइछ, परतीकेँ टुटबसँ उत्पन्न अन्तर्विरोधक जन्म ! किसान परतीक जन्म केर भागीदार बनताह।

परतीकेँ जित्तन अपन कैमराक मूल्यवान आँखिसँ देखि रहल अछि। किसानकेँ एतेक मूल्यवान् आँखितँ नहि छैक, मुदा ओकर अपन आँखि सेहो बहुत किछु देखि लैत अछि। आनक अनिच्छाक उपरान्तो। बँजर लगसँ एकटा ब्रांच लाइन गेल अछि, बिजलीक तार दौड़ल अछि। औद्योगिक लक्षण सभक प्रकट होयबाक ई संकेत परतीक पृष्ठभूमिमे आओरो लाक्षणिक भय जाइत अछि। नूतन भूमि-तीर्थ दिस देशक आँखि गड़ल अछि- टैनिसीघाटी परियोजनासँ प्रेरित आर बहुत किछु स्वचालित आँखि। ओना आँखि भारतीय अभागल किसानक लेल सेहो सहानुभूतिक नोर बहा रहल अछि। हर-बरदक उपादानमे बंदी बनल किसानक लेल श्री भवेशनाथ एम. एल. ए. क मोनमे गंभीर सहानुभूति छैक। परन्तु एहि योजनाक उपयोग के करत ? भारतीय भाग्यहीन किसान नहि करत। मुदा नव भू-स्वामी ? ओकरा लग साधन अछि, ओ सपना सेहों देखि सकैछ आ सपना पर पुल बना ओहि पर चलियो सकैछ।

सपना भवेशक हो चाहे जितेन्द्र नाथक, ओकर स्वरूप एके अछि। बंजर परतीमे युगान्तकारी परिवर्त्तनकेर ई सपना किसान नहि देखि सकैछ, भूस्वामिए देखि सकैछ। हाइड्रो-इलेक्ट्रिसिटीसँ चलि रहल मशीनटैक्टर सभसँ जोता रहल भूमिक सपना बेचारा अभागल किसान नहि देखि सकैछ। ओकर सपनो अपन अछि। एहि सपना सभक सहअस्तित्वो बनल रहत व इ सपना स्वतंत्र साकारो होयत ? प्रश्नक सम्बन्ध सम्पूर्ण भूमि-समस्यासँ अछि। परानपुरक ई परती तँ एकटा अंग अछि, एहि भूमि-समस्याकेर।

परानपुर भारतकेर अनेक गामजकाँ एकटा गाम अछि– समृद्धि आ पतनक काल-मार्गसँ गुजरैत गाम। ओकरा कोनो पश्चिमी व्याख्याकार जकाँ 'कालातीत' आ मापहीन निरंतरता'मे डूबल कहि कय सभ किछु समाप्त नहि कयल जा सकैछ। समकालीन भारतक ई वास्तविकता तँ अर्थपूर्ण अछिए। परती, सेमलवनी सभपर कुंडली मारने बैसल

सामंतवादक कानूनी अंत तँ भय गेल, मुदा वास्तविक अंत ओकर ताधरि नहि होयत, जाधरि भूमिकेर वितरण किसानमे नहि भए जाय। परन्तु ई तँ एकटा संभावना मात्र छैक। एकरा संघर्षे सँ साकार कयल जाए सकैछ। 'परतीः परिकथा' एहि संभावनाक लेल किसानक संघर्षक कथा बनि गेल अछि।

एहि कथामे किसानक संघर्षकेर अतिरिक्तो बहुतो किछु अछि। जीवनमे सेहो बहुत किछु अछि! सामाजिक अस्तित्वक स्थिति सभ आओरो अछि। ओकरा बिना उपन्यास एकटा रपट बनि जायत। किसान समस्याके लय रपट तैयार कयनाइ कथाकारक उद्देश्य नहि थीक। हँ यदि कथा एकटा प्रामाणिक रिपोर्ताजो होयतँ खराबे की अछि ?

परानपुर हवेली आ परतीक संबंध एकहि स्रोतसँ बनैत अछि। दूनूक केंद्रमे परिवार अछि-अतीतसँ वर्तमान धरि। एहि धुरी परिवारक ह्रासोन्मुख स्थितिक अत्यन्त सवाक् चित्रण उपन्यासकार कयने छथि। "मैला आँचलक" नाटकीयताक अपेक्षा एहिठाम दृश्यपटक छविमय विस्तार अछि। छविमय मलिनो अछि आ साफ सेहो मुदा दूनू रूपमे प्रासंगिक अछि। एहि परिवारक संग एकटा सम्पूर्ण कथा जोड़ल अछि– एकटा जीवित लिजेण्ड ! एहि "लिजेण्डकेँ अपन अर्थ आ यथार्थ छैक। हम ओकरा खोजबाक बदला ओकर वर्तमानकेँ बेसी महत्त्व देबा लेल बाध्य छी।

जमींदारी खतम भय गेल। जमीन पर अधिकार वास्तविक उत्पादकक होयबाक चाही। मुदा एहि पन्द्रह बरिस बाद गामक पुरान जमींदार जित्तन घुरि आयल अछि। एहिपर कथाकारक टिप्पणी अछि – "परानपुरक पानिमे आब फेर मिठास घुरि आयल अछि। गाम टुटल अछि, गाम बनि रहल अछि। टूटल खंडहरकेँ साफ कय नेओ देल रहल अछि।

शिलान्यास भय रहल छैक। नव दोमहलाक बन्हाइ गथाई चलि रहल छैक। नव पजेबोक संग पुरान मुदा काजक योग्य पजेबाकेँ मिला देवाल बना रहल अछि राजमिस्तरी। अपन बसूलीसँ ओ पुरान पजेबाकेँ ठोकि-ठोकि कहैत अछि– "एहि पजेबाकेँ असली सुरुजमुखी पजेबा कहल जाइछ।... ई हमर ठेकेदार साहबक पजेबा नहि जे मुटठी मे मलि कय आँखिमे झोंकि दी।"

परानपुर बदलि रहल छैक। भारतक गाम बदलि रहल छैक। मुदा ई परिवर्तन संतुलित नहि अछि। कतहु ई परिवर्तन तेज अछि आ कतहु बड़ स्थिर। मुदा, रुकल किछु नहि अछि। ग्राम समुदायक जड़ता टूटि गेल। निरीह ठहरल गाममे जेना बाहर भीतरसँ बदलवाक सक्रियता उत्पन्न भय गेल अछि। आर्थिक चालन आ शिक्षाक विस्तारसँ एहि गति सभकेँ प्रायः सुनिश्चित कय देल गेल अछि। पंचायत एकटा आर नव राजनीतिक प्रारूप गाममे ढाढ़ कय देने अछि। पंचायत चरित्र अछि। एकर सभ क्रियाकलापमे अन्तर साफ-साफ झलकैत अछि।

प्रत्येक नव संस्थामे जाति आ दलक राजनीति प्रवेश कय गेल अछि। परंपरागत

संस्थान सेहो एहि नव व्यवहारसँ प्रभावित भय रहल छैक। स्कूलक कमिटी सभ एहिसँ असम्पृक्त नहि अछि। संरचनात्मक सह-अस्तित्वक ई विचित्र मिश्रण यथार्थक संक्रमणकारी रूपकेँ समकालीन पहिचान दैत अछि। परानपुरमे अस्पताल अछि, हाइस्कूल अछि, पुस्तकालय अछि। कोशी परियोजना आ प्रखंड विकासक योजना सभ अछि, अंचलक ऑफीस अछि। परानपुर आजाद भारतक एकटा समृद्धिशाली गाम अछि। मुदा, एहि परिवर्तनक संग मूल संरचनागत तत्त्वक सक्रियता सेहो स्पष्ट अछि–

"पछिला आठ-दस वर्षमे जातिवाद बड़ जोर पकड़ि लेने अछि। राजनीतिक पार्टी सभ जातिवादक सहायतासँ संगठन करओनाइ उचित बुझैत अछि। राजनीतिक दंगल मे सभ किछु माफ अछि।"

कतेक नवीन शब्द हवामे उछलि रहल अछि– नामिनेशन, मेजोरिटी, पौलटीस, पौलीसी ...."

जमींदारी उन्मूलनक प्रभावसँ स्टेटकेँ बचयबाक श्रेय जलधारी लालदासकेँ अछि। आब ई श्री जितेन्द्र नाथ मिश्रकेर हाता मे अछि जे ओ एहि इस्टेट पर अपन दायमी कब्जा सिद्ध करथि। संघर्षक पृष्ठभूमि रूपमे ई परिस्थिति अत्यन्त ठोस आ सामाजिक अछि। राष्ट्रीय अर्थतंत्रसँ ई पृष्ठभूमि स्वाभाविक रूपमे जोड़ा गेल छैक। नव भू-स्वामित्व विकासशील गाममे अपन रूप आ चरित्रे नहि प्रकट कय रहल अछि, अपन समस्त शक्तिकेँ संयोजित कय ओ नव स्थिति सभ पर प्रतिक्रिया सेहो करय लागल अछि। पुरान जमींदारी उत्पादन, नवकुलक पूंजीपति-उत्पादनमे दल बदलि रहल अछि। जमींदारी चलि गेल मुदा भूमितँ नहि गेल—

"परानपुर परती-पाँतर छैक, जमीन खुदकाश्त छैक, बकाश्त छैक, रैयती हक छैक।"

भूमि बंदोबस्तीक सर्वेक्षण क्रममे जित्तन गाम धरि आयल अछि। जमीनक रक्षा करबाक प्रश्ने नहि छैक। ओकर सामने ओहि जमीनमे नव उत्पाद सेहो जमा करबाक छैक। बिहार टेनेंसी एक्टक दफा ४० मात्र जमीन आबाद करयवलाक अधिकार स्वीकार कय लेलक, मुदा कचहरीक करामति ओकरा किसानक हिते मे व्यर्थ कय देलक। सभसँ पैघ किसान सरकारक एहि व्यवस्थाकेँ व्यर्थ करय देलक। ई पैघ किसान सभ दू सय बिघा जोतक लोक नहि छथि। हिनका हजारो एकड़ जमीन अछि। मुदा ओ छथि किसान आ किसान-सभा सेहो ओकरा अपन सदस्यतासँ बंचित नहि कय सकैछ। पाँच सय बिघाक खेती तृतीय श्रेणीक किसान करैछ। आ शेष तँ विशाल भूमिहीन मजदूर अछि। एहि आर्थिक संरचना पर हमरा विशेष रूपसँ ध्यान देमय पड़त।

गाममे सामाजिक वर्ग-संरचनामे अजादीक बाद परिवर्तन भेल अछि। एहि निर्णायक तत्त्वकेँ कोनो तरहेँ अनठायल नहि जा सकैछ। मुदा, एहि परिवर्तनक गतिशीलताकेँ ओकर बाधक तत्त्व क संदर्भमे सफलताक अपन अपेक्षा सभ अछि। एहि गतिशीलताक

नापी परानपुर सर्वेक्षण निर्धारित कयने अछि– बौण्डोरी– बौण्डरी ! अर्थात् हद, सीमा ! बच्चा-बच्चा ई शब्द बजैत अछि आ ओकर अर्थ बुझैत अछि ।

किसानक बीच एहि "आर्थिक सामाजिक अन्तर्विरोधकेँ" बैण्डोरीक लड़ाई आर तेज कय देलक । सभ दिसि एकहि शब्द उछालल जाय रहल अछि । आ ओहिसँ सम्बन्द्ध कतेको दोसर आकारवला शब्द पसरि रहल अछि । भूमि-समस्या नव छोरसँ अपन वास्तविकता प्रकट करय लागल अछि । ई वास्तविकता अपन विशेष दबाव रखैछ, अपन अलग अलग खोज उत्पन्न करैछ । किसानक लेल ओकर समस्त अस्तित्व एहि शब्दमे बंदी भयगेल अछि । पैघ किसानक लेल सीमाक प्रश्न स्वामित्वक प्रश्न छैक, छोट किसान लेल जोतदारी-बटाइक प्रश्न, अस्तित्व आ अधिकारक प्रश्न थीक । संघर्षक भूमिकाक लेल भूमि समस्या पर किसान पुनः सोचि रहल अछि ।

"जिला भरिक किसान आ भूमिहीनमे महाभारत मचल अछि । भूमिहीनो नहि, डेढ़ सय बीघाक मालिक सेहो दोसर पैघ किसानक जमीन पर दावा ठोकने छथि । हजार बीघावला सेहो एक इंच जमीन छोड़बाक लेल तैयार नहि ।"

मुदा, ई सर्वे एकटा आर गंभीर तथ्यकेँ सामने आनि ठाढ़ कय देलक– किसानक मध्य अपन अंतर्विरोध सभकेँ । भारतीय कृषक वर्गक संरचना मे जे बाहुल्य अछि वएह एहि अंतर्विरोधक मूलमे अछि । मुदा, एहिसँ स्वतंत्र सेहो हुनक आपसी विरोधक एकटा नम्हर सूची तैयार कयल जा सकैछ । सरबन बाबू आ लालचन बाबूमे फोजदारी भय गेल अछि । छोट भाई पैघ भाईकेँ कानूनी तौर पर आगू बढ़ा देलक । लालचन पढ़ल-लिखल नहि अछि, मुदा जमीन पर अधिकारक बात खूब बूझैत छथि । वकीलक सलाह पर ओ फौजदारी कय पैघ भाइकेँ एहि मामिलामे आगू झोंकि देने छथि ।

आर तँ आर, ई आर्थिक असंगति विचित्र सामाजिक असंगति उत्पन्न कय देने अछि । भाईकेँ भाइए अवैध संतान घोषित कय देने अछि ।

"एकर बापक ठेकान नहि हमर बाबूजीक मृत्युक तीन साल बाद..." सरिपहुँ, ई सामाजिक वास्तविकता भयंकर सेहो अछि । व्यक्तिगत स्वामित्वक उन्माद कोना सामाजिक अस्तित्वकेँ नाश करैछ, एकर ई एकटा जीवित उदाहरण अछि । परिवार समाज तँ बीतल दिनक समाज छल । आब परिवार छैक, समाज नहि । आ ई परिवार नवीन एकाइवला परिवार थीक । नव आर्थिक परिवार । एहि प्रकारेँ परिवर्तन प्रत्येक क्षेत्रमे चरितार्थ भय रहल छैक ।

ई परिवर्तन पैघ प्रतिष्ठित हवेलीमे बँद, घोघतर नुकायल विधवाकेँ आवरणहीन बना देने अछि । सामाजिक अस्तित्वक प्रश्न संस्कारसँ तँ पैघ होइतहि अछि । "मैला आँचलक" जोतखी रहितितिँ बजतथि सर्वनाश ! सर्वनाश ! कओलेजमे पढ़यवला छात्र गाम घुरि आयल छथि, हुनका डर छथि जे कतौ पिता सभटा जमीन-जाल कोनो खास बेटाक नाम

नहि लिखि दैथि। सम्पत्तिक असंगतिकेँ नहि जानि कतेक सामाजिक चेहरा होइत छैक। मुदा, ओहिमे किछु चेहरा नव होइछ, समकालीन !!

गाममे कतेको बरखसँ बनैइत पुरान रास्तासभ बंद कयल जाए रहल अछि। खेतमे एकपेरिया बंद कयल जा रहल अछि। सर्वेमे रास्ता दर्ज भय गेल तखन ?

गामक भीतर ई परिदृश्य गामक बाहरक परिस्थिति सभसँ जोड़ा गेल अछि। फौजदारी–दीवानी कचहरी सभ आबाद भय गेल अछि। जमीन, कानून लय चपरासीधरि महत्त्वपूर्ण बनि गेल अछि। जेना एकटा नव वास्तविकताक आतंक गामकेँ जकड़ि लेने अछि। भूमि समस्याक ई विस्तार जाहि नव "सामाजिकता"केँ जनम दय रहल अछि, ओकर एतेक विस्तृत कथा भारतीय उपन्यासमे अन्यत्र दुर्लभ अछि। बांग्ला देशक उपन्यास सभमे सेहो एहेन जीवित समकालीन विस्तार कम भेटत।

वर्ग जड़ होइत अछि तँ जाति बनैत अछि ? "परती: परिकथा'मे वर्ग जड़तातँ टुटैत अछि, मुदा जाति सभ मजूगत होइत अछि। एहि अन्तर्विरोधपर अलगसँ विचार करबाक आवश्यकता छैक। ई समकालीन भारतक एकटा विशेष समस्या थीक। "परती: परिकथा" क लेखक बतवैत छथि– "आठ बरीखसँ जातिवादक दीमकक आहार रहल अछि मानवक हृदय।" वस्तुतः जातिवादक रूपमे ई वर्ग शक्तिक नव संतुलन-समीकरणे अछि जकरा लेखक यदि स्पष्ट करितथि तँ "परती परिकथा"क महत्त्व आओरो बढ़ि जाइत।

डॉ. रामविलास शर्मा ठीके लक्षित करैत छथि जे स्वाधीनता आंदोलनक भीतर किसान-क्रांतिक संभावना सभकेँ कुंठित कयल गेल छल। आजादीक बाद नव पूंजीवादी परिस्थिति सभ ओकरा एकटा आर रूप दय देलक। ई रूप पूंजीवादक हितमे छल। गामक भीतर सामंती पूंजीवादी शक्ति सभक तालमेल एकटा नव दिशामे विकसित भय गेल अछि। एहिसँ स्वतंत्र कृषि-क्रांतिक संभावना सभ कुंठित भेल। मुदा, एहि तालमेलसँ समस्या समाप्त नहि भेल, ओ आर जटिल भय गेल।

रेणु किसान आ नव भू-स्वामी वर्गक संघर्षकेँ एहि उपन्यासक कथा बना ई सिद्ध करैत छथि जे जाहि तरहेँ शहरमे नव संगठित मजदूर वर्ग पूंजीपति सभसँ संघर्षक एकटा नव चरणमे प्रवेश करैत अछि, किछु ओही तरहेँ गाममे किसान-भू-स्वामी संघर्षक एकटा नव चरण आजादीक बाद प्रकट होइछ। एहि मूलगामी वास्तविकता क संग गामक जिनगीक दोसर रूप अविभाज्य रूपसँ जोड़ल अछि। किसानक जिनगी पर लिखैत यदि रेणु भूमि-संबंधमे नव शक्तिक उदयपर विस्तारसँ प्रकाश दैत छथि, तँ ई स्वाभाविके अछि। एहिमे यथार्थ बेसी गतिशील रूपमे सामने अबैत अछि।

"परती: परिकथा"मे किसान आंदोलन पृष्ठभूमिमे राजनीतिक पार्टी सभ अछि। किसान सभा एहेन कोनो संगठित, किसानक अपन संस्था नहि थीक। ई एकटा महत्त्वपूर्ण तथ्य छैक, जाहिसँ किसान आंदोलनक सीमा होइछ। परती टुटैत अछि आ गाममे नारा

गुँजय लगैत अछि–

"जमींदारक बिखक दाँत
तोड़ि देब .. तोड़ि देब ।
जमींदारक हाथ ... साथ
छोड़ि देब ... छोड़ि देब !"

असंगठित युवकक ई नारा भनेहे किसान-संघर्षक ठोस आधार नहि बनय, मुदा, ई ओहि भावनाकेँ अवश्य उजागर करैछ, जे किसान सभक मोनमे नव भूस्वामीवर्गक लेल अछि । "जमींदारक साथ-नाता छोड़ि देब, निश्चित रूपसँ प्रभावशाली सामयिक नारा अछि । निहत्था भीड़ पर खुखरी चलबाय 'जनता' पर विजयक खुशीकेर अनुभव जित्तन सेहो नहि कय पबैत अछि । अवश्ये जनता निहत्था अछि, असंगठित अछि मुदा आसार नीक नहि अछि, नव भू-स्वामी अपन तात्कालिक विजयक उपरान्तो ई बूझि रहल अछि । भविष्यमे होमयवला संघर्षक चिन्ता ओकर वर्तमानक जीतकेँ उल्लासरहित बना रहल अछि ।

"परतीः परिकथाक" लुत्तो जित्तनक विरुद्ध अछि । ओ कलमबागक प्रश्नकेँ लय गाममे सभा करैछ, मुदा सभामे एकोटा सोशलिस्ट कम्युनिस्ट नहि भेटैत छैक । किसान सभक प्रश्न पर पार्टी सभ अलग-अलग लड़य चाहैछ । रेणु एहि तथ्यकेँ एकटा घटनाक द्वारा ठोस ढंग सँ उदाहृत कयने छथि । एहि राजनीतिक विभाजनक कारण किसानक संघर्ष पिछड़ि जाइत अछि । किसान अलग-अलग प्रभावमे अछि । जातिक प्रभावमे, पार्टी सभक प्रभावमे । मुदा, ओकर कोनो वर्गीय संगठन सक्रिय नहि रहि गेल अछि । प्रत्येक पार्टीकेँ अपन दोसराक "रंग डिकलियर' करबय चाहैक, मुदा अपनहि रंग बदरंग करैछ । असगर भू-स्वामीक सम्मुखो ओकर संघर्ष एकटा नाटकजकाँ बनल रहि जाइछ । मुदा, परिवर्तन भय रहल अछि, आंतरिक परिस्थिति सभ सेहो बदलि रहल अछि । संयोजित संगठित रूपमे नहियो, स्वतः स्फूर्त रूपमे सही आस्ते-आस्ते ई स्थिति सभ राजनीतिक शक्तिकेँ मजगूत करत, ओकरा अपन सीमानमे लय आनत । उपन्यासक कथामे एकर पूर्ण संभावना प्रकट होइछ । घटनाक्रमक दिशा सेहो किछु एही दिस अछि । जयमंगल सनक नवयुवक सेहो अनुभव करैछ जे एकताक बिना संघर्ष संभव नहि अछि । ओ एकताक किरिया खुआबैत अछि । गामक भू-स्वामी ब्रहमपिशाच अछि । बात लोककेँ लागि जाइछ– नव चेहराक ब्रह्मपिशाच । जनताक अपीलक अपन मुद्दा अछि, अपन रूपक अछि, अपन मोहावरा अछि, अपन ठाठ अछि । युवकगण मजमून बन्हनाइ सीखि गेल अछि ।

बटट्टेदारक लड़ाई जिन्दाबाद ! मिम्मल मामा जनैत छथि बट्टेदारक लड़ाईसँ काँग्रेसक नेतृत्व खतरामे पड़ि जायत । किसान संघर्षकेँ हरदम कांग्रेस अपन सीमेमे चलौने अछि । कांग्रेसक रूप-रेखा किछु एहन अछि जे एकर राजनीति एहि संघर्षसँ खतरामे पड़ि जाइत

अछि । ओ अपन परानपुरी अंग्रेजीमे सही बात बजैत छथि । "दे शेव दी लौंग एन्ड ग्रोन प्रेस्टीज ऑफ दी रूलिंग पार्टी' ! लुत्तो मामाकेँ जमींदारक एजेण्ट कहैत अछि । मुदा, अपन राजनीति लेल ओ सोशलिस्ट कम्युनिस्ट सभकेँ सेहो एजेण्ट घोषित करैत अछि।

सभापतिक समक्ष समस्या छैक ! ओ लुत्तोक प्रभावकेँ दबबए चाहैछ, मुदा वीरभद्दर बाबू इशारा करैत छथि– चलएने चलू ! रेडियोमे जमीन बाँटल जाइत अछि आ किसान-मजदूर पर गोरखा सिपाहीक खुखरी चलै त अछि । छैक ने सैनियल लेक्चर ! आ एहि प्रवाहमे लुत्तो वामपंथीपर सेहो दू हाथ लगाए दैत अछि । ओकरा की पता जे ओकर घोषणा सभमे आ ओकर पार्टीक कार्यनीतिमे खाधि कतय छैक ? ओ नहि जनैत अछि जे भूमि संबंधी घोषणा सभमे सामाजिक समझौताक अनेको तत्त्व ओकरा फराक कय देत । रेणु राजनीतिक परिणामक बड़ जीवंत आ गंभीर चित्रण अपन एहि उपन्यासक कथामे कयने छथि ।

लुत्तोक एहि राजनीतिक त्रासदीकेँ लेखक नाटकीय ढंगसँ उजागर कयने छथि । वस्तुतः एहेन स्थल सभपर रेणुक नाटकीयता अत्यंत सजीव आ कटगर भय जाइत छैक । सामाजिक घटना सभक गति, व्यापकता आ तीव्रताक चित्रणमे रेणुक नाटकीय कौशल खूब रंग अनने अछि । "मैला आँचलक" अपेक्षा "परती: परिकथा"मे ई नाटकीयता बेसी व्यापक परिघटना सभसँ जोड़ाय गेल अछि । ओहिमे सामयिक परिघटना क अपेक्षा बेसी अन्तर्विरोधी स्थिति सामिल अछि । हाय ! किछु आलोचकगणकेँ नाटकीयताक संग ई परिघटना सभ सेहो सूझितनि तँ ओकरा ओलोकनि बेसी नीकजकाँ बुझि सकितथि । विकसित होइत यथार्थवादक लेल नाटकीयताक महत्त्व ओतेक नहि छैक, जतेक परिघटनासबहिक अछि । हम रेणुक नाटकीयताकेँ व्यक्तिगत अनुकार्यसँ परिभाषित नहि करय चाहैत छी । एहिमे ओकर कलात्मक महत्त्व कम भय जाइत छैक ।

सभा जरूर भेल, मुदा परतीक प्रश्न पर आंदोलन ठाढ़ नहि भेल । गामक सामान्य जनता लुत्तीक पक्षमे नहि आबि सकल । जित्तन अपन परती जोति रहल अछि आन केँ की ? निरसू भगतक नाटक सेहो परतीक समस्याक प्रसंगमे सार्थक नहि भेल । संघर्षक ठीक मोर्चा तैयार नहि भेल ।

मुदा, एहि किसान संघर्षक पृष्ठभूमिमे आन-आन गतिविधि सभ अवश्य तेज भेल । एहि सामाजिक गतिविधि सबहिक उपन्यासमे अपन महत्त्व छैक । मूलकथासँ अविभाज्य रूपेँ जोड़ल ई गतिविधि सभ उपन्यासक यथार्थ परिदृश्यकेँ उजागर करैछ एहि छोट-छोट परिघटना सभक महत्त्व अपन पृथकतामे नहि अछि । समपूर्ण परिदृश्यक रूपमे इएह एकटा सार्थक घटनाक्रमकेँ जन्म दैत अछि ।

भूमि-समस्याक संग-संग उत्पाद-संबंधक बदलनाइयो "परती: परिकथा"क संगत कथ्य छैक । अवश्ये सामाजिक संस्था सभक ढाँचापर एकर दूरगामी प्रभाव पड़ल छैक । निम्न वर्गक लोकक सामाजिक परिस्थितिमे अंतर आयल अछि, ओहिसँ हुनक आशा

आकांक्षामे अपेक्षित परिवर्तन भेल अछि। फेकनीक माय एकटा प्रसंगमे कहैत अछि।

"आबई जमाना नहि छैक जे बाभन-छतरी मनमानी करय आ सोलकन्ह सभ धाख छोड़ि बात कहय इनकिलाफ् तँ इनकिलाफ ... !" लुत्तोक मोनमे आगि भरल अछि, ओ अपन बापक बदला लेत। एहि व्यक्तिगत द्वेषमे जातिक आधार काज अबैत अछि। ओकरा संग जितेन्द्रक विरुद्ध चारि हजार छोट जातिक लोक अछि। आब ओ लुत्तो नहि, लुत्तो बाबू छथि। कांग्रेसक "जननेता"। एहि प्रकारेँ सामाजिक संबंधक परिवर्तन केर कतेको प्रसंग एहि उपनयासमे अबैत अछि। मुदा, एहि जातिवादी समंजनसँ पृथक सेहो एकटा प्रक्रिया जेना अन्तःसलिला सरस्वती जकाँ प्रवाहित होइत रहैछ। मलारीक सुवेशसँ प्रेम। प्रेमक जाति नहि होइछ। जित्तनो तँ ताजमनी सँ प्रेम करैत अछि। मुदा जित्तन जमींदार अछि, ओ ताजमनीक संग ग्राममे रहि सकैत अछि। ओकरा अपन घर में बैसाय सकैत अछि, मुदा, सुवेश तँ साधारण किसानक घर क बेटा अछि, आ गाममे चमारक बेटीक संग नहि रहि सकैछ।

मलारी-सुवेश गाम छोड़ि भागि जाइत छथि। एहि घटनासँ विश्व-प्रसिद्ध अर्थशास्त्री गुन्नार मंडलक ई बात प्रकट होइछ जे हमर विकासमे सभसँ बाधक तत्त्व हमर संस्था सभ अछि। बियाह नामक व्यापक संस्था तँ ओहि जड़तासँ आओरो ग्रस्त। रोटी-बेटीक संबंध रक्त-संबंधक पहिचान थीक। जे से, रोटीक संबंध तँ किछ टूटल अछि, मुदा बेटीक संबंध। जित्तनकेँ मलारी आ सुवेशक माय मिलि कोसैत अछि। ओ भरिसक मलारी सुवेशक मदद कयने छथि। अथवा ओकरा प्रायः ई सन्देह छैक जे एहि सम्पूर्ण षड्यंत्रमे सूत्रधारक काज जित्तन कयने अछि। कोसबाक ई प्रसंग अत्यन्त सवाक् अछि। कोसनाइ की भेल, सम्पूर्ण कथाक उद्धरणी भय गेल। गामक सम्पूर्ण जीवन किछु संस्था आ संस्कारसँ जकड़ल अछि। जाति ऊंच हो वा नीच अपन-अपन संस्थाजकाँ जड़ताक शिकार अछि। (सवर्ण समाजक संस्कार अवर्णकेँ सेहो बान्हि रखैत अछि।) एतय कोनो अंतर नहि छैक, सामाजिक प्रतिष्ठाक लेल संस्कारक निर्वाह एक समान विहित अछि। ई सामाजिक संबंध ग्राम-समुदायमे अखंड अछि, अपरिवर्तनीय अछि। उपर–नीचाक लोक समान रूपमे एहिसँ परिचालित अछि। उल्लंघन सामाजिक अपराध थिक-सामाजिक बहिष्कारे ओकर परिणाम थीक। एहि प्रेतछायासँ आन समस्त सजाय हुनक संतानकेँ भेटत हरामीपन आ नरक। नरकसँ नरक हुनका यात्रा कर पड़त। एहेन सामाजिक अपराधी सभकेँ मात्र धन–मुक्त कय सकैत अछि।

सुवेशक दुस्साहसिकता मिनिस्टर साहेबकेँ सेहो अचरजमे दय देलक। मुदा बालगोविन मोचीक माथतँ आब बेसीए झुकल रहैछ। गाममे एहि घटनाक सेहो राजनीतिक उपयोगिता छैक। शिवभद्र खुल्लमखुल्ला प्रचार कय रहल अछि– "मलारीकेँ खजबा टोपीवालासभ भगौने अछि।"

भूमि-समस्याकेँ सोझरयबाक लेल एकटा आर आंदोलनकारी मसीहा गाममे आयल

अछि–भूदानक देवता। मुदा, भूदानक कार्यकर्ता लोकनिकेँ जमींदारक लठैत मारिकेँ भगा दैत छैक। पैघ किसान सहयोग कयने छल मुदा सर्वे काल सभटा बात उनटि गेल। सर्वे हुनका दानक जमीन पर सेहो कब्जा करबाक लेल बाध्य कय देलक। लुत्तो सर्वोदय बलासँ एहि लेल तमसायल अछि जे ओकरा कमीशन नहि भेटलैक। सर्वोदय कार्यकर्त्ता मौजमे अछि। खंजड़ी बजवएबला के सेहो दरमाहा भेटैछ !! लुत्तोकेँ ठीके लगैत छैक–सभ ठाम हुजूर छैक, सभ ठाम मजूर छैक। लुत्तो कार्यकर्त्तासँ साफ कहि देलक– "एहिठाम कांग्रेस कमिटीक कार्यालय हमर जेबीमे अछि, जेबीमे रहत ?"

जमीनक विवरण दातालोकनि नहि देलक आ नेताकेँ आमरण अनशनक घोषणा करय पड़लैक।

आ एम्हर गाम तीव्रगतिसँ पड़ा रहल अछि– "अनिश्चित अपरिभाषित भविष्यक दिस पहिनहुँसँ बेसी तीव्रगतिसँ दौड़ि रहल अछि समस्त समाज। मुदा एहि वेगमे दिशा अछि की ? मात्र परिवर्तनक वेग बदलल अछि की ओहि अनुपातमे समाज बदलल अछि ? किछु वर्ग जेट हवाइ जहाज पर अछि, मुदा समाज तँ बैलगाड़ीए पर अछि। ई आन्तर्य कोन यथार्थकेँ उजागर कऽ रहल अछि।

पंचायतक चुनावक संग एकटा आर परिवर्त्तक संभावना सामने अबैत अछि। राजनीतिक गतिविधि तेज भय जाइत अछि। सोशलिस्ट, कम्युनिस्ट, कांग्रेसी सभ मैदानमे जमल अछि। मुदा ई सरगर्मी सभ कोनो खास धार नहि उत्पन्न करैत अछि। जनमतक राजनीतिक स्थिर स्वरूप नहि बनैत अछि। पार्टी सभ नहि बुझि पबैत अछि, कार्यकर्ता सभ सेहो नहि बुझि रहल अछि जे एना किएक भय रहल अछि। राजनीति गाममे सुस्थिर किएक नहि होइत छैक। किएक प्रत्येक घटनाक संग राजनीतिक चेहरा बदलि जाइछ- दक्षिणपंथी अवसरवाद, वामपंथी अवसरवाद। एना प्रतीत होइछ जेना राजनीति अवसरसँ परिचालित होइछ। किछु खास लोककेँ अपन पार्टी छैक, पार्टी सभक अपन क्षेत्र छैक। जयदेव सिंहक पार्टी एहि चुनावमे तटस्थ रहत। ने विरोध करत आ ने समर्थने।

जित्तनक सपना साकार भेल मुदा, किसानक भाग ओकरा छलैत रहल। पैघ भूस्वामीक हितमे सपना गेल, मुदा किसान समयपर पुल नहि बान्हि सकल। ओ कात मे ठाढ़ प्रवाह देखैत रहि गेल। प्रवाह ओकरा कतन हिबब मे स्पर्श कयलक। प्रायः एहि प्रवाहमे ओ आर त्रस्त भय गेल। "परती:परिकथा"सँ बाहर जे किछु घटित भेल, ओहो परती तोड़यवला भूस्वामीक हितमे भेल, साधारण किसानक हित अउनाइते रहि गेल।

# समस्याक संसारमे

अपन दूटा बृहत उपन्यासकेँ समाप्त कयलाक बाद रेणु एकटा एहेन संसारमे प्रवेश करबाक चेष्टा कयलनि, जे कतेको अर्थमे परस्पर विरोधी यथार्थसँ जोड़ल अछि। ई दुनिया उच्छिन्न समुदायक बिडंबनापूर्ण पहिचान, शहरी मध्यवर्ग आ ओहिमे स्त्रीगणक स्थिति काजधंधाक एकटा नवीन संसारमे प्रवेश करवाली कमयनिहारि श्रमिक सभ आ अपवादस्वरूपमे निकटतम अतीतक स्वतंत्रता-संग्रामक समस्या सभसँ परिभाषित होइत अछि। ई समस्या सभ कोनो-ने-कोनो रूपमे हमर आधुनिक जीवनमे जड़ि बनि गेल अछि वा पुनः परिवर्तनक नव बाट ताकि रहल अछि। रेणुक लघु उपन्यास सभमे ओकरा एकटा परिप्रेक्ष्य तँ प्राप्त होइछ, मुदा ई रचना सभ ओहि तरहक कोनो लक्षण नहि प्रकट करैत अछि जे कि "मैला आँचल'सँ प्रकट भेल अछि।

"दीर्घतपा", "जुलूस" 'कितने चौराहे" आ "पलटू बाबू रोड" एहने लघु उपन्यास अछि। लगैछ, अपन एहि सभ उपन्यासमे प्रयोगक लेल रेणु नव अनुभवक संभ्रमपूर्ण स्थितिसँ गुजरि रहल छलाह। हुनक मोनमे एकटा आर नव धरती तोड़बाक लालसा कतहु रहि गेल छल। ओ एहि समस्या सभक मार्गसँ आधुनिक जीवनक ओहि बृहत्तर क्षेत्रमे प्रवेश करय चाहैत छलाह, जकर बिना कोनो बृहत्तर उपन्यासक संभावना भइए नहि सकैत अछि। बात-बातमे ओ बजितो छलाह जे एक बेर फेर "मैला आंचलक" पात्र सभसँ नव परिस्थितिमे भेंट करताह। आ सेहो जेल मे। कथानकक आकार हुनका भीतर पाकि रहल छल।

'जुलूस' एहि दिशामे एकटा आकर्षक आ गंभीर प्रयोग बनि सकैत छल। ओहिमे रेणु एकटा पैघ समुदायक उच्छेदन आ पुनर्वासक भावात्मक समस्याकेँ माध्यमसँ जातीय अन्तर्लयनक प्रश्नपर विचारेटा नहि कयलनि ओकरा एकटा सामाजिक घटना-क्रममे साकार सेहो कयने छथि। "जुलूसक" चर्च करैत अच्चक्के "झूठा सच" केर "देश और वतन" खंडक स्मृति अबैत अछि, जाहिमे यशपालजी दू राष्ट्रक सिद्धांतक राजनीतिक सामाजिक परिणति सभक विडंबनापूर्ण भविष्य केर बड़ गंभीर अर्थ-संकेत व्यक्त कयने

छलाह । उच्छेदित समुदायकेँ एकटा देश तँ भेटल, मुदा राष्ट्र छिना गेल । एहि राजनीतिक देशमे हुनक अपन समाज नहि छल, एकटा सर्वथा दोसर लय केर संग एकात्म होयबाक समस्या एहू कारणेँ भावात्मक रूपमे जटिल भय गेल छल ।

ई जातीय उच्छेदन मात्र पश्चिममे नहि भेल छल, पूरबमे सेहो भेल छल । एहि पूर्वी क्षेत्रक समस्या सभ आओरो जटिल छल । भारतक ई पूर्वी क्षेत्र गरीब किसान, मजदूर आ ग्राम-कर्मी लोकनिक छल । पंजाबक तुलनामे पूर्वी बंगालक अप्रवासी सबहिक सामाजिक स्वरूप सर्वथा भिन्न छल । पूरबसँ आबयवला ई गरीब लोक अपेक्षाकृत पिछड़ल, अशिक्षित, कुपोषणसँ पीड़ित, अमानवीय यातनाक शिकार लोक छल । सभसँ पैघ समस्या हिनका समक्ष भाषा छल । जाहि कारण ओ अपन पुनर्वासक देशसँ एक नहि भऽ पाबि रहल छलाह । पंजाबी शरणार्थीगणक संग एहेन दूरी नहि छल । "जुलूस" एहि पूर्वी शरणार्थीक बिहारमे पुनर्वासक कथानक केँ कहैत अछि ।

आजादी देशक विभाजनक केर संग आयल छल आ विभाजित उच्छेदित लोकक लेल अकल्पित आयामक समस्यासँ भरल आयल छल । दीर्घ संघर्षक उपरान्त जाहि तथाकथित भविष्यमे ई जन-समुदाय फेक देल गेल छल, ओकर किछु अपन बिडंबना सभ छलैक । ई समुदाय हिन्दूकेर छलैक आ भागि केँ एहि आससँ आयल छलैकजे ओकरा सरिपहुँ अपन माटि आ जनक संरक्षण भेटतैक । मुदा भेल किछु आओरे । — पूर्णियाक ओहि आवास कैंपकेँ स्थानीय लोक कहलक– "पाकिस्तानी टोल"—

यातनाक़ बाहीर आकारसँ ई भीतरी प्रतीति बेसी दुःखद छल । देस आ जनक संग अंतर्लयनमे अप्रत्याशित दूरी उत्पन्न भय रहल छल । देशोसँ बेसी जनक संग । अपन नायिकाक माध्यमसँ एहि बोधकेँ रेणु कोनो शोक-गीतक कड़ी जकाँ अन्तर्ध्वनित होमय देने अछि ।

दुर्भाग्य ई छैक जे तत्त्व एहि विस्थापितक प्रति सहानुभूति दैत रहल छैक, ओ असामाजिक अछि आ ओकर मोन साफ नहि अछि, खाहे ओ स्थानीय हो वा क्षेत्रीय, साधारण हो वा प्रभावशाली । एहि परिस्थितिक बेढ़ आ तनावकेँ एक बेर फेर एकटा जीवित समुदायक संग जोड़ि रेणु जे प्रयोग करैत छथि, ओकर अत्यन्त तिक्त आ व्यापक संभावना सभ छल— । मुदा, नहि जानि किएक "जुलूस" क कथानक अनचोके जड़ भय गेल ... ओकरा नाटकीयतासँ भरनाइ अनुचित होइत । नीक भेल जे एहि कथानकक घिच्चातिरी रेणु बेसी नहि कयलनि ।

"जुलूस" यातना भरल पीड़ासँ बढ़ि कय चीत्कार नहि बनि सकल । मुदा तैयो, ओहिमे एहेन अंतर्मार्ग तँ बनिए जाइत छैक जकरा द्वारा हम एकटा सर्वथा भिन्न प्रकारक "देश" मे आबि जाइत छी । 'जुलूसक" गति देशमे जतेक अछि, कदाचित् कालमे ओतेक नहि । वस्तुतः पुनर्वासक समस्याक काल-संबंध ओतेक मौलिक नहि होइछ जतेक देशक

संबंध होइत अछि। धर्म-संस्कारसँ एक होइतो दू समुदायक भेद जड़ताक हद धरि बनले रहि जाइछ, तखन समस्या गंभीर बनि जाइत छैक। पाकिस्तानी टोलक ई गरीब हिन्दू पूर्णियाँक धरतीपर अनचिन्हार बनल रहि जाइत छैक, समस्त सदिच्छा एवं सरकारी सद्भावनाक उपरान्तो प्रायः हुनका एहि देशक संग ओतेक घनिष्ठतो नहि भेल जतेक पश्चिमी पंजाबी जन-समुदायक भेल।

उपन्यास वस्तुतः ओहि दिशामे आगू नहि बढ़ल आ ने कथाक परिपार्श्व-विस्तारक लेल अंतकर्था सभ तैयार कयल गेल अछि। ई समस्त लघु उपन्यास अपन संरचनामे पार्श्वधर्मी नहि बनि एकात्मक लक्ष्य दिस उन्मुख छल एकटा समस्याधरि केंद्रित समस्या छल जातीय अंतर्लयनक। मुदा, ई समस्या मात्र सद्भावनासँ हल नहि भय सकैत छल। भारतीय गाममे जे कठोर जाति-व्यवस्था आ स्थानीयता अछि ओहिसँ समस्त प्रयत्न बाधित होइछ। रोटी-बेटीक संबंध भेने बिना समुदाय सभक परस्पर संबंध नहि बनैत अछि। सरकारी व्यवस्था ई नहि कय सकैछ, एकरा सामाजिक परिवर्तनसँ संभव बनाओल जाय सकैछ। रेणु रोमांसक किछु एहेन सामाजिक रंग देने रहितथितँ कथामे बेसी नाटकीय तीव्रता आबि जाइत। "मैला आँचल"मे ओ एहि दिशामे डेग उठओने छलाह।

उपन्यास एकटा जीवित समस्यासँ प्रारंभ भऽ कऽ छोट-छोट गतिविधिमे ओझराकेँ रहि गेल। ई छोट गतिविधि सभ सेहो अपन संश्लिष्टतामे एकटा एहेन रूप पाबि सकैत छल, जाहिसँ गतिशीलता ओ अंतरावलंबनकेँ शक्ति भेटैछ। मुदा, एकटा नीक, उत्तेजक आ सामाजिक कथा एतय अनेरे छिरिआ गेल। नाटकीय उपचारक उपरान्तो ओहिमे ओ प्रभाव उत्पन्न नहि भेल जे रेणुक कलमक अपेक्षा रखैत छल। एहि लेल "जुलूस" केँ 'झूठा-सच' बनयवाक आवश्यकता नहि छल।

"दीर्घतपा" प्रकाशित भेल तँ ओकरासँ बहुत आशा छल। धरती दीर्घतपा आर नारी। भारतीय समाजमे नारीक तापसँ बेसी तबधल जमीन कतय भेटत। जतय धरती खाली गरमाइत अछि, ओतय नारी तबधाइत अछि। आइ मध्य-वर्गक परिस्थिति घर-बाहरक समस्याक समाधान स्वतः कय देलक अछि। नारी घरक बाहर आसिब गेल अछि। कार्यकर्त्री स्त्रीक जिनगी घूर पर उगल गोबरछत्ता जकाँ अछि। वर्तमान समाजक नाभिनालसँ टूटल ई परिस्थिति सरिपहुँ आइयो ओतेक सह्य नहि अछि। ई जीवन दीर्घतापसँ तपैत अछि।

कथा कार्यकर्त्री स्त्रीक छात्रावासक परिवृत्तमे सीमित अछि। मुदा ओकर जड़ि सम्पूर्ण समाजमे कतहु देखार भय सकैत अछि। ओकरा एकटा फराक संसार जकाँ देखल जा सकैछ। तैयो ई दुनिया अनेको अपवाद अशंका आ संभावनाक विषय थीक। शहरी जीवन सेहो वस्तुतः सामंतवादी सामाजिक बंधनसँ मुक्त नहि अछि। एकटा द्वीपजकाँ अलग-थलग बसल एहि संसारक भीतरी परिस्थिति आओरो विचित्र अछि। जे सहयोग आ एकता ओहि छोट सन दुनियामे होयबाक चाही, सएह लुप्त अछि।

ऊपरसँ एक दिस संश्लिष्ट लगयवला ई समुदाय भीतरसँ खंडखंडमे बाँटल अछि। प्रत्येक व्यक्ति एकटा द्वीप अछि। अपना-आपमे बंद आ कसल -कसल। एकटा आततायी अव्यवस्था एकरा आओरो असहाय बना दैत छैक। रेणु एहि परिवेशकेँ ओओरो गाढ़ रंग दय सकैत छलाह हुनकामे एहि क्षमताक कभी नहि अछि। ओना उदास रंगक अपन प्रभाव तँ होइते अछि। गाढ़ रंग देबाक अर्थ घटनाक नाटकीयतासँ नहि लेबाक चाही। ओकरा संघर्षक बेसी व्यापक मनः स्थितिसँ जोड़ल जयबाक चाही। ओकरा लेल अपन द्वीपवत् पात्रकेँ अतीतमे लय गेनाइ आवश्यक नहि छलैक।

कार्यकर्त्री स्त्री, विशेषतः कुमारिक जीवनपर एकटा प्रामाणिक रिपोर्टिंग सेहो बड़ बेसी प्राणवंत भय सकैत छल। एहि पर लिखनाइ एहू लेल आवश्यक छल जे हमर बुर्जुआ समाजक ई संस्था सभ आस्ते आस्ते समाजमे उगैत तँरहल मुदा ओकरा सामाजिक मान्यता प्राप्त नहि छलैक। एहि अमान्य समुदायकेँ अपन सामाजिक अस्तित्वक लेल निरंतर संघर्ष करबाक छलैक। महानगरक रूपमे ई संस्था स्वीकार कय लेल गेल छल। मुदा, सामान्य प्रांतीय शहर आ राजधानी धरिमे स्थिति अत्यन्त जटिल बनल छल। एहि पृष्ठभूमिमे 'दीर्घ तपा' कँ एहि नामक वास्तविक मर्यादा भेटि सकैत छलैक।

सामंती समाजमे श्रमकेँ ऊँच दृष्टि ए नहि देखल जाइत अछि। काज करयबला ओछ बनि जाइत अछि ई संस्कार किछुँ एतेक जड़भय गेल अछि जे श्रमक प्रति हमर आचरण संदेहास्पद भय गेल अछि ? सामाजिक असमताक स्थितिमे आत्मनिर्भरताक लेल जे थोड़ आर्थिक सुविधा प्राप्त भेल अछि, ओकरा सामाजिक दृष्टिए तोड़ैत अछि। "दीर्घतपामे" एकर पृष्ठभूमि तैयार कयलगेल आ ओकरा लेल एकटा उचित प्रामाणिक परिवेश सेहो चुनल गेल। पुरैनिया-मेरी गंजक परिवेश सँ भिन्न पटना नगर समाजक केंन्द्रमे कथा आनल गेल। मुदा, एकर बाद जेना ओकरामे गिरह पड़य लागल। एना लगैछ जेना उपन्यास ओहिठाम समाप्त भय जाइत छैक, जाहि ठामसँ चरित्र देखार होमय लगैछ आ स्थिति सभ टुटबाक स्थिति धरि पहुँचि जाइत छैक।

"दीर्घतपामे" नाटकीयता पात्र सभसँ नहि अवैछ, परिवेशसँ अबैत अछि। स्पष्ट छैक जे ओकर स्त्रोत जीवनसँ अलग भय 'वातावरण' तक सीमित भय जाइत छैक। ई वातावरण सेहो अपना-आपमे एकटा बंद परिवेश थीक जाहिमे उथल-पुथलक स्थानपर असह्य तनाव भरल अछि। एहि तनावमे सेहो आत्यंतिक संभावना छल आ "दीर्घतपामे रेणु ओकर जीवित उपयोग कय सकैत छलाह। हमरा जनैत दीर्घतपामे बिना कोनो अंतर्क्षेपकेँ कथानक क अंतर्विस्तार संभव छल। रेणुकेँ अवश्ये ई कला अबैत छलनि जे घटनाक बाहरो अपन सक्रियता सिद्ध कय सकैत छलाह। मुदा, "दीर्घतपामे कथानककेँ बाहर-भीतरसँ लेखक बंद रखलनि ओकरा फुजबाक अवसर नहि देलनि।

सभसँ पैघ सीमा एहि उपन्यासमे चरित्रक अछि। सामान्यतः परिस्थितिक सपाटतासँ

चरित्रक रंग-रेखा सेहो उभरि नहि पवैछ। चरित्र फुजबाक लेल चीत्कारो नहि कय पबैत छैक। चरित्रक संग रेणु जाहि तरहेँ आत्मीय होइत छथि, ओकर बड़ नीक प्रमाण एहि उपन्यासमे तँ कसँ कम नहि भेटत। सहानुभूति अछैतो रेणु एहि घिसिआइत पात्रमे स्वलक्षणशीलता उत्पन्न नहि कय सकलाह। वस्तुतः एंहि चरित्र सभमे विस्तारक संभावना छल, ओकरा ओकर अंतमार्गसँ प्राप्त कयल जा सकैत छल। मुदा, चरित्र सँ होइत कोनो अंतर्मार्ग एहि उपन्यासँ बहराइत अछि। 'वातावरण' आवश्यकतासँ बेसी अंतरंग बनल रहैछ आ एकटा दूइटा नाटकीय सूचना सभ सेहो एहि एकरसता कँ तोडि नहिं पवैत अछि।

"दीर्घतपाक" प्रकाशन ओकर रचनाक दू बरखकबाद संभव भेल। अपन एहि उपन्यासकभूमिकामे लेखक एकर उल्लेख कयने छथि। संगहि ओ एहि उपन्यासककेँ आँचलिक अनाँचलिक घेरासँ बाहर आनि मात्र उपन्यास कहलनि। उपन्यासक विषय-वस्तुक संबंध एकटा सहकारी संस्थानमे कार्यरत (प्रशिक्षणरत) महिला सभक ओहि आंतरिक दुनियासँ अछि, जकर जड़ता आ उथल पुथल कतोक लाक्षणिक विशेषता में जन्म दैत अछि।

"वर्किंग विमेन्स होस्टल" प्रत्येक पैघ शहरमे उगि आयल संस्थामेसँ अछि। छोटकी मेम साहब (मिस बेला गुप्त) आ बड़की मेम साहब (मिसेज आनन्द) क बीच लसकल एहि दुनियाक अपन परिस्थिति सभ अछि, अत्यन्त जटिल आ नाटकीय, मुदा, अधिकारक अढ़मे अत्यन्त घिनौन संघर्ष एहि उपन्यासमे चलैत अछि। थि,ज आनन्द प्रत्येक संस्था केरनव अधिकार प्राप्त शासिका छथि जकर–"शासिका" छथि जकर उपयोग अनेक शक्तिम व्यक्ति द्वारा होइछ। बेला गुप्त एहि "तंत्र" क विरुद्ध एकटा मानवीय दुनियाक लेल संघर्षरत किन्तु विवश चरित्र अछि।

"वर्किंग विमेन्स होस्टल–" मे पात्रक भीड़ भेनाई स्वाभाविक अछि। अपन-अपन नाभि-नाल सँ कटल एहि पात्र सबहक एहि नव दुनियामे कतेको अंतर्विरोध छैक आ एहि अंतर्विरोधसँ उत्पन्न एकटा समस्या अछि। ई समस्या पुनर्वास जकाँ जटिल अछि। ई समस्या पुनर्वास जकाँ जटिल अछि। एहि अर्थमे हम एहि उपन्यासकेँ "जुलूससँ भिन्न किन्तु ओकरे एकटा अगुलका कड़ीजकाँ देखि सकैत छी। बेलागुप्ता एहि दुनियाक केन्द्रमे अछि, एकटा दृढ़ संकल्प मुदा विवशनारी। आ हिनका संग-संग एहि दुनियामे बंदी समस्त चरित्र (पात्र) अछि। अंजु-मंजु, रमला आर गौरी एहेन लड़की सभ सेहो अछि आ रामरति एहेन अनुभवी परिचायिका सेहो अछि। एकर अलावे कतेको महिला-पात्र छथि, जेना चंद्रमोहिनी, विंभावती, रुक्मिणी आ कुंती देवी। एहि प्रकारें दुनियाक भीतर केर दुनिया आओरे विभाजक जनाइत अछि। कुंती देवीसँ शेष तीनू लड़की नहि बजैत अछि। एकर कारण संकेतहिसँ बुझबामे आबि जाइछ। मिस बेला गुप्ताकेँ विभावतीमे अपन प्रतिकृति यदि देखाइ पड़ैछ तँ ओहिमे आश्चर्य की!

एही दुनियाक एकटा पात्र सुखमय घोष सेहो छथि। कलाकारक अतृप्त आत्मा

लेने एहि पात्रक पीड़ा सेहो ओहि एकान्तक पीड़ा अछि जकरा बाहरसँ चीन्हनाइ असंभव अछि। मिसेज आनंद अपन अंदाजमे जखन ओकरा "घोष्ट" कहैत अछि तँ लगैत अछि जेना एहि व्यतिक्रममे सेहो एकटा नियति मूर्त्त भय रहल अछि। मिसेज आनंद एहि कलाकारकेँ अपन दयाक घेरा मे आनि छोटकी मेम साहबक विरुद्ध तैयार करैत अछि। दुश्चक्र भरल एहि कथानकमे अवश्ये रेणु एहिमठाम आत्मा दयदेने छथि। मुदा, कथा एहि आत्मीय स्थितिमे सेहो अपन जड़ताक एकटा अंग बनि घिसिआइत चलि गेल। बाहरी दुनियासँ ओकर सम्पर्क अत्यन्त घृणित एवं आतंककारी स्थितिमे होइछ-पी. साहब आ डी. साहब ऐन तथाकथित साहब सभ द्वारा उत्पन्न स्थिति सभमे।

हिनकर मध्य प्रोफेसर रमा निगम आ रेवा वर्षा एहेन दबल-घुटल पात्रक स्थिति आरो विचित्र छैक। हिनका एहि दुनियासँ आंतरिक समझौता करहि पड़ैत छनि। अपन सत्ताक ई विसर्जन केतक मारुक अछि! मुदा, मारुक परिस्थिति सभक एहि छायामे जिनगी चलैत रहैछ, व्यर्थता आ जड़तासँ आहत, निस्सहाय "दीर्घतपा"नारीक ई दैनन्दिन जिनगी हमरा समक्ष अनेको समस्या उत्पन्न करैछ, विचलनक समस्या! ई विचलन तथाकथित आधुनिक जीवनक एकटा अनिवार्य अंग छैक। एकरासँ बचल नहि जा सकैछ। मिस बेला गुप्ता सेहो विचलनक शिकार भय जाइत छथि। लेखकक शब्दमे ई हीन मनोवृत्ति सभक कुहेस अछि जे संपूर्ण समाजपर पसरि गेल अछि। मिस बेला गुप्ता गिरफ्तार भय जाइत छथि, एहि हीन मनोवृत्ति वला तंत्रक निसान बनि जाइत छथि।

एहि कठोर आ प्रायः अनन्य परिस्थितिक उपरान्तो उपन्यासक कोमल तंतु जतय ततय पसरल अछि। गौरी, मिस बेला गुप्ता एहने कोमल जनिका अन्ततः बिखरय पड़ैत छनि। कोमल आ कठोरक एहि तनावमे एना भेनाइ स्वाभाविक भय सकैत छैक, मुदा ओ एकटा नैतिक संकट उत्पन्न करैछ –वर्तमान समाजक नैतिक संकट। लेखक यदि एहि नैतिक संकटकेँ कोनो आर कोणसँ उभारि सकितथि तँ एहि उपन्यासक संभावना देखार भय जाइत लगैछ। जेना देखार होमक लेल अपस्याँत एहि उपन्यासक -कथावस्तुकेँ अझक्के समाप्त कय देने होथि। की देखार होमक मात्र अउनाहटिभरिसँ संतोष कय लेनाइ एहि कथावस्तुक संग अत्याचार नहि लगैछ? रेणुकेँ अपनो एहने, लगैत छनि जेना' एहि उपन्यासक प्रधान नायिका हुनका ठकने होथि। मुदा ई "धोखा" नहि, अदृश्य हाथसँ गला सँ उभरयवला चीत्कारक रोध अछि जे एहि उपन्यासमे हमरा आहत आ निस्तब्ध कय जाइत अछि।

"दीर्घतपा" निश्चित रूपसँ आधुनिक जीवनक बिडंबनाकेँ समाजक एकटा एहेन व्यापक स्तर पर प्रकट करैछ जाहिमे भावी पीढ़ीक नियति सेहो वर्तमान सँ जोड़ल लगैछ। ओहि अन्नपूर्णाक की होयत जकरा लेल मिस बेला गुप्ता सभटा यंत्रणा चुपचाप सहि लेलनि। मुदा, ई रास्ता हमरा एकटा अन्हार बाटमे छोड़ि दैत अछि। उपन्यासक ई समाप्ति

अवश्ये करुणापूर्ण छैक मुदा, एहिसँ बेसी किछु नहि। सकरुण, मार्मिक आदि विशेषणसँ भरियो कय हम एहि समस्याकेँ अपन परिणति धरि नहि पहुँचा सकैत छी।

रेणुक बृहद् उपन्यास जकाँ हुनक समस्यात्मक उपन्यासमे सेहो घटना-चक्रक प्रबलतामे कोनो विशेष अन्तर नहि अबैत छैक। करीब-करीब सभटा उपन्यास एकटा हिलकोर भरल परिवेशक संकेत दैत अछि। अन्तर बस एतबे अछि जे जाहिठाम पहिल दुनू उपन्यासक परिवेश आंचलिक रहितो बड़ व्यापक अछि, ओहिठाम एहि उपन्यास सभमे ओ व्यापकता नहि छैक। "पलटू बाबू रोड" एकटा परिवारक केन्द्रमे परिवर्तित होइत कस्बाक रोमांचक कथा थीक, जाहिमे अपन लघु रूपमे अनेको समकालीन वास्तविकता प्रतिकृत भेल अछि। मुदा एहि प्रतिकृतिमे ओ जीवंतता नहि छैक जे पहिलुक दुनू उपन्यासमे छैक। तीव्रगतिसँ परिवर्तित कस्बाक कथामे कतहु आंतरिक अस्त-व्यस्तता सेहो लक्षित होइत अछि। कथा आजादीक तत्काल बादक घटनाक्रमसँ जोड़ल अछि।

राय परिवारक आंतरिक यंत्र खराब अछि। परिवारक प्रत्येक सदस्य एहि खराब आ यांत्रिक स्थितिसँ खिसिआयल अछि, खाली बिजली आ लट्टू बाबूकेँ छोड़ि। बिजली स्थानीय गोछमलक संग सीमेन्ट कंपनीमे पार्टनर (हिस्सेदार) अछि। वैरगाछीक राय परिवारक ई असंभवता एकटा कुमारिक संपूर्ण जिनगी पर पसरल अछि, पसरल रहत। "पल्टू बाबू" रोडक धारावाही प्रकाशक (ज्योत्सना, पटना) अचक्के रूकि गेल छल पुनः एकटा दीर्घ अन्तरालक बाद, रेणुक देहावसानक उपरान्त प्रकाशित भेल। बिजली हमरा निस्तब्धताक हद धरि प्रभावशाली लगलीह। बिजलीक निस्तब्धता एखनो छल, मुदा ओकर अतिरिक्त घटन-क्रम नव मोड़ लय लेने छल। गोछमलक चुंबनकेँ निर्विरोध सहैत बिजली जेना अपन निस्तब्धतामे घटनाक्रमक संग बहैत रहैत अछि। गोछमल -मुरली मनोहरक भेद आब ओकरा लेल प्रायः अर्थहीन भय गेल अछि। ओ अपन नियतिक आरपार देखय जोगर तँ भय गेल छलीहे। परिस्थिति सभ ओकरा भीतर-बाहरसँ समान रूपे निरर्थक कय देने छल। अपन निस्तब्धतामे ओकर आंतरिक आकार आर स्पष्ट भय उठैत छैक। "पलटू बाबू रोडमे" अमलेन्द्र रायक परिवार कहियो अपन उत्कर्षपर छल। आय एकटा पतनशीलता ओकर भीतर-बाहर व्याप्त छैक। बिजली एहि पतनशीलता क केन्द्रमे अछि। तीन-चारि पीढ़ी क एहि परिवारक कथा एकटा संपूर्ण शताब्दीकेँ स्पर्श करैछ। मुदा ई स्पर्श कतेक टेढ़ छैक। मृत्यु सन शिलीभूत -स्पर्श। मुदा, देश-कालातँ एहि परिवारक बाहर सेहो अछि, जे निरंतर बदलि रहल अछि, मुदा, ई परिवर्तन कतय लय जा रहल अछि, हमरा। "पलटू बाबू रोड" कतय लय जा रहल अछि हमरा। काश ! रेणु एहि समस्यापर एकटा भरल-पुरल उपन्यास लिखि सकितथि ! पाथरक घेराबंदी बिजलीक तरल सन जिनगी के बेर-बेर आहत कयने अछि। परिवारक एहि देवारकेँ तोड़ि निकलबाक कोने बाट नहि–"आरि पारि ना" ! कतेक असमर्थ अछि बिजली। ओकर असमर्थताकेँ पारदर्शी

बनाए रेणु पैघ काज अवश्य कयने छथि। प्रायः ''दीर्घतपा' नारीक दोसर किस्त थीक ई उपन्यास! बैरगाछीक राय परिवारक संग जाहि व्यक्तित्वक वट-वृक्ष सनक छाहरि जोड़ल अछि, ओ छथि पलटू बाबू। पलटू-लट्टूक संयोग सेहो एकटा रोचक अन्तर्कथा छैक-रोचक आ संगे जड़ता भरल। एहि लट्टू बाबूक बेटी आइकाल्हि गोछमलक छत्रछायामे अछि। छेटा-फैला आ रमा छवि, कना किशोर किशोरी सभ थिकीह। ''फूल बगान'क ई दुनिया विक्टोरियन सँ बेसी पिकारेस्क अछि। विक्टोरियन पतनशीलता आ पिकारेस्क उपसंकरणक एकटा विचित्र आतंकसँ भरल कथा, जे तथाकथित आधुनिकताक संदर्भमे आर त्रासद भयऽगेल अछि।

राय परिवारक संग भोला सहाय केर परिवारक कथा जुड़लो छैक आ स्वतंत्रो छैक दूनूक सूत्राधार पलटू बाबू छथि जकर प्रत्येक आंगुरमे एकटा सूत अछि जाहिसँ पुतली नाच करवैत रहैत छथि। एहिठाम माणिक वंद्योपाध्यायक ''पुतुल नाचेर इतिकथा'क स्मृति स्वाभाविक रूपसँ अबैत अछि। मुदा, कतेक अंतर अछि एहि दुनू कथामे! पलटू बाबूक संकेत पर ई समस्त पुतली नचैत रहैत आ एक दिन अचक्के ओ हाथ सर्वदा लेल काज कयनाई बन्द कय दैत छैक। मुदा तावत बिजली, फैला, घंटा, छवि कना आ सभसँ बेसी कुंतलाक जिनगी बदलि जाइत छैक। प्रायः ओ सभ अपना पएरपर होयबामे असमर्थ छथि। किछु अर्थहीन बनयवला जिनगीक ई कथा की सरिपहुँ अर्थहीन अछि! ओहिमे एकटा सम्पूर्ण उत्थानक मर्मांतक पीड़ा भरल अछि। एहि अवसादक परिस्थितिक प्रति रेणुक उन्मुखता निरर्थक नहि भयऽ सकैछ। ओ एहि परिवर्तनक दिशाकें तँ यथासंभव चीन्हवाक प्रयत्न कयऽ रहल छथि।; ऊपरसँ ई परिवर्तन जतेक तीव्रगमी छैक, भीतरसँ ओतेक खाली किएक! ई परिवर्तन ककर हितमे छैक! कोन निहित स्वार्थक पूर्ति करैछ! कतय जा रहल अछि ई सड़क आ कतय लय जा रहल अछि हमरा सभकेँ। उपन्यासक ई समस्या की पूर्ण सामाजिक विचलनक अतिरिक्त आर किछु नहि छैक?

परिवारक केन्द्रमे आर्थिक-सामाजिक समस्या सभसँ घेरल गुरुजनक मानसिकताकेँ बुझबाक लेल हमरा एहि उपन्यास दिस उन्मुख होमय पड़त। अवस्से एहिमे समस्याक अभियोजनक प्रति लेखकक संबंध बड़ महत्त्व राखैछ। मुदा ओकरा प्रति एकटा विचित्र सँभ्रम सेहो एहि उपन्यासमे छैक जे ओकरा कमजोर बनबैत अछि। मुदा, ई सीमा सभ समस्यात्मक उपन्यासक अनिवार्य सीमा छैक। कलात्मक रूपमे अपन कथा-प्रवाह आ नाटकीयतामे एहि उपन्यासकेँ ''मैला आंचल'' जकाँ तँ नहि कहल जा सकैछ, मुदा ओहिमे ई सभटा लाक्षणिक विशेषता सभ वर्तमान छैक। अवस्से उपन्यास एकटा अवसादक– आ त्रासद प्रभाव सेहो पाठक पर छोड़ैत अछि। एकटा अदृश्य दबाव ओहि सम्पूर्ण उपन्यासक समस्यापर छैक आ ओकरा प्रति रेणु पूर्ण रूपेण सजग बुझि पड़ैत छथि। तैयो ई उपन्यास कतेको दृष्टिसँ ओहेन नहि बनि सकल जेना प्रारंभमे लगैत छल। 'जुलूसे'

जकाँ एकटा जीवित समस्या प्रारंभ कय लोक ओकरा एकटा अत्यन्त नैराश्यपूर्ण परिस्थितिमे आनि छोड़ि देलनि ।

"पलटू बाबू रोडमे" मध्यम-वर्गक जीवनक बहुप्रामाणिक परिवेश अछि । कथा रिपोर्ताजक वृत्त शैलीमे अनेको साहचर्यसँ खंड-खंड जोड़ल जाइत छैक, मुदा जीवन-प्रक्रियामे सहजहि जुड़ैत जाइत छैक आ कथा आस्ते-आस्ते एकटा आकार लय लैत अछि । "पलटू बाबू रोडमे" सामान्य जीवनक जड़ताकेँ सूचना आ समाचार तोड़ैत अछि-जीह रसक सभटा स्वाद एहि समाचारक संसारमे छै ।" पलटू बाबू रोड" भारतक नगर सभ केर कस्बा थीक । ई कस्बा प्रत्येक नगरक सीमान पर अछि । एतेक धरि जे महानगरीमे ऐहन कस्बा अछि जाहिमे जीवनक प्रवाह अपन ढंगसँ प्रवाहित होइत अछि । अवस्से नगरमे सेहो ई कस्बा अपन वातावरणमे अलग अछि । एहि ठा प्रत्येक आदमी प्रत्येक आदमीकेँ जनैत अछि । ई परिचय मात्र जनबा व कि चीन्हवाधरि सीमित नहि अछि । अंतरंग सूचना सभ एकर नाटकीय पहिचानकेँ आरो सघन, संगहिजटिल, बनबैत अछि ।

कस्बाक ई हिस्सा जेना आइधरि एकटा नीन्नक जड़तासँ मुक्त नहि भय सकल अछि । शहर महानगर दिससँ बढ़ल जा सकैत अछि, मुदा ओकर आत्मा कतौ एहि विस्तार मे नहि अछि । समय एहि देशकेँ जँबरदस्ती घीचिकेँ आगू लय जयबाक लेल उताहुल अछि आ "देस" जेना ठमकि गेल अछि । देशमे ई जड़ता भारतीय-ग्राम समाजक लाक्षणिक विशेषता अछि । शहर सँ सेहो एहि ग्राम-समाजक लाक्षणिकता एखन समाप्त नहि भेल अछि । वस्तुतः पश्चिमी ढंगक शहर औद्योगिकीकरणक एहि रेसमे एखन बनिए रहल अछि आ ओकर संक्रामक लक्षणमे एकटा ग्राम समाज छैक, जे शहरक सम्पूर्ण जीवन-प्रक्रियाक एकटा हिस्साकेँ सामाजिक अस्तित्व आर रंग दैत छैक ।

एहि ग्रामीण समाजकेँ अवशेषक समस्त प्रभाव परिवारपर देखबामे आयत । ई परिवाार अपन भौतिक आधारसँ टूटि कयऽ अपन संस्कार-व्यवहार सभ आ विचारधारा-भावधारामे मूल परिवेशहिसँ जुटैत अछि । लोक सभ समस्त छोट-छोट घटना सबहिक तनावमे रस लैत छथि आ तनाव समाप्त भेला पर दोसर घटनाक सूचना एकत्र करवामे व्यस्त भयऽ जाइत छथि । ई हुनक जीवन-चर्या थीक । प्रायः जीवन-चर्याक केन्द्रमे कोनो स्त्री होइत अछि—सामान्यतः विधवा वा कुमारि । भारतीय कुमारिक नियति ग्राम-समाजसँ बाहरो वैह अछि, जे ओकर भीतर अछि । शाहरक वातावरण सेहो ओकरा एहि नियतिसँ मुक्त नहि करैत अछि । कस्बापर गाम पसरि जाइत छैक । वस्तुत : "पलटू बाबू रोड" पूर्णियाक एकटा गाम अछि-शहर क सीमान पर टिकल गाम जे बाहरसँ तँ बदलि गेल, मुदा भीतरसँ वैह अछि, जे ओ छल ।

एहि अपरिवर्तनीय गाम-समाजक प्रेत-छाहरिमे "पलटू बाबू रोड़" पोसाइ रहल अछि अपवादमे— अफवाहमे, उत्तेजक सूचना सभमे । निरीह लगयवला चरित्र सभमे

सूचनाक लेल कतेक ऊर्जा छैक । एहि मूर्खतामे बंदी ऊर्जाकेँ मुक्त करय पड़य, भारतीय नारीक नियतिसँ जोड़ल ई कथानक कतहु-ने कतहु वास्तविक जीवनक विकास लेल एहि ऊर्जाकेँ मुक्त करबाक एकटा संकेत अछि । कोनो निश्चित घटना-क्रम बिना चलयवला ई जीवन अपनहि महाजालमे ओझरा गेल अछि । ओकरा एहिसँ मुक्त कयऽ फेरो जीवनक साधारण प्रभाव-क्षेत्रमे आनय पड़त । रेणुक पहिचानक ई पक्ष बड़ उत्तेजक भय सकैत छल । भरिसक रेणु एकर चेष्टो कयने छथि । मुदा मानवीय भावना आ संबंध सभक एहि मूर्खता भरल दुनियामे जे दुःस्वप्नभरल चालन छैक, ओहिसँ भारतीय नारीकेँ मुक्त करबाक प्रश्न असाधारण-आयामक प्रश्न थीक । एकर असाधारणताक कारण एहि तरहेँ बुझबामे अछि जे कस्बामे प्रत्यारोपित भऽ कऽ ई ग्राम-समाज वस्तुतः समाज नहि भऽ कऽ परिवार-समुदायक रूपमे एकटा अवाचक संबंधसँ जोड़ल होइत अछि । "पलटू बाबू रोडमे वस्तुतः ग्राम-समाजक जे आभास होइत अछि ओ अपन गतिशीलताक कारण नहि, छिरियायब मुक्तिक कारणेँ अछि । अपन पिछड़ापनक कारण ओकरा हम गाम-गमार मानि तँ सकैत छी, किन्तु, गामक नैसर्गिकता आ सहजताक, संबंधक अंतरंगताक, कोनो आभास एहि समाजमे नहि छैक । स्थानक केन्द्रसँ कथाक अनेको धारा एक-दोसरकेँ कटैत एकटा समुच्चय उपस्थित करैत अछि । ई कथा-धारा सभ कथा-चक्र जकाँ पूर्ण नहि अछि । एहि लेल एकर शिल्पमे कथा-चक्रक संश्लिष्टताक बदला एकटा तीव्र प्रवाह अछि । रिपोर्ताजमे वृत्त निर्माणक फिल्म शैलीक लेल एकर उपयोग कयल जा सकैछ । वस्तुतः "पलटू बाबू रोड" कथा नहि, दृश्य-वृत्त अछि । एकर संरचना स्फटिकजकाँ अछि –एकरासँ अनेको पक्ष निकालल जा सकैछ ।

कुमारि कन्याक समस्या हमर समाजक जेना अनादि समस्या थीक । मुदा, एकर विस्तार आ आकार सभ एक ठाम नहि छैक । हँ एकर प्रवृत्ति अपन आकार-प्रकारसँ स्वतंत्र छैक । एहि कुमारि सभ पर असंख्य कथावृत्त-नाटक, रूपक आ रिपोर्ताज लिखल गेल अछि । रेणुक उद्देश्य ओकरा दोहराकेँ लिखनाइ मात्र नहि छल । ओ एहि समस्याकेँ अपन कालमे चीन्हि ओकर अन्तर्विरोधकेँ उजागर कय रहल छलाह । एहि लेल "पलटू बाबू रोड" मे समस्याक अनेको समकालीन आसंग अछि – सामाजिक– वैयक्तिक आसंग । मुदा दुःख अछि जे एहि सँ सरिपहुँ कोनो जमीन टूटि सकितैक ! लगैछ एहि बंजर जमीनकेँ तोड़नाइ परतीकेँ तोड़नाइसँ बेसी कठिन छैक ।

"कितने चौराहे" हमर दृष्टिमे रेणुक लेखनमे एकटा विचित्र व्यतिक्रम प्रस्तुत करैत अछि । एकटा बहुतपहिलुक लिखल कथाकेँ बादमे प्रकाशित करबाक कोन विवशता भय सकैत छैक- एकरा आइ हम नहि कहि सकैत छी । स्वतंत्रता संग्रामक ई कथा वस्तुतः किछु नहि जोड़ैत अछि । चारिम दशकक व्यापक जन-आंदोलनसँ प्रारंभ भय सन् बयालीसक घटना-क्रम धरि नमरल ई लघु उपन्यास जेना हल्लुक सन, आत्मकथात्मक

आभास दैत अछि। एहिसँ बेसी रोचक कथा तँ नेपाली-क्रांतिक संदर्भमे रेणुक कार्य-कलापक भय सकैत छल। प्रायः हुनका मोन मे किछु एहन छलैक।

"कितने चौराहे" क्रांतिक आदर्शवादी भावावेश तँ अछि, मुदा क्रांति व्यापक भूमि नहि अछि। वस्तुतः राष्ट्रीय क्रांतिक लेल एहि पूर्ण लहरि मे अनेको ऊँच-नीच तरंग प्रकट होइत अछि। परिवेशेकेँ यदि एहि तरंगक रूपमे भरल –पूरल कथानक देल जइतैक तँ उपन्यास स्कूली पाठ्यक्रमसँ बेसी महत्त्वक बनि सकैत छल। ई लहरि असंख्य जनमे तीव्र प्रेरणा जगओने छल। त्याग आ बलिदानक लेल प्रेरक परिस्थिति एहिसँ बेसीनीक नहि भय सकैत छल।

मुदा, क्रांति आवेश आ क्रांतिकारी कार्य-कलापक पाछाँ जे एकटा सहयोगिता होइछ ओकर पृष्ठभूमि बड़ संकीर्ण होइछ। आश्चर्य अछि जे रेणु उपन्यासमे क्रांतिकारी कार्य-कलापसँ जोड़ल कोनो जटिल समस्याकेँ सेहो उभारबाक प्रयास नहि कयलनि। जेना हम उपरहिमे लिखने छी, ई उपन्यास आत्म-कथात्मक संकेतक उपरान्तो पूर्ण रूपेण ने तँ आत्म कथासँ बन्हले अछि आ ने मुक्ते।

निर्वैयक्तिक आ वैयक्तिकक एहि रासायनिक प्रक्रियामे उपन्यासक रंग किछु विचित्र तालमेल उत्पन्न करैछ। एतेक छोट सन आकारमे एहि प्रकारक कथा कोन नवीनता आनि सकैत छैक, ई स्पष्ट नहि अछि। स्वयं लेखक एहि प्रकारक प्रयोगक प्रति केहेन व्यवहार रखैत छथि, ई हमरा स्पष्ट नहि बूझल अछि।

एहि प्रकारेँ, अपन लघु उपन्यासमे आबि रेणु समस्यासँ लड़ैत छथि, मुदा ओकरा अपन भव्यकला–शक्तिक अंग नहि बना पवैत छथि। वस्तुतः शहरी परिवेश आ भाव-संसारक कथा सभमे सेहो रेणु ओहि कलात्मक स्पर्शकेँ नहि पाबि सकलाह। हुनक लघु उपन्यासक प्रयोग अपन विविधताक उपरान्तो हमरा प्रभावित नहि करैत अछि। एना लगैत अछि जेना रेणुक कला अन्हारमे एकटा चीत्कारजकाँ उभरि मात्र प्रतिध्वनि रूपमे हेरायल रहि जाइ अछि। ई एकटा पैघ कथा-लेखकक लेल दुर्घटने कहल जा सकैछ। ई दुर्घटना रेणुक जीवनमे सेहो घटल आ रचनात्मक क्षमतामे सेहो। एकटा उथल-पुथल भरल जिनगीक एहेन अवसादक अंत दुर्घटना नहि तँ की थीक !!!

Indian Institute of Advanced Study
117176
10/12/04
SHIMLA

# रेणु साहित्य

| | | |
|---|---|---|
| **कहानी-संग्रह** | | |
| ठुमरी | | राजकमल, १९५९ |
| आदिम रात्रि की महक | | राधाकृष्ण, १९६७ |
| अगिनखोर | | संभावना, हापुड़ |
| एक श्रावणी दोपहरी की धूप | | राजकमल, दिल्ली, १९८४ |
| अच्छे आदमी | | राजकमल, दिल्ली, १९८६ |
| मेरी प्रिय कहानियाँ | | राजपाल, दिल्ली, १९८३ |
| भित्ति चित्र की मयूरी | | |
| **उपन्यास** | | |
| मैला आंचल | | प्रथम प्रकाशन, पटना, १९५३,<br>द्वितीय संस्करण, राजकमल, १९५४ |
| परती : परिकथा | | प्रथम प्रकाशन, १९५७,<br>द्वितीय संस्करण, राजकमल, १९५९ |
| जुलूस | | भारतीय ज्ञानपीठ, १९६० |
| दीर्घतपा | | बिहार ग्रंथ कुटीर, पटना, १९५९ |
| पलटू बाबू रोड | | बिहार ग्रंथ कुटीर, पटना, |
| कितने चौराहे | | राधाकृष्ण, १९६६ |
| **रिपोर्ताज** | | |
| ऋणजल : धनजल | : | राजकमल, १९७८ |
| नेपाली क्रांतिकथा | : | राजकमल, १९७८ |
| बन तुलसी की गंध | : | राजकमल, १९८५ |
| **अन्यान्य** | | |
| श्रुत-अश्रुत पूर्व (निबंध) | | राजकमल, १९८४ |
| रेणु से भेंट (साक्षात्कार) | | (सं.) भारत यायावर, वाणी, १९८७ |
| **सहायक ग्रंथ** | | |
| रेणु स्मृति ग्रन्थ (भाग-१) | | पटना |
| सारिका | | रेणु विशेषांक |
| सोने की कलमवाला हीरामन | | |
| फणीश्वरनाथ रेणु | : | राबिन शॉ पुष्प |
| फणीश्वरनाथ रेणु | : | कुसुम सोफट |
| फणीश्वरनाथ रेणु का साहित्य | : | अंजलि तिवारी |
| रेणु का आंचलिक कथा साहित्य | : | पूर्णदिव |

●

फणीश्वरनाथ रेणु (जन्म 3 मार्च 1921, निधन 14 अप्रैल 1977) क जन्म बिहारक पूर्णिया जिलाक एकटा पिछड़ल गाम औराही हिंगनामे, एकटा किसान परिवार मे भेल । स्कूली पढ़ाइ फारबिसगंजमे पूरा भेल आ महाविद्यालयक पढ़ाइ वाराणसी आ पुन: भागलपुरमे । तखनहि 1942 केर आन्दोलनमे ओ सक्रिय रूपसँ सम्मिलित भय गेलाह । 1945-46 सँ हुनक लेखन-कार्य आरंभ भेल आ मात्र दसे वर्षमे हिन्दी साहित्य जगतमे हुनक रचना पूर्णरूप सँ प्रतिष्ठित बनि गेल । अपन पहिल महत्त्वपूर्ण उपन्यास 'मैला आँचल' मे ओ धरती-पुत्रक गाथाक मार्मिक अंकन कयने छथि । आँचलिक उपन्यास लेखनक सेहो एहिसँ सूत्रपात भेल । अपन दोसर उपन्यास 'परतीक परिकथा' मे ओ जनाकाँक्षा आ भूमि-समस्याक नव व्याख्या प्रस्तुत कयलनि । हुनक कथा सभ सेहो अपन आंतरिक लयात्मकता आ गेयताक कारण बेस चर्चित भेल ।

रेणुक रचनामे केन्द्र-स्थलसँ कथा समक अनेको धारा, एक दोसराकँ कटैत, एकटा समुच्चय उपस्थित करैछ । आम कथा-चक्र जकाँ ई पूर्ण नहि होइछ आ शिल्पक स्तरपर एहिमे सटीक रैखिक प्रवाह होइछ, जे भारतीय कथा-साहित्यमे विरल अछि । अपन विशिष्ट आ मोहक शैली लेल रेणु बड़ बेसी पढ़ल आ सराहल गेलाह । लेखकक युवा पीढ़ी आइयो हुनक अनुकरण कय रहल अछि । जीवनक अंतिम किछु वर्षमे [illegible] निरंतर [illegible] गेल आ अपन सरोकार सभ लेल समर्पित [illegible] असमय निधन भय गेल ।

Library IIAS, Shimla
MT 813.3 R 298 C
00117176

श्री सुरेन्द्र चौधरी प्रस्तुत विनिंबधमे रेणुक रचनाधर्मि[illegible]क विवरण आ मूल्यांकन प्रस्तुत कयलनि अछि ।

ISBN 81-7201-891-6

पन्द्रह टाका